RNI No.: MPHIN/2018/77137

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी का प्रकाशन

पाठशाला

भीतर और बाहर

Azim Premji University

ISSN 2582-483X

अंक 27 | मार्च 2026 | तिमाही

पाठशाला

भीतर और बाहर

मार्च 2026 | अंक 27

सम्पादकीय टीम

प्रतिभा कटियार (मुख्य सम्पादक)
pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org

शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (सह सम्पादक)
shefali.mehta@azimpremjifoundation.org

गौतम पाण्डेय
gautam@azimpremjifoundation.org

राघवेंद्र हेर्ले
Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

सुनील कुमार साह
sunil@azimpremjifoundation.org

गुरबचन सिंह
gurbachan.singh@azimpremjifoundation.org

जगमोहन सिंह कठैत
jagmohan@azimpremjifoundation.org

रजनी द्विवेदी
rajni.dwivedi@azimpremjifoundation.org

सिद्धार्थ कुमार जैन
siddharth.jain@azimpremjifoundation.org

भास्कर उप्रेती
bhaskar.upreti@azimpremjifoundation.org

दशरथ पारीक
dashrath.pareek@azimpremjifoundation.org

शोभा लोकनाथन कावूरी
shobha.kavoori@azimpremjifoundation.org

प्रबन्ध सम्पादक
सुधीश वेंकटेश

प्रकाशन टीम
मीरा प्रभु
शाहनाज़ बेगम
लोकराम वी जी
संबित महापात्र

प्रकाशन कार्यालय
अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी,
सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज
बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा
बेंगलूरु - 562125, कर्नाटक

अनुवाद सम्पादक
मधुकर एस पुट्टी (कन्नड़)
राजेश उत्साही (हिन्दी)
शेफ़ाली त्रिपाठी मेहता (अँग्रेज़ी)

प्रूफ़रीडिंग
अतुल अग्रवाल
भोपाल, मध्य प्रदेश

लेआउट
लेआउट (हिन्दी) - गणेश ग्राफ़िक्स
भोपाल, मध्य प्रदेश

डिज़ाइन
डिज़ाइन टीम, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी
फ़ोटो : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन आर्काइव्ज़, लेखक
आवरण चित्र : पुरुषोत्तम सिंह ठाकुर

प्रिंटिंग
लक्ष्मी मुद्रणालय
बेंगलूरु, कर्नाटक

सम्पर्क के लिए लिखें : pathshala@apu.edu.in (सम्पादकीय) अथवा publications@apu.edu.in (पब्लिकेशन)

पाठशाला भीतर और बाहर अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी द्वारा स्कूली शिक्षा को केन्द्र में रखकर प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक पत्रिका है। पत्रिका का उद्देश्य देश भर के पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों तक अभ्यास-आधारित सामग्री पहुँचाकर उनका सहयोग करना है। यह एक मंच है *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एनसीएफ़-एसई* और *एनसीएफ़-एफ़एस* के आलोक में शिक्षकों के अनुभवों, प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं की साझेदारी का। *पाठशाला* मूलतः हिन्दी में, फिर अँग्रेज़ी और कन्नड़ में अनुवादित होकर प्रकाशित होती है।

- बच्चों की पहचान सुरक्षित रखने के लिए पत्रिका में उनके नाम बदल दिए गए हैं।
- लेखों में व्यक्त विचार और दृष्टिकोण लेखकों के अपने हैं, उनसे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- इस पत्रिका के सभी लेख क्रिएटिव कॉमन्स-एट्रिब्यूशन-नॉन-कमर्शियल 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस के तहत लाइसेंस प्राप्त हैं। हमारे लेखों को फिर से प्रकाशित करने के लिए, कृपया हमें लिखें।

सम्पादकीय

विद्यार्थियों को सिखाने और विद्यालय को आनन्द की जगह बनाने के लिए सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर शिक्षक तरह-तरह की शिक्षण विधियाँ और अन्य तौर-तरीक़े अपनाते हैं। इन्हें देखकर अकसर यह सवाल मन में आता है कि आख़िर उनकी इस उम्मीद से भरी ऊर्जा का स्रोत क्या है। शिक्षकों से निरन्तर होते रहे संवाद और उनकी विद्यालयी प्रक्रियाओं से रू-ब-रू होते हुए इस सवाल का एक जो जवाब बनता नज़र आया, वह है—विद्यार्थियों का सीखना। विद्यार्थियों का न सीख पाना जहाँ शिक्षक को बेचैन करता है, वहीं उनका सीखना उन्हें सन्तुष्टि देता है। सीखने की यह तसल्ली शिक्षकों को लगातार ख़ुद को बेहतर करने और शिक्षण के नए व प्रभावी तरीक़े तलाशते रहने के लिए प्रोत्साहित करती है।

पाठशाला भीतर और बाहर पत्रिका देश भर से ऐसे ही शिक्षकों व शिक्षा में काम कर रहे साथियों के कक्षा अनुभवों को लेख के रूप में सहेजने और साझा करने का प्रयास करती है। हमें ख़ुशी है कि *पाठशाला भीतर और बाहर* के प्रतिबद्ध लेखकों और सुधी पाठकों का परिवार लगातार बढ़ रहा है। पत्रिका के लेखों पर आपसे मिलने वाली प्रतिक्रियाएँ हमारा हौसला बढ़ाती हैं। यह जानना सुखद है कि *पाठशाला भीतर और बाहर* में प्रकाशित आलेख आपकी कक्षा प्रक्रिया में आपका सहयोग कर पा रहे हैं।

पाठशाला भीतर और बाहर के इस अंक में भी हमने शिक्षण के लिए उपयोगी अनुभवजन्य सामग्री को सँजोया है। इस अंक में आप पढ़ेंगे कि विद्यार्थी उच्च कक्षाओं में तो पहुँच जाते हैं, लेकिन बहुत सारे विद्यार्थियों की दक्षता का स्तर पिछली कक्षाओं के अनुरूप नहीं बन पाता है। ऐसे में शिक्षकों के सम्मुख जो चुनौती होती है, उसका समाधान कैसे करें? एक लेख उस समस्या को पहचानने और सुलझाने की कोशिश कर रहा है जिसमें विद्यार्थी मौखिक रूप से पूछे गए सवाल हल कर लेते हैं, लेकिन इबारती सवाल के सामने आने पर उलझ जाते हैं। पाठ योजना बनाकर पढ़ाना किस तरह फ़ायदेमन्द होता है, इसके भी कुछ अनुभव साझा कर रही हैं एक शिक्षिका। पीयर लर्निंग किस तरह विद्यार्थियों के सीखने में प्रभावी भूमिका निभाती है, इसके कुछ उदाहरण मिलेंगे। हमेशा की तरह एक लेख पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर केन्द्रित है जिसमें हम जानेंगे कि कौन-से ऐसे प्रयास किए गए कि एक आँगनवाड़ी सीखने का बेहतर केन्द्र बन सकी। ऐसे ही अन्य लेखों के अतिरिक्त सभी स्थाई स्तम्भ भी इस अंक में शामिल हैं ही।

उम्मीद है पिछले अंकों की तरह आपको यह अंक भी महत्त्वपूर्ण और उपयोगी लगेगा। अपनी राय हमसे ज़रूर साझा कीजिएगा। अगर *पाठशाला भीतर और बाहर* में प्रकाशित किसी लेख ने आपके कक्षा शिक्षण में सहयोगात्मक भूमिका निभाई है तो ज़रूर साझा कीजिए।

पढ़ते रहिए, जुड़े रहिए!

शुभकामनाओं सहित
प्रतिभा कटियार
मुख्य सम्पादक

अनुक्रम

सम्पादकीय

1. विविध विषयों पर काम करते हुए भाषाई दक्षताओं का विकास 03
श्वेता विश्वकर्मा

2. कैसे बनते हैं चिन्तनशील शिक्षक ? 08
पी सतीशकुमार

3. पर्यावरण के प्रति देखभाल की भावना से शुरू हुए इको क्लब 11
कीर्ति लांबा

4. इबारती सवालों में क्यों उलझते हैं विद्यार्थी ? 15
मीनू पालीवाल

5. पाठ योजना बनाकर पढ़ाने के अनुभव 19
आरती पाण्डेय

6. एक कहानी के ज़रिए कई दक्षताओं तक पहुँचना 23
मंजू रेवरिया

7. सीखने की एक प्रभावी पद्धति है पीयर लर्निंग 27
शमीम भाटी

8. परिवेश से जुड़ी सामग्रियों से भाषा शिक्षण 31
पोम्पा घोषाल

9. स्कूल पुस्तकालय को प्रभावी बनाने की तरकीबें 35
कमलेश चन्द्र जोशी

10. शिक्षिका के जज़्बे ने आँगनवाड़ी को बनाया सीखने का केन्द्र 38
अनन्या डी

स्थाई स्तम्भ

1. शिक्षकों की डायरी से 42
मोख़्तार ज़मान, द्रोण साहू, पूनम

2. इनसे मिलिए – कविता सिंह 46
मनीष किशोर

3. किताबों से दोस्ती 49
पेड़ का पता : प्रभात, जय भीम : दिनेश मडगाँवकर

4. आइए, करके देखें 52
शिल्जा सेमुएल बंसरीयार, अनिल सिंह

5. सम्पादक के नाम 55

विविध विषयों पर काम करते हुए भाषाई दक्षताओं का विकास

श्वेता विश्वकर्मा

भाषा का शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक सीमित नहीं होता है, बल्कि विज्ञान, सामाजिक विज्ञान या गणित जैसे अन्य विषयों की कक्षाएँ भी एक तरह से भाषा की कक्षाएँ होती हैं। इस समझ को केन्द्र में रखते हुए इस लेख में उन विद्यार्थियों में, पढ़कर समझने और लिखकर अभिव्यक्त करने के कौशल विकास के लिए अनुभवपरक तरीक़े सुझाए गए हैं जिनमें माध्यमिक स्तर पर भाषा की अपेक्षित दक्षताएँ विकसित नहीं हो पाती हैं। इन सुविचारित तरीक़ों से विद्यार्थी भाषाई कौशलों के साथ ही विभिन्न विषयों की शब्दावलियों, अवधारणाओं और उनके अन्तर्विषयी सम्बन्धों को भी समझने के अवसर पाते हैं।

प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में भाषा की बुनियादी दक्षताओं का विकास करना है। अपेक्षा होती है कि माध्यमिक स्तर तक आते-आते विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने की दक्षताएँ पूरी तरह विकसित हो जाएँ। लेकिन अधिकांश विद्यार्थियों में माध्यमिक स्तर तक भी पढ़कर समझने और लिखने के कौशल विकसित नहीं हो पाते। इससे विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान, गणित, विज्ञान आदि की अवधारणाओं को समझने, अर्थ निर्माण करने, पाठ से जुड़ने और अभ्यासों को करने में बाधाएँ आती हैं। इन बाधाओं से विद्यार्थी अपने स्तर अनुसार सीखने और आगे बढ़ने में रुकावट महसूस करते हैं।

इस वजह से माध्यमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षकों के सामने कुछ इस तरह की चुनौतियाँ आती हैं :

- सबसे पहले प्रश्न तो यही होता है कि माध्यमिक स्तर पर जिन विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने में चुनौतियाँ हैं, उनके साथ विषयों की अपेक्षित दक्षताओं पर कैसे कार्य किया जाए?
- यदि इन विद्यार्थियों के साथ अलग से केवल पढ़ने-लिखने के शुरुआती कौशलों पर कार्य किया जाए तब वे विषय सम्बन्धी कक्षा स्तर की अवधारणाओं में पीछे हो जाते हैं।
- विषय सम्बन्धी अवधारणाओं या कक्षा स्तर की दक्षताओं पर कार्य किया जाए तो सम्भवत: अवधारणाओं को सुनकर बातचीत के द्वारा वे समझ लें, लेकिन स्वयं से पढ़ने-लिखने सम्बन्धित अभ्यासों को करने में सक्षम न हों।

> **कक्षा में विद्यार्थियों की स्थिति को समझने के लिए आकलन प्रभावी प्रक्रिया है। विद्यार्थियों में भाषा सम्बन्धी दक्षताओं के साथ-साथ इस बात का भी आकलन करना ज़रूरी होता है कि विद्यार्थी विषय सम्बन्धी अवधारणाओं व दक्षताओं में सीखने के स्तर पर कहाँ हैं?**

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के साथ पढ़ने-लिखने एवं विषय-आधारित दक्षताओं पर अलग से कार्य करने के साथ-साथ विषय शिक्षण के दौरान भी पिछली दक्षताओं को साथ लेकर चलना ज़रूरी हो जाता है। इसके लिए शिक्षण के प्रभावी तरीक़े नियमित विषय कक्षाओं के दौरान ही नहीं, बल्कि अतिरिक्त कक्षाएँ संचालित कर भी खोजने होंगे। बस, यहाँ यह समझना आवश्यक है कि जिन विद्यार्थियों को सीखने से सम्बन्धित चुनौतियाँ आ रही हैं उनके साथ नियोजित और व्यवस्थित ढंग से कार्य करने की आवश्यकता है। ऐसे में यदि कोई विद्यार्थी अपेक्षित मूलभूत कौशलों को हासिल नहीं कर पाया है तब भी एक शिक्षक होने के नाते उसकी कठिनाइयों को समझने और उसके अनुरूप अपेक्षित सहायता मुहैया कराए जाने की आवश्यकता है।

उपर्युक्त परिस्थितियाँ जटिल हैं। अब सवाल है, इन पर काम कैसे किया जाए? ऐसे कौन-से तरीक़े हो सकते हैं जो विद्यार्थियों को कक्षा से जोड़ने में मदद करें? इस सम्बन्ध में माध्यमिक शाला के कुछ शिक्षकों द्वारा किए जा रहे कक्षा कार्यों को समझने का प्रयास किया गया, और यह देखा गया कि वे किस प्रकार इन चुनौतियों से उबरने के लिए कार्य कर रहे हैं जिससे विद्यार्थियों का सीखना सुनिश्चित हो।

यहाँ हम शिक्षकों द्वारा अपनाए जा रहे अभ्यास व अन्य प्रक्रियाओं को कुछ विषयों के उदाहरण के साथ समझते हैं, जो कक्षाओं में अपनाई जा सकती हैं :

आकलन

कक्षा में विद्यार्थियों की स्थिति को समझने के लिए आकलन एक प्रभावी प्रक्रिया है। विद्यार्थियों में भाषा सम्बन्धी दक्षताओं के साथ-साथ इस बात का भी आकलन करना ज़रूरी होता है कि वे विषय सम्बन्धी अवधारणाओं व दक्षताओं में सीखने के स्तर पर कहाँ हैं। क्या वे अपने आस-पास के अनुभवों के आधार पर उदाहरण दे पाते हैं? यह समझ शिक्षक को विद्यार्थियों के साथ कार्य करने में मदद करेगी। उदाहरण के तौर पर, विज्ञान में

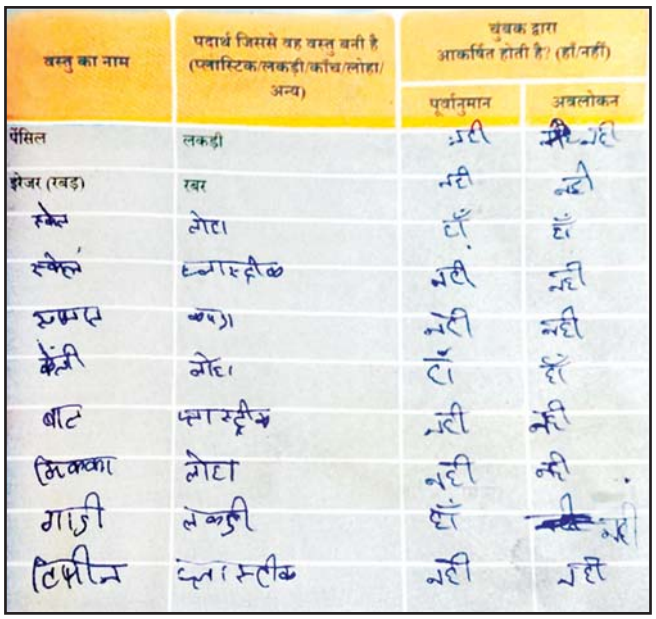

वस्तु का नाम	पदार्थ जिससे वह वस्तु बनी है (प्लास्टिक/लकड़ी/काँच/लोहा/अन्य)	चुंबक द्वारा आकर्षित होती है? (हाँ/नहीं)	
		पूर्वानुमान	अवलोकन
पेंसिल	लकड़ी	नहीं	नहीं
इरेजर (रबड़)	रबर	नहीं	नहीं
[illegible]	लोहा	हाँ	हाँ
स्केल	प्लास्टिक	नहीं	नहीं
[illegible]	कपड़ा	नहीं	नहीं
कैंची	लोहा	हाँ	हाँ
बाट	प्लास्टिक	नहीं	नहीं
सिक्का	लोहा	नहीं	नहीं
गाड़ी	लकड़ी	हाँ	नहीं
टिफिन	प्लास्टिक	नहीं	नहीं

चित्र 1: कौन–सी वस्तु किस पदार्थ या सामग्री से बनी है, और चुम्बक से आकर्षित होती है के बारे में विद्यार्थियों के साथ किया गया अभ्यास

'विद्युत परिपथ में ताप के प्रभाव को समझने पर कार्य करते हुए यह देखना कि कक्षा 8 में विद्यार्थी विद्युत परिपथ से सम्बन्धित किन प्रतिफलों को हासिल कर पा रहा है। यानी, क्या वह स्वयं से विद्युत परिपथ में ताप के प्रभाव का विश्लेषण कर पाता है? यदि नहीं, तब उसके साथ पहले विद्युत परिपथ के अलग-अलग घटकों को समझने के लिए काम करना होगा।

भाषाई दक्षताओं के आकलन के लिए अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता नहीं है। यह विषय शिक्षण के दौरान ही किया जा सकता है। शिक्षिका द्वारा सुझाए गए कुछ तरीक़ों को देखते हैं :

- किसी विषय के पाठ पर चर्चा के दौरान विद्यार्थियों से प्रश्न करना, उनकी प्रतिक्रिया जानना। यह देख पाना कि वे क्या केवल जानकारी-आधारित प्रश्नों के उत्तर दे पाते हैं, या किसी अवधारणा को स्पष्ट रूप से बता पाते हैं।
- विद्यार्थियों को व्यक्तिगत या समूह में पाठ पढ़ने के मौक़े देना, और इस दौरान उनकी पढ़ने की प्रगति का अवलोकन करना। उदाहरण के लिए, कौन विद्यार्थी प्रवाह से पढ़ पा रहा है; किसको पढ़ने में चुनौतियाँ हैं; वे पढ़े गए पाठ से मुख्य बिन्दुओं को बता पाते हैं या नहीं; आदि।
- विद्यार्थियों को किसी विषय या अवधारणा को चित्र, फ़्लो चार्ट आदि के रूप में प्रस्तुत करने एवं उसका विवरण लिखने के लिए कहना। उदाहरण के लिए, स्विच चालू होने की स्थिति में विद्युत परिपथ कैसे काम करता है, रक्त परिसंचरण तंत्र, आदि अवधारणाओं को चित्र द्वारा प्रस्तुत करना, और उस प्रक्रिया को बिन्दुओं में लिखना।

इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रोजेक्ट, प्रस्तुतीकरण, प्रश्नोत्तर, चर्चा, आदि के माध्यम से भी अवलोकन करते हुए विद्यार्थियों की समझ का आकलन किया जा सकता है।

प्राथमिक स्तर की अपेक्षा माध्यमिक स्तर तक आते-आते विद्यार्थी के अनुभव और कौशलों में एक स्तर का विकास हो चुका होता है। भले ही वह पढ़ने-लिखने में दक्ष न हो, पर अवधारणाओं को सीखने-समझने में उसकी गति पहले की अपेक्षा बढ़ जाती है। विषय सम्बन्धी आकलन, विषय की अवधारणाओं या थीम को आधार बनाते हुए किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षक द्वारा सम्बन्धित अवधारणा या थीम में कक्षा के अनुरूप अपेक्षाओं और सीखने के प्रतिफलों को देखना-समझना आदि कारगर होगा। फिर आकलन के अनुसार समूह बनाकर शिक्षण योजना तय करना सम्भव होता है।

सामान्य भाषा से विषय की भाषा की ओर

प्रत्येक विषय की अपनी भाषा, अपनी शब्दावली होती है। अतः आवश्यक है कि विद्यार्थियों के साथ काम के दौरान सामान्य भाषा को आधार बनाते हुए विषय की भाषा और शब्दावली की ओर भी बढ़ा जाए। यह उनके लिए विषय की अवधारणाओं को समझने में एक पुल का काम करेगा, और मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ पढ़कर समझने के कौशल के विकास में भी सहायक होगा।

विज्ञान की कक्षा में शिक्षिका विद्यार्थियों को पढ़ाते हुए हर पाठ से सम्बन्धित शब्दावलियों पर सबसे पहले कार्य करती हैं। इसमें वे शब्दावलियों को आसान या बोलचाल वाले शब्दों से जोड़ती हैं। पहले वे सामान्य भाषा एवं विषय की शब्दावलियों को बोर्ड पर लिखती व उन पर चर्चा करती हैं, फिर पाठ पर काम करती हैं। बाद में ये शब्दावलियाँ दीवार पर लगा दी जाती हैं। शब्दावलियों के कुछ उदाहरण हैं–ताप को गर्म की अवधारणा के साथ जोड़ना; ट्रेकिया - साँस लेने वाली नली या श्वास नली; लैरिंक्स - स्वरयंत्र, चुम्बकीय पदार्थ - जो चुम्बक से आकर्षित होता है; परिपथ - धारा के बहने का रास्ता; ऊर्जा - कार्य करने की क्षमता; परावर्तन - प्रकाश का टकराकर लौटना; अपवर्तन - प्रकाश का आर-पार गुज़रना; पारदर्शी - जिसके आर-पार देखा जा सके; आदि।

यह शब्दावलियों तक सीमित नहीं था। पाठ पर चर्चा करना, समझना, आदि के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए पढ़ने-लिखने के अन्य मौक़े भी बनाए गए। जिन विद्यार्थियों को पढ़ने-लिखने में चुनौतियाँ हैं, उनके प्रश्नों पर बात करते हुए उनके उत्तर बोर्ड पर लिखे गए। उन्हें अपनी कॉपी में लिखने के लिए कहा गया। विद्युत परिपथ का पाठ पढ़ाने के बाद विद्यार्थियों से अवधारणाओं से जुड़े कुछ छोटे प्रश्न पूछे गए। जैसे–परिपथ से स्विच हटाने पर क्या बल्ब जलेगा? हाँ या नहीं? और क्यों? परिपथ में से वायर हटाने पर क्या बल्ब जलेगा? यदि बल्ब को हटा दिया जाए तो क्या होगा? चर्चा के साथ इनके उत्तरों को भी लिखा गया। इन प्रक्रियाओं से पाठ समझना आसान हो जाता है, और वे विद्यार्थी भी कक्षा में भागीदारी कर पाते हैं जो अभी कक्षा स्तर पर नहीं हैं।

कक्षा का वातावरण

वातावरण से मेरा आशय कक्षा में उपलब्ध प्रिंट से है। विद्यार्थियों के आस-पास लगी सामग्री उन्हें विभिन्न शब्दों, अवधारणाओं से बार-बार गुज़रने के मौक़े देती है। ऐसे में, जो विद्यार्थी विस्तृत टेक्स्ट को पढ़ने में असहज हैं, उन्हें इस सामग्री से पढ़ने के अनुभव मिलते हैं। हाँ, यह आवश्यक है कि सामग्री उनके स्तर और सीखने की आवश्यकता के अनुसार हो। जैसे–विद्यार्थियों द्वारा सीखे गए शब्दों को दीवार पर लगाना, प्रत्येक अवधारणा पर कार्य करने के दौरान मुख्य शब्दावली के चार्ट लगाना, किसी अवधारणा को फ़्लो चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत करना, आदि। कक्षा में विद्यार्थी लिखे गए शब्दों को पढ़ रहे थे। फ़्लो चार्ट के माध्यम से वे किशोरावस्था और विद्युत की अवधारणा को स्पष्ट कर पा रहे थे, लेकिन यह प्रिंट दीवार तक सीमित नहीं था।

उदाहरण के तौर पर, शिक्षिका ने रक्त परिसंचरण तंत्र के चित्र को विद्यार्थियों के साथ मिलकर ज़मीन पर बनाया, और लेबल किया। कक्षा में ऐसे विद्यार्थी भी, जो ठीक से पढ़-लिख नहीं पा रहे थे, उस पूरी प्रक्रिया को सजहता से समझा पा रहे थे, साथ ही लेबल किए गए शब्दों को पहचान पा रहे थे। यहाँ शिक्षिका ने विषयवस्तु के साथ-साथ भाषा पर भी ज़ोर दिया, और उनके लिए पढ़ने के अवसर बनाए।

स्तरवार शिक्षण अधिगम सामग्री का इस्तेमाल

स्तरवार शिक्षण सामग्री और गतिविधियों का संयोजन विद्यार्थियों को क्रमिक रूप से आगे ले जाने में मदद करता है। किसी विषय की अवधारणाओं को आधार बनाकर ऐसी सामग्री का निर्माण / इस्तेमाल करना जो उनका सीखना आसान बनाए। जैसे, सामाजिक विज्ञान में नक़्शे की अवधारणा पर कार्य के लिए कक्षा में नक़्शे उपलब्ध होना ज़रूरी है जिस पर विद्यार्थियों के साथ नक़्शा पढ़ने सम्बन्धी बुनियादी कार्य किया जा सके। इसमें दिशाओं को समझना, कौन-सा राज्य कहाँ है, निर्धारित चिह्नों को समझना, आदि शामिल हैं। ग्लोब जैसी चीज़ों के माध्यम से पृथ्वी के घूमने की दिशा, चक्कर लगाने का समय, दिन-रात होना, आदि पर काम किया जा सकता है। यह सामग्री विद्यार्थियों को स्वयं से करने के जितने मौक़े देगी उतना ही अवधारणाओं के साथ-साथ पढ़ने के कौशल का भी विकास हो रहा होगा। पढ़ने-लिखने की इस प्रक्रिया में शब्द की पहचान करते हुए उचित शब्द से मिलान करना, चित्रों को लेबल करना, आदि मौक़े बनाते हुए पढ़ने-लिखने के पर्याप्त अवसर देना आवश्यक है। यहाँ विज्ञान विषय का एक उदाहरण देख सकते हैं।

प्रोजेक्ट-आधारित कार्य

प्रोजेक्ट-आधारित कार्यों के माध्यम से विद्यार्थियों को पाठ से गुज़रने, उसे समझने और समझाने की प्रक्रिया में शामिल किया जा सकता है। हमारी पाठ्यपुस्तकें ऐसे भरपूर मौक़े देती हैं जहाँ हम उन्हें कक्षा के इतर भी सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं से जोड़ सकें। यह अवश्य ध्यान देने योग्य है कि किसी भी विषय से जुड़े टास्क में विद्यार्थियों को मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ

चित्र 2 : ज़मीन पर बने चित्र की मदद से रक्त परिसंचरण तंत्र को समझते विद्यार्थी

लिखित, चित्रों, शब्दों, आदि के माध्यम से अभिव्यक्ति के मौक़े भी दिए जाएँ। यह भी देखा जा सकता है कि एक ही टास्क में किस तरह अलग-अलग विषयों से जुड़ी अवधारणाओं का समावेश किया जाए। इस तरह की योजनाबद्ध और व्यवस्थित पद्धति से विद्यार्थियों की भाषा और विषय से जुड़ी अवधारणाओं एवं दक्षताओं को मज़बूती प्रदान की जा सकती है।

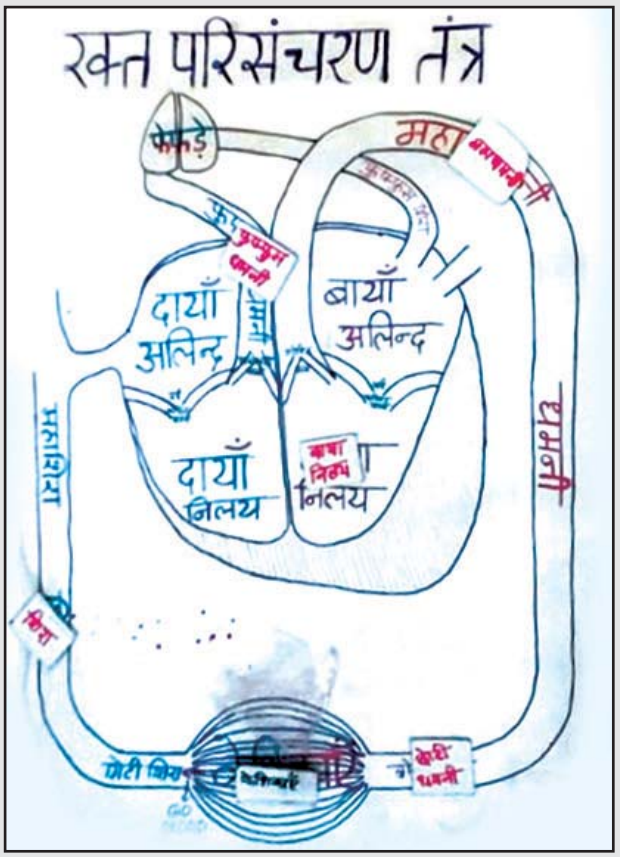

इस चार्ट में रक्त परिसंचरण तंत्र का चित्र बना है, जिसपर सम्बन्धित अंगों की शब्दावलियों को लिखा गया है। इसके साथ ही इन्हीं अंगों की शब्दावलियों की पर्चियाँ हैं, जो विद्यार्थी मिलान करते हुए चित्र पर जमाते हैं। अगली प्रक्रिया में विद्यार्थियों को बिना शब्दावली वाला चित्र दिया जा सकता है जिसमें वे अंगों के स्थान खोजकर शब्दावलियों को उपयुक्त स्थान पर जमाएँ।

चित्र 3 : टीएलएम के रूप में रक्त परिसंचरण तंत्र का चित्र

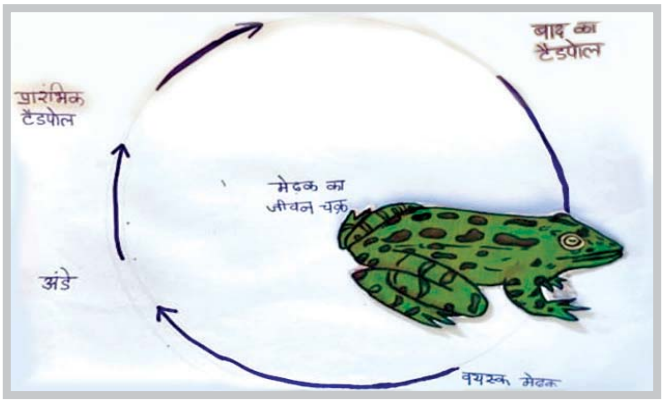

चित्र 4 : मेंढक के जीवन चक्र को समझने के लिए बनाया गया टीएलएम

प्रोजेक्ट-आधारित कार्यों के माध्यम से विद्यार्थियों को पाठ से गुज़रने, उसे समझने और समझाने की प्रक्रिया में शामिल किया जा सकता है। हमारी पाठ्यपुस्तकें ऐसे भरपूर मौक़े देती हैं जहाँ हम उन्हें कक्षा के इतर भी सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं से जोड़ सकें।

यहाँ कुछ टास्क के उदाहरण दिए जा रहे हैं :

थीम	विज्ञान	सामाजिक विज्ञान	भाषा से जुड़ाव
मिट्टी एवं फ़सल	• अपने आस-पास उपलब्ध विविध प्रकार की मिट्टी के बारे में जानकारी जुटाना। • मिट्टी में होने वाले बदलावों के बारे में जानकारी एकत्रित करना। • अलग-अलग मिट्टी की उर्वरता को समझना। • स्थानीय स्तर पर उगाई जाने वाली फ़सलों की जानकारी, उनसे बनने वाले खाद्य पदार्थों की सूची बनाना।	• विभिन्न प्रकार की मिट्टियों को समझना, किस मिट्टी में कौन-सी फ़सल लगाई जाती है, जानकारी एकत्रित करना। • किस क्षेत्र में कौन-सी मिट्टी पाई जाती है। मसलन, भूरी मिट्टी, पथरीली, लाल, काली मिट्टी, आदि। उसके पीछे के कारणों को खोजना। • फ़सलों के बारे में जानकारी इकट्ठी करना, फ़सल चक्र को समझना, सूची बनाना, आदि। • अपने शहर, क्षेत्र में कौन-कौन-सी फ़सलें होती हैं, जानकारी एकत्रित करना।	• दिए गए टास्क पर जानकारी एकत्रित करना, लिखित रूप में प्रस्तुत करना। • मिट्टी में होने वाले बदलावों को अपने शब्दों में लिखना। • मिट्टी से सम्बन्धित कोई कविता खोजना, पढ़ना एवं कक्षा में सुनाना।
भोजन	• भोजन से जुड़े विभिन्न घटकों के बारे में लिखना। • किस भोजन से कौन-से पोषक तत्त्व प्राप्त होते हैं, के बारे में जानकारी एकत्रित करना। • खाद्य मील (फ़ूड माइल) बनाना—खेत से थाली तक।	• लोग किस-किस तरह का भोजन करते हैं, के बारे में जानकारी इकट्ठी करना। • किस क्षेत्र में कौन-सा भोजन खाया जाता है, पता करना। जैसे—गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, आदि में।	• सम्बन्धित टास्क को लिखित रूप में प्रस्तुत करना। • दाल-बाटी, आदि जैसे किसी एक भोजन को बनाने की विधि लिखना।
जल	• अपने घर या आस-पास के लोगों से चर्चा करते हुए जल चक्र, अर्थात् पानी कहाँ से आता है, को समझना।	• अपने आस-पास उपलब्ध जल के स्रोतों के बारे में जानकारी एकत्रित करना। जैसे—तालाब कैसे बना; कितने साल पुराना है; बावड़ी कैसे बनी; किसने बनवाई; कितने साल पुरानी है; आदि।	• जल चक्र का चित्र बनाना, उसे लेबल करना। • जिन विद्यार्थियों को पढ़ना-लिखना आता है वे जल चक्र की प्रक्रिया को विस्तार से लिखेंगे। • जल के स्रोतों, उनके इस्तेमाल, इतिहास, आदि के बारे में जानकारी इकट्ठी करते हुए अपने शब्दों में लिखना। कक्षा में पढ़कर सुनाना। • पानी के ऊपर कोई गीत पता करके सुनाना एवं लिखना।

धातु	• अपने आस-पास उपलब्ध बॉल, हथौड़ी, चम्मच, बोतल, मटका, घड़ा, आदि जैसी सामग्रियों / बर्तनों की सूची बनाना • इन सामग्रियों में कौन-सी सामग्री किस पदार्थ से बनी है; कौन-सी धातु चुम्बक की ओर आकर्षित होती है कौन-सी नहीं; आदि पता करना।	• घर के बर्तनों की बनावट, धातु, उसके उपयोग, समयकाल, आदि के बारे में जानकारी एकत्रित करना। मिसाल के तौर पर, पहले किस धातु के बर्तन अधिक इस्तेमाल होते थे; वर्तमान में कौन-सी धातु के बर्तन अधिक इस्तेमाल होते हैं; आदि।	• टास्क से एकत्रित जानकारी को अपने शब्दों में लिखना। • किसी एक सामग्री की बनावट, उपयोग आदि के बारे में लिखना। • बर्तनों के इतिहास को कहानी के रूप में लिखना।

विषयवस्तु और पढ़ने-लिखने का जुड़ाव

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में विषयवस्तु और पढ़ने-लिखने की दक्षताओं के विकास में समन्वय बनाना सबसे महत्त्वपूर्ण है। कक्षा शिक्षण के दौरान पढ़ने-लिखने में चुनौती महसूस करने वाले विद्यार्थियों के कार्य करने के सन्दर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं को अपनी योजना में शामिल किया जा सकता है :

- शिक्षक यह देख सकते हैं कि किसी अवधारणा को समझने में ऐसे कौन-से काम हो सकते हैं जो विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से कर पाए। जैसे, किसी पाठ पर कार्य करने के दौरान शब्दों को बोर्ड पर लिखना, विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तक से शब्दों को खोजने और लिखने के लिए कहना, आदि।
- प्रयास करें कि कुछ अभ्यास मिश्रित समूह में हों। इनमें अलग-अलग स्तर के विद्यार्थी शामिल हों, और साथ मिलकर किसी कार्य को करें। मसलन, प्रश्नों पर कार्य करते हुए सम्भावित उत्तर पर चर्चा करना और लिखना, चित्र पर चर्चा करते हुए उसके बारे में लिखित रूप से अभिव्यक्त करना, पाठ को मिलकर पढ़ना, सूची बनाना, आदि।
- विद्यार्थियों के कार्य का स्तरवार विभाजन किया जा सकता है। माने, जिन विद्यार्थियों को लिखने में चुनौतियाँ हैं उन्हें चित्रों को लेबल करने, रेखाचित्रों, मौखिक, आदि माध्यम से अभिव्यक्ति के मौक़े देना और उन्हें लिखित रूप से लाने में मदद करना, आदि। जो विद्यार्थी पढ़-लिख पा रहे हों उन्हें इस तरह समूह में शामिल करना कि वे दूसरे विद्यार्थियों की मदद कर पाएँ।

> **“उदाहरणों में विषयवस्तु और पढ़ने-लिखने की दक्षताओं के विकास में समन्वय बनाना सबसे महत्त्वपूर्ण है।”**

- बतौर शिक्षक यह भी जानना आवश्यक है कि पाठ की विषयवस्तु को सरल तरीक़े से कैसे पढ़ाया जाए। मसलन, पाठ के मुख्य बिन्दुओं को बोर्ड पर लाना, रेखाचित्र, तालिका जैसे माध्यमों से भी विषयवस्तु को समझाने का प्रयास करना, आदि।

यह बहुत आवश्यक है कि पढ़ने-लिखने की चुनौती से जूझ रहे विद्यार्थियों पर विशेष प्रकार से ध्यान दिया जाए। इन्हें कक्षा की हर प्रक्रिया में शामिल किया जाए, और ऐसे मौक़े बनाए जाएँ कि वे धीरे-धीरे भाषाई दक्षताओं को हासिल कर पाएँ।

श्वेता विश्वकर्मा ने अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी बेंगलूरु से शिक्षा में स्नातकोत्तर किया है। वे 11 सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। वर्तमान में मध्यप्रदेश के खरगोन ज़िले में पदस्थ हैं। आपकी भाषा एवं भाषा शिक्षण से जुड़े मुद्दों में विशेष रुचि है।

सम्पर्क : shweta.vishwakarma@azimpremjifoundation.org

कैसे बनते हैं चिन्तनशील शिक्षक?

पी सतीशकुमार

वे क्या तरीक़े हैं जो शिक्षक को चिन्तनशील बनने में मदद करें, एक मुश्किल सवाल है। ये तरीक़े कुछ तयशुदा नुस्ख़ों से तय नहीं हो सकते हैं क्योंकि शिक्षकों के सन्दर्भ और परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं जिनमें वे काम करते हैं, और निरन्तर बदलाव के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। इसलिए ज़रूरी है कि शिक्षकों व शिक्षक-प्रशिक्षकों द्वारा आत्मचिन्तन के लिए आज़माई जा रही व्यावहारिक तरकीबों और उन्हें अमल में लाने के अनुभवों पर विमर्श हो। यह लेख कुछ ऐसे ही ठोस अनुभवों पर आधारित शिक्षणशास्त्र को प्रस्तुत करता है।

चित्र 1 : सूरज की रोशनी की गति से बदलती परछाइयों के अवलोकन का रेखांकन करते विद्यार्थी (एआई के सहयोग से बना चित्र)

प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के साथ काम करने के दौरान मैंने देखा है कि वे अपने विद्यार्थियों की कितनी चिन्ता करते हैं, लेकिन उन्हें पाठ योजनाओं, काग़ज़ी कार्यवाही और बड़ी कक्षाओं के प्रबन्धन के बीच अपनी शिक्षण विधियों पर विचार करने का समय ही नहीं मिलता। यदि शिक्षक कुछ समय के लिए आत्मचिन्तन करें—मसलन, नोटबुक में कुछ पंक्तियाँ लिखना, दोपहर के भोजन के दौरान किसी साथी शिक्षक के साथ बातचीत करना या कक्षा के बाद स्टाफ़ रूम में चुपचाप बैठकर सोचना—तो ये क्षण उनके आत्मविश्वास और कक्षा शिक्षण में वास्तविक बदलाव ला सकते हैं।

कुछ साल पहले, शिक्षकों की एक कार्यशाला में मेरी मुलाक़ात शिक्षिका रहाना से हुई। वे कक्षा 3 को पढ़ाती थीं, और पीछे बैठकर चुपचाप सुन रही थीं। एक सत्र के दौरान, मैंने शिक्षकों से कक्षा के किसी ऐसे पल को याद करने के लिए कहा जो उन्हें भली-भाँति याद हो; कुछ ऐसा जो उम्मीद से ज़्यादा अच्छा हुआ हो, या जैसा सोचा था वैसा न हुआ हो। पहले तो शिक्षिका रहाना थोड़ा झिझकीं, फिर उन्होंने विज्ञान की कक्षा में करवाई गई एक गतिविधि के बारे में बताया जिसमें उनके विद्यार्थियों को यह समझने में मुश्किल हो रही थी कि सूरज की रोशनी की गति के साथ परछाई कैसे बदलती है।

उन्होंने कहा, "शुरू में मुझे लगा कि विद्यार्थी ध्यान से नहीं सुन रहे हैं, लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि मैंने उस गतिविधि को बहुत जल्दी करके दिखा दिया था।" जब उन्होंने इस बारे में और सोचा तो उन्हें समझ में आया कि उन्होंने वह गतिविधि बस एक बार करके दिखाई, और तुरन्त आगे बढ़ गईं। विद्यार्थियों को यह देखने का समय ही नहीं मिला कि दिन के अलग-अलग

समय में परछाई कैसे बदलती है। विद्यार्थियों से यह उम्मीद की जा रही थी कि वे उस अवधारणा को तुरन्त समझ जाएँ। लेकिन यह अवधारणा ऐसी थी जिसके लिए उन्हें उस गतिविधि को धीरे-धीरे और बार-बार देखने की ज़रूरत थी। इस एहसास से उन्हें समझ में आया कि समस्या यह नहीं थी कि विद्यार्थी ध्यान नहीं दे रहे थे, बल्कि यह थी कि उस गतिविधि को ठीक से दिखाया नहीं गया था।

जब मैंने उनसे पूछा, "यदि अगली बार वही पाठ दोबारा पढ़ाया जाए तो वे उसमें क्या बदलेंगी?" वे मुस्कुराईं और बोलीं, "मैं उन्हें हर घण्टे धूप में अपनी परछाई को देखने और बनाने दूँगी ताकि वे उस अवधारणा को अच्छी तरह से समझ जाएँ।"

मैं उस पल को कभी भूल नहीं पाया क्योंकि यह घटना सिर्फ़ विज्ञान का पाठ पढ़ाने की कहानी नहीं थी; यह एक ऐसी शिक्षिका के बारे में थी जो बिना किसी पूर्वाग्रह के, सिर्फ़ अपनी जिज्ञासा के कारण, यह सोच रही थीं कि अपनी शिक्षण विधि को कैसे बेहतर बनाया जाए। एक हफ़्ते बाद, शिक्षिका रहाना ने मुझे कुछ तस्वीरें भेजीं जिनमें उनके विद्यार्थियों ने ज़मीन पर अपनी परछाई के रेखाचित्र बनाए थे। मुझे इस बात का अन्दाज़ा लगाने में ज़रा भी मुश्किल नहीं हुई कि विद्यार्थियों को ये चित्र बनाते हुए कितना मज़ा आया होगा!

असल में, चिन्तन का क्या मतलब है?

मुमकिन है कि 'चिन्तनशील अभ्यास' शब्द सुनने में कठिन और अनावश्यक लगें। असल में, चिन्तन का मतलब है अपने शिक्षण पर ध्यान देना—क्या कारगर रहा, क्या नहीं, और इसका कारण क्या था? इसके लिए शिक्षक ख़ुद से ये कुछ आसान सवाल पूछ सकते हैं :

- आज मैंने अपनी कक्षा में क्या देखा?
- किस बात ने मुझे चकित किया या सोचने पर मजबूर किया?
- अगली बार मैं क्या अलग तरीक़े से करूँगा या करूँगी?

ख़ुद को इन सवालों के जवाब देने में कम-से-कम पाँच मिनट लगते हैं। जब शिक्षक अपने जवाबों को नियमित रूप से अपनी डायरियों में लिखते हैं तो उन्हें पैटर्न नज़र आने लगते हैं—कौन-सी गतिविधि विद्यार्थियों को व्यस्त रखती है, कब उनका ध्यान भटकता है, और छोटे-मोटे बदलाव कैसे बड़ा फ़र्क़ ला सकते हैं?

चिन्तन का एक और असरदार तरीक़ा यह है कि शिक्षक अपनी कक्षा के अनुभवों को एक दूसरे के साथ बाँटें। एक क्लस्टर स्तरीय मीटिंग में, मैंने एक बार शिक्षकों से कहा कि वे अपनी कक्षा से जुड़ा कोई छोटा क़िस्सा या उदाहरण सबके साथ साझा करें। रमेश नाम के एक शिक्षक ने बताया कि उन्होंने वन्यजीवन पर एक पाठ पढ़ाने के बाद कैसे विद्यार्थियों को अपने पसन्दीदा जानवरों को पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि इस विचार से कक्षा में मानो जान आ गई, यहाँ तक कि चुप रहने वाले विद्यार्थी भी इसमें शामिल हुए।

जब रमेश ने यह बात साझा की तो एक अन्य शिक्षिका सुमा ने कहा कि उन्होंने भी अपनी कक्षा में अपने विद्यार्थियों से विद्यालय के मैदान में मौजूद पेड़ों को पत्र लिखने के लिए कहा था। जल्दी ही ये बातचीत विचारों के एक मज़ेदार लेन-देन में बदल गई। कमरे में तो जैसे एक नई ऊर्जा भर गई। शिक्षक अब सिर्फ़ अपने प्रशिक्षक की बात ही नहीं सुन रहे थे, बल्कि एक दूसरे से सीख भी रहे थे।

उस दिन मुझे महसूस हुआ कि आत्मचिन्तन हमेशा एक अकेली गतिविधि या अभ्यास नहीं होना चाहिए। जब शिक्षक खुले तौर पर अपने अनुभवों—सफलताओं और असफलताओं—दोनों के बारे में बात करते हैं तो वे ज्ञान का एक साझा भण्डार बनाते हैं जिसकी जगह कोई भी पाठ्यपुस्तक या प्रशिक्षण मार्गदर्शिका नहीं ले सकती।

शिक्षक–प्रशिक्षक कैसे मदद कर सकते हैं?

चिन्तन करना आसान नहीं है। शिक्षकों को लगता है कि उनके पास समय नहीं है, या विद्यालय खुली चर्चा को प्रोत्साहित नहीं करते हैं। कुछ को लगता है कि अपनी ग़लतियाँ मानने को कहीं उनकी कमज़ोरी न समझ लिया जाए। इसीलिए चिन्तन बहुत मायने रखता है, और इसे समर्थन की आवश्यकता है। चिन्तन शिक्षकों को अपने शिक्षण की ज़िम्मेदारी लेने के लिए मज़बूत बनाता है। इससे कक्षा के रोज़मर्रा के कार्य, सीखने के अवसरों में बदल जाते हैं, और साथ ही शिक्षकों को अपना विकास करने में भी मदद मिलती है। जैसे—एक शिक्षक को कोई पाठ पढ़ाने के बाद लग सकता है कि केवल कुछ विद्यार्थियों ने ही जवाब दिए, जबकि बाक़ी चुप रहे। इस बारे में सोचने के बाद वे तय कर सकते हैं कि अगले दिन वे जोड़ियों में बातचीत कराएँगे, या समूह कार्य कराएँगे ताकि ज़्यादा विद्यार्थियों को बोलने का अवसर मिले। सोच-समझकर किए गए ऐसे छोटे बदलाव विद्यार्थियों की भागीदारी और उनकी समझ को बेहतर बनाते हैं।

जब शिक्षक कक्षा में पढ़ाने के बाद पाँच मिनट का समय निकालकर ये सोचते हैं कि आज मेरे विद्यार्थियों ने वास्तव में क्या सीखा, तो इससे सीखने-सिखाने की पूरी प्रक्रिया और भी अच्छी हो जाती है।

शिक्षक-प्रशिक्षक की भूमिका पारम्परिक अर्थ में शिक्षकों को 'प्रशिक्षित' करना नहीं है, बल्कि सही अर्थ में ऐसा माहौल बनाना है जहाँ वे सुरक्षित रूप से अपने शिक्षण के तरीक़ों के बारे में सोच सकें और बात कर सकें। जब मैं विद्यालयों का दौरा करने जाता हूँ तो सबसे पहले यह पूछता हूँ कि आपकी कक्षा में इस सप्ताह जो कुछ अच्छा हुआ, उसके बारे में मुझे बताइए।

यूँ तो यह सवाल आसान और छोटा-सा है, लेकिन इससे एक सार्थक बातचीत की शुरुआत होती है। शिक्षक अपने 'वाह-वाह' पलों के बारे में बात करते हैं, जैसे कि एक शर्मीला विद्यार्थी आत्मविश्वास से जवाब दे रहा था, एक समूह गतिविधि अच्छी तरह से हुई, या पुराने चार्ट से कोई रचनात्मक चीज़ बनाई गई। इसके बाद हम धीरे-धीरे इस बात पर आते हैं कि क्या ठीक नहीं रहा, और अगली बार उसे बेहतर करने के लिए क्या किया जा

सकता है। मसलन, कोई शिक्षक बता सकता है कि वर्कशीट वाली गतिविधि में विद्यार्थियों को मज़ा नहीं आया जिससे उनका ध्यान भटक गया। चर्चा के माध्यम से, शिक्षक यह निर्णय ले सकते हैं कि अगली बार वे इसकी जगह कोई व्यावहारिक कार्य करवाएँगे, या उस विषय पर चर्चा करेंगे। कोई दूसरा शिक्षक महसूस कर सकता है कि कक्षा को दिए गए उनके निर्देश स्पष्ट नहीं थे, इसलिए वे तय कर सकते हैं कि भविष्य में विद्यार्थियों को जो भी काम दिया जाएगा, उसके बारे में वे स्पष्ट रूप से निर्देश देंगे।

> **जब शिक्षक चिन्तन करते हैं तो वे ज़्यादा जागरूक, ज़्यादा प्रतिक्रिया देने वाले और ज़्यादा आत्मविश्वासी बनते हैं। उनकी कक्षा में कुछ नया जानने की इच्छा का माहौल बन जाता है। चिन्तन–मनन के लिए किसी ख़ास समय या उपकरण की ज़रूरत नहीं होती; इसके लिए बस ध्यान और ईमानदारी चाहिए।**

आत्मचिन्तन की क्षमता को बढ़ाना ज़रूरी है। हमें शिक्षकों को उनके अपने अनुभव से सीखने में मदद करनी होगी। इसे सिखाया नहीं जा सकता।

एक आदत के रूप में आत्मचिन्तन

पिछले कुछ सालों में मैंने ऐसे शिक्षकों को देखा है जो पहले चिन्तन करने से कतराते थे, पर अब वे इसे अपनाने लगे हैं। कुछ शिक्षक अपनी डायरी में रोज़ दो या तीन लाइनें लिखते हैं तो कुछ छोटे-छोटे समूह बनाते हैं, और एक समय तय करके अपनी कक्षा के अनुभवों को एक दूसरे को बताते हैं। कुछ शिक्षक अपने विद्यार्थियों से यह पूछकर उन्हें भी सोचने के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि आज तुम्हें अपनी पढ़ाई में सबसे अच्छा क्या लगा।

धीरे-धीरे चिन्तन-मनन विद्यालय संस्कृति का हिस्सा बन जाता है, जहाँ शिक्षक अपने अनुभवों को साझा करने के लिए उत्सुक होने लगते हैं। ऐसा तब होता है जब स्टाफ़ मीटिंग, क्लस्टर मीटिंग या अनौपचारिक बातचीत के दौरान चिन्तन-मनन को महत्त्व दिया जाता है, और शिक्षक बिना किसी डर के अपनी बात कहने में सुरक्षित महसूस करते हैं। धीरे-धीरे शिक्षकों को लगने लगता है कि चिन्तन-मनन करना कोई अतिरिक्त कार्य नहीं है, बल्कि यह तो उनके काम का एक स्वाभाविक अंग है। इससे कक्षाएँ अधिक प्रयोगात्मक और अधिक जीवन्त हो जाती हैं।

अन्त में

अपनी पिछली एक कार्यशाला में मैंने कक्षा 4 की शिक्षिका मिस मगथी से पूछा कि उनकी कक्षा कैसी चल रही है? उन्होंने कहा, "मैं अपने पाठ के बारे में लिखती रहती हूँ। जब मैं अपने पुराने नोट पढ़ती हूँ तो मुझे पता चलता है कि मैं कितनी बदल गई हूँ।" उन्होंने बताया कि पहले वे पाठ्यपुस्तकों और शिक्षकों की बातों पर बहुत अधिक निर्भर रहती थीं, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने देखा कि उनके नोट्स में काफ़ी बदलाव आए हैं; अब वे विद्यार्थियों के साथ बातचीत, सामूहिक गतिविधियों और सवाल-जवाब की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देती हैं। इससे उन्हें अपने पेशेवर विकास को पहचानने में मदद मिली। उनके शब्दों ने चिन्तन-मनन की भावना को पूरी तरह से व्यक्त किया है—ज़रूरी यह नहीं है कि हम बिल्कुल सही हो गए हैं या नहीं, बल्कि यह है कि हम अपने विकास को लेकर जागरूक हैं या नहीं।

जब शिक्षक चिन्तन करते हैं तो वे ज़्यादा जागरूक, ज़्यादा प्रतिक्रिया देने वाले और ज़्यादा आत्मविश्वासी बनते हैं। उनकी कक्षा में कुछ नया जानने की इच्छा का माहौल बन जाता है। चिन्तन-मनन के लिए किसी ख़ास समय या उपकरण की ज़रूरत नहीं होती; इसके लिए बस ध्यान और ईमानदारी चाहिए।

शिक्षक के पास अनगिनत कहानियाँ होती हैं—कुछ ऐसे पाठ जो बहुत अच्छी तरह से पढ़ाए गए, और कुछ ऐसे भी जो और बेहतर हो सकते थे। इन्हीं कहानियों में उनके काम को और बेहतर बनाने के अवसर छिपे होते हैं। चिन्तन ख़ुद से की जाने वाली एक शान्त बातचीत है; थोड़ा रुकने और सीखने का काम है। मसलन, विद्यालय के बाद एक नोट लिखना, किसी साथी शिक्षक के साथ बातचीत करना, या शान्त मन से अपने-आप से कोई सवाल पूछना; हर चिन्तन शिक्षक को भीतर से मज़बूत बनाता है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

पी सतीशकुमार तमिलनाडु के इरोड में एक शिक्षक और शिक्षक-प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं। वे शिक्षकों के पेशेवर विकास कार्यक्रम में सक्रिय रूप से हिस्सा लेते हैं।

सम्पर्क : engsathish.kumar@gmail.com

पर्यावरण के प्रति देखभाल की भावना से शुरू हुए इको क्लब

कीर्ति लांबा

विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने उद्देश्य से भारत सरकार के मिशन लाइफ़ के लिए इको क्लब एक महत्त्वपूर्ण पहल है। इस क्लब का उद्देश्य स्थाई जीवन के लिए आवश्यक मूल्यों और व्यवहारों का विकास करना है। इसमें विद्यार्थियों को पर्यावरण-हितैषी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिससे प्रकृति के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना विकसित होती है। इस लेख में दिल्ली के एक सरकारी विद्यालय की शिक्षिका द्वारा की गई ऐसी ही पहल के अनुभव साझा किए गए हैं।

कक्षा में जो सिखाया जाना है उसका जुड़ाव जब विद्यार्थियों को अपने आस-पास के जीवन से जुड़ता दिखता है, तब उनका सीखना सुनिश्चित होता है। मैंने अपनी कक्षाओं में इस जुड़ाव को बनाने करने का प्रयास किया जिसके नतीजे लगभग चौंकाने वाले मिले। कक्षा 7 में सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक में 'पर्यावरण' नाम का और कक्षा 8 में 'संसाधन' नाम का पाठ है। ये दोनों पाठ इको क्लब का निर्माण करके सतत विकास के लिए शिक्षा (Education for Sustainable Development—ESD) प्रदान करने के लिए अच्छा अकादमिक आधार प्रदान करते हैं।

इन दोनों पाठों के सन्दर्भ को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने विद्यार्थियों में LiFE (Lifestyle for Environment—पर्यावरण के लिए जीवन शैली) की शुरुआत की। इसके अन्तर्गत मैंने विद्यालय में इको क्लब, जो अब Eco Clubs for Mission LiFE कहलाते हैं, का गठन किया। इस क्लब का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता और चेतना को बढ़ाना है।

> **विद्यार्थियों के मिट्टी से सने हाथ पर्यावरण को बचाने के लिए कुछ करने के उनके पक्के इरादे का सबूत हैं।**

चित्र 1: विद्यालय परिसर में पौधे लगाने के लिए क्यारी बनाते विद्यार्थी

क्लब की स्थापना और इसके उद्देश्य

इको क्लब की शुरुआत कक्षा 7 के विद्यार्थियों के लिए 'वॉक एंड टॉक' सत्र के आयोजन के साथ हुई जिसका उद्देश्य उन्हें जैविक (biotic) और अजैविक (abiotic) पर्यावरण की अवधारणाओं को समझाना था। 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के साथ जुड़कर विद्यार्थियों ने अपनी माताओं को समर्पित करते हुए एक-एक पौधा लगाया, और उनकी देखभाल करने का संकल्प लिया। कुछ विद्यार्थियों ने अपने पौधों के नाम और अन्य वैज्ञानिक जानकारी वाले प्लेकार्ड अपने हाथ से तैयार कर उन्हें पौधों के पास लगाया। अगली सुबह, बिना किसी शिक्षक के कहे, विद्यार्थी अपने लगाए हुए पौधों का निरीक्षण करने के लिए जल्दी विद्यालय आ गए। कुछ विद्यार्थी पौधों को पानी देने के लिए अपनी इच्छा से आगे आए। विद्यार्थियों में अपने पौधों को बढ़ते देखने का इन्तज़ार बहुत ख़ूबसूरत था। यह प्रकृति के प्रति जिज्ञासु होने, और उसके साथ गहरा रिश्ता बनने की शुरुआत थी। इस अनुभव के माध्यम से विद्यार्थी तथ्यों को निष्क्रिय रूप से जानने वाले नहीं, बल्कि पर्यावरण के लिए परिवर्तन लाने वाले सक्रिय अभ्यासी भी बन गए। इस तरह, यह क्लब सच्ची, सामूहिक जिज्ञासा, और पर्यावरण के प्रति देखभाल की भावना से शुरू हुआ।

> **इको क्लब की रौनक भी बढ़ रही है, और विद्यार्थियों की समझ भी। अच्छा यह भी था कि इको क्लब की ज़िम्मेदारी वे ख़ुद ही ले रहे थे। मेरी भूमिका मार्गदर्शन और हौसला बढ़ाने भर की थी।**

इसी तरह, कक्षा 8 में, 'संसाधन' नामक अध्याय में सतत विकास विषय ने क्लब के उद्देश्य पर एक बहस छेड़ दी। विद्यार्थियों ने इस विषय पर गहराई से सोचते हुए सवाल करने शुरू किए। उनके सवाल मेरा हौसला बढ़ा रहे थे। जैसे–

कक्षा 7 की आयशा ने पूछा, "मैम, पानी एक नवीकरणीय संसाधन होने के बावजूद इसकी कमी क्यों है? यह विरोधाभास क्यों? ख़बरों में रोज़ पानी की दुर्लभता के बारे में सुनने को मिलता है, ऐसा क्यों?" आयशा द्वारा उठाया गया यह तर्कसंगत प्रश्न कक्षा में एक गम्भीर चिन्तन का मुद्दा बन गया। यह जिज्ञासा कक्षा 7 के पाठ 'पर्यावरण' की चर्चा के दौरान उभरकर आई। आयशा के इस प्रश्न ने विद्यार्थियों को 'किताबी सिद्धान्त' से 'धरातल की सच्चाई' की ओर मोड़ा। कक्षा में हुई चर्चा की दिशा सीमित मीठे पानी की उपलब्धता, इसके असमान भौगोलिक वितरण और मानव द्वारा बर्बादी से होती हुई सीधे हमारे 'इको क्लब फ़ॉर मिशन LiFE' के एक उद्देश्य–'जल संरक्षण' तक पहुँची। विद्यार्थियों ने न केवल पानी बचाने की शपथ ली, बल्कि इसे अपनी जीवन शैली का हिस्सा बनाने का सामूहिक संकल्प भी लिया।

कक्षा 8 की निशा ने पूछा, "मैम, हम लोग प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कैसे कर सकते हैं?"

चित्र 2 : पौधे के पास अपने हाथ से तैयार कर वैज्ञानिक जानकारी वाले प्लेकार्ड लगाते विद्यार्थी

"तो क्या प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने के लिए हमें उनका उपयोग नहीं करना चाहिए?" इस पर आयशा ने उसे फ़ौरन दुरुस्त करते हुए कहा, "अरे, इसका मतलब उपयोग न करना नहीं, बल्कि दुरुपयोग न करना है।"

निशा को बात कुछ समझ नहीं आई तो आयशा उसे बताने लगी कि नदियों में कचरा फेंकना दुरुपयोग है, नदियों से सिंचाई करना उपयोग है। पानी को पीना उपयोग है, लेकिन उसे बिना ज़रूरत के बहने देना दुरुपयोग है।

"अच्छा-अच्छा, यह तो मैं समझती हूँ, मुझे लगा कोई और बात होगी।" निशा ने आश्वस्त होते हुए कहा।

मैं विद्यार्थियों को इस तरह सवाल करते और एक दूसरे के सवालों के जवाब देते हुए देखकर आश्वस्त थी कि इको क्लब अपने उद्देश्य में ठीक दिशा की ओर बढ़ रहा है।

विद्यार्थियों के सवालों के जवाब न देकर मैंने कुछ ऐसी गतिविधियाँ क्लब में रखीं जिनमें वे अपने सवालों के जवाब तक ख़ुद पहुँच सकें। मसलन, मैंने उनके सवालों को वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय बना दिया। अब विद्यार्थी इस बारे में ख़ुद तथ्य जमा कर रहे थे कि पानी की कमी क्यों हो रही है। वाद-विवाद के अलावा पोस्टर बनाना, निबन्ध लिखना, कठपुतली शो के लिए स्क्रिप्ट लिखना, आदि गतिविधियाँ भी शामिल कीं।

'कौशल बोध' विषय के तहत जैव विविधता प्रोजेक्ट पर चर्चा के दौरान जाह्नवी ने एक अत्यन्त मार्मिक और तर्कसंगत प्रश्न उठाया : "आजकल हमें गौरैया चिड़ियाँ क्यों नहीं दिखाई देतीं?"

इस एक प्रश्न ने कक्षा में एक 'भावनात्मक तत्परता' पैदा कर दी। हमने गहराई से पड़ताल की कि कैसे कंक्रीट के आधुनिक भवन (जिनमें घोंसलों के लिए कोई जगह नहीं बची) और मोबाइल टावरों का विकिरण हमारे शहरी पारिस्थितिकी तंत्र को संकट में डाल रहे हैं। इस सामूहिक विमर्श की सार्थकता तब

सिद्ध हुई जब हमारी चर्चाओं के निष्कर्ष को 'मिशन LiFE' के औपचारिक उद्देश्य से जोड़ा गया।

पर्यावरण की इस समझ को 'लोकतंत्र' के सिद्धान्तों से जोड़ते हुए, कक्षा 6 के सामाजिक विज्ञान के अध्याय 'आधारभूत लोकतंत्र : ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय सरकार' के दौरान विद्यार्थियों ने एक जीवन्त 'बाल पंचायत' का मंचन किया। जाह्नवी ने सिर पर पगड़ी बाँधकर 'सरपंच' की भूमिका निभाई, जहाँ 'आम जनता' बने विद्यार्थियों ने स्वच्छता और पानी की कमी जैसे गम्भीर विषयों पर सवाल पूछे। सरपंच के रूप में जाह्नवी ने एक परिपक्व समाधान प्रस्तुत किया—'कचरा पृथक्करण' केवल अधिकारियों का काम नहीं, बल्कि हर नागरिक की जवाबदेही है। प्रशासन के साथ-साथ नागरिकों की भागीदारी भी उतनी ही अनिवार्य है। विद्यार्थियों ने महसूस किया कि पर्यावरणीय समस्याएँ समाज से अलग नहीं हैं।

इको क्लब की रौनक भी बढ़ रही है, और विद्यार्थियों की समझ भी। अच्छा यह भी था कि इको क्लब की ज़िम्मेदारी वे ख़ुद ही ले रहे थे। मेरी भूमिका मार्गदर्शन और हौसला बढ़ाने भर की थी। मैंने महसूस किया कि धीरे-धीरे विद्यार्थियों के सवाल गहरे होने लगे थे। आपस में ही अपने सवालों को रखना, उन पर बात करना, अपनी बात को ठीक से रखने हेतु अपनी समझ को विकसित करने के लिए पाठ्यपुस्तकों से लेकर लाइब्रेरी की किताबें खँगालना भी शामिल होने लगा। कभी-कभी मैं उन्हें कुछ नए सवालों की तरफ़ भी प्रेरित करती। इससे उन्हें नए आइडिया मिलते, और उनकी खोज भी शुरू हो जाती। जैसे, मैंने पूछा कि आख़िर नल बन्द करने से हम कितना ही पानी बचा सकते हैं; या एक बिजली का स्विच बन्द करके कितनी ही ऊर्जा बच जाएगी; आदि। मुझे आश्चर्य हुआ कि अगले दिन विद्यार्थी डेटा के साथ बात कर रहे थे कि एक घण्टे अगर नल खुला रह गया, या बिजली का स्विच खुला रह गया तो कितनी ऊर्जा या पानी बर्बाद होगा। फिर हिसाब लगाया कि अगर विद्यालय के हर विद्यार्थी ने एक बाल्टी पानी बर्बाद किया तो कितना पानी बर्बाद हुआ होगा। इसी तरह, अगर शहर के हर व्यक्ति ने पानी बर्बाद किया, या फिर राज्य के लोगों ने तो...

मैंने उन्हें विद्यालय स्तर पर जल संसाधनों के प्रबन्धन के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि उनके सोचने में और स्पष्टता आए।

विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ रहा था। उन्होंने इको क्लब के लिए कुछ थीम तय कीं :

1. स्वस्थ जीवन शैली अपनाना;
2. ऐसा खान-पान अपनाना जो प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हो;
3. खाना हो या बिजली, पानी या अन्य प्राकृतिक संसाधन, उनकी बर्बादी को रोकना;
4. प्लास्टिक के उपयोग को रोकना; आदि।

विद्यार्थियों ने पहले यह देखा कि विद्यालय में कहाँ-कहाँ संसाधनों की बर्बादी हो रही है, और कहाँ-कहाँ उन्हें काम करने की ज़रूरत है। इसमें कुछ बातें निकलकर आईं। जैसे—

- मिड-डे मील में काफ़ी पानी बर्बाद होता है;
- वॉशरूम जाने के दौरान भी पानी का ख़र्च कम किया जा सकता है;
- बिजली की बर्बादी रोकी जा सकती है;
- विद्यालय में कौन-सी ऐसी चीज़ें हैं जो बर्बाद हो रही हैं, और उनका उपयोग किया जा सकता है;
- पौधों को सूखने से रोका जा सकता है, और फूल तोड़ने पर रोक लगाई जा सकती है; आदि?

इन सब दिक़्क़तों की पहचान करने के बाद विद्यार्थियों ने योजनाबद्ध तरीक़े से अपनी एक टीम बनाई, और ज़िम्मेदारी ली कि संसाधनों का दुरुपयोग नहीं होने देंगे। अपनेपन, जुड़ाव और मिलकर ज़िम्मेदारी उठाने की भावना विकसित करने के लिए पर्यावरण के प्रति संवेदनशील विद्यार्थियों के समूह को चुना गया, उन्हें टीमों में बाँटा गया, और एक ड्यूटी चार्ट तैयार किया गया। कार्य को बारी-बारी से करने से समूह सक्रिय रहता है, और नएपन का एहसास उनकी ऊर्जा बनाए रखता है।

आगे का सफ़र और परिणाम

एक समन्वयक होने के नाते, मेरा काम है कि सदस्यों को उन विभिन्न शुरुआती चुनौतियों से निपटने में सहायता करूँ जो इको क्लब शुरू करने के दौरान आती हैं। जब शिक्षकों, समुदाय के लोगों, विद्यालय के सहयोगी साथियों को इको क्लब के उद्देश्य के बारे में जानकारी दी गई तो उन्होंने विद्यालय की बेहतरी के लिए सहयोग करना शुरू कर दिया। सदस्यों ने दोपहर के भोजन के समय, सुबह की सभा और विद्यालय के बाद के समय का उपयोग करके समय प्रबन्धन और कार्यान्वयन कौशल विकसित किया ताकि इको क्लब की गतिविधियों को करते समय उनकी पढ़ाई में रुकावट न आए। इस प्रकार, सकारात्मक सुदृढ़ीकरण और मुश्किलों का सही तरीक़े से समाधान करने से सकारात्मक परिणाम मिलने शुरू हो गए। पाठ्यपुस्तकों से विद्यार्थी अब ज़्यादा जुड़ाव महसूस कर पाने लगे थे। उनकी कुछ जिज्ञासाएँ शान्त हो रही थीं, और कुछ नई जिज्ञासाएँ जन्म ले रही थीं। बतौर शिक्षिका, उनके बदलते हुए सवाल और बढ़ती हुई जिज्ञासाएँ मुझे आश्वस्ति दे रही थीं।

रुचि और भागीदारी को बनाए रखना

सदस्यों को लगातार प्रेरित बनाए रखना निश्चित रूप से एक चुनौती है। इस चुनौती का सामना करने के लिए नियमित रूप से बैठकों का आयोजन करती हूँ। इसके अतिरिक्त, प्रकृति की सैर और आपसी संवाद के लिए प्रोत्साहित करना भी प्रयास का हिस्सा रहा। सर्कल टाइम के दौरान एक पसन्दीदा पौधा गोद

लेने और उसे नाम देने जैसी आइस-ब्रेकिंग गतिविधियाँ भी की गईं। हम एक साथ विचार-मन्थन करते हैं, तथा कार्यक्रमों और गतिविधियों को डिज़ाइन करते हैं। हम 'प्रत्येक सदस्य, बराबर आवाज़ / अवसर' की संस्कृति का पालन करते हैं। यानी यह सुनिश्चित करते हैं कि प्रत्येक सदस्य को अपनी बात कहने के समान अवसर मिलें। उदाहरण के लिए, स्वामित्व की यह भावना तब ख़ूबसूरती से सामने आई जब विद्यालय की सफ़ेदी के बाद विद्यार्थियों के एक समूह ने बचे हुए पेंट को देखा। इसे बर्बाद होने देने के बजाय, उन्होंने सामूहिक रूप से विद्यालय परिसर को सुन्दर बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने अपनी मर्ज़ी से बग़ीचे के गमलों को ख़ूबसूरती से रँगने का काम किया। यह काम किसी शिक्षक का दिया हुआ 'असाइनमेंट' नहीं था, बल्कि सभी सदस्यों द्वारा मिलकर काम करने की स्वाभाविक प्रेरणा से किया गया था।

किचन गार्डन : मेहनत का फल

'किचन गार्डन' एक ऐसा प्रभावशाली कार्यक्रम है, जो मिशन लाइफ़ के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इको क्लब के तहत शुरू किया गया। किचन गार्डन बनाने और उसकी देखभाल के लिए व्यावहारिक रूप से सीखने पर ज़ोर दिया जाता है। बग़ीचे से जुड़े शुरुआती कार्य सीखने से लेकर कुशल माली बनने तक का यह सफ़र विद्यार्थियों को व्यावसायिक अनुभव प्रदान करता है, साथ ही श्रम और धैर्य की गरिमा जैसे मूल्यों को बढ़ावा देता है।

शुरुआत में, एक टीम बीज का मिट्टी में रोपण करने से पहले एक जार के भीतर बीजों के अंकुरण का नियंत्रित तरीक़े से अवलोकन करती है। इसके बाद विद्यार्थी भूमि क्षेत्र को मापते हैं। किचन गार्डन की जगह का चुनाव करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है, इस विषय पर विचार-मन्थन किया जाता है। फिर हम किचन गार्डन की जगह में से तय किए गए हिस्से अलग-अलग टीमों में बाँटते हैं। पौधों के प्रकार चुनने से लेकर स्थानीय रूप से उपलब्ध पाइपों और छड़ियों से बनी बाड़ की ऊँचाई तय करने तक, हर बात का निर्णय लेने में विद्यार्थियों को शामिल किया जाता है। उनसे कहा जाता है कि वे मिट्टी को ज़ोर से दबाने के बजाय गड्ढों में धीरे-धीरे भरें। वे अंकुरों के निकलने, पौधों की ऊँचाई, कीड़ों व पत्तियों के रंग में बदलाव, फूल आने जैसी महत्त्वपूर्ण बातों पर ध्यान देते हैं, और उन पर विचार करते हैं।

अंकुरण के प्रयोग से मिली सीख को ध्यान में रखते हुए पौधों को पानी देने के कार्यक्रम की योजना बनाई जाती है। पानी की मात्रा, पानी देने का समय, और कितनी बार पानी देना है, इन सभी बातों पर ध्यान दिया जाता है। विद्यार्थियों से कहा जाता है कि वे पानी देने से पहले मिट्टी में नमी की जाँच करने के लिए अपनी उँगलियों से मिट्टी को छुएँ, और यह सुनिश्चित करें कि

चित्र 3 : यमुना नदी की सफ़ाई पर विद्यार्थियों के बीच वाद-विवाद प्रतियोगिता

मिट्टी नम हो, लेकिन उसमें ज़्यादा पानी न हो। इस प्रक्रिया का सम्बन्ध अंकुरण के प्रयोग से है। जिस तरह ज़्यादा या कम नमी में बीज अंकुरित नहीं हो सकते, उसी तरह पौधों का जीवन भी पानी के सन्तुलन पर निर्भर करता है। अलग-अलग पौधों को पानी देने का कोई सामान्य नियम नहीं है। यह क्लब के सक्रिय हस्तक्षेप के माध्यम से अनुभवात्मक अधिगम का एक जीवन्त उदाहरण है, जहाँ विद्यार्थी प्रत्यक्ष अनुभव से सीखते हैं।

किचन गार्डन से अपनी मेहनत का फल पाना सभी के लिए एक बहुत अच्छा अनुभव होता है। हर साल जब विद्यार्थी अपनी-अपनी ज़मीन के हिस्से में उगी फ़सल को देखते हैं, वे जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण क्षरण के प्रभावों को समझ पाते हैं। विद्यार्थियों के मिट्टी से सने हाथ पर्यावरण को बचाने के लिए कुछ करने के उनके पक्के इरादे का सबूत हैं।

कुछ चुनौतियाँ

शुरुआत में, हमारे सामने एक छोटी-सी समस्या आई कि कुछ विद्यार्थी सिर्फ़ मनोरंजन के लिए पौधों से फूल तोड़ रहे थे। लेकिन सुबह की प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों को समझाकर इस समस्या को दूर किया गया। 'फूल मत तोड़ो' जैसे उपदेशात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करने के बजाय, विद्यार्थियों और पौधों के बीच एक भावनात्मक रिश्ता क़ायम किया गया।

विद्यार्थियों ने फूलों पर आने वाले मधुमक्खियों और तितलियों जैसे मेहमानों को देखना शुरू किया, और समझ गए कि फूल तोड़ने से पौधे परागणकर्ताओं को 'आमंत्रित' नहीं कर पाते। अब वे सभी बिना किसी सख़्त नियम के प्रकृति की देखभाल करते हैं। विद्यालय के शान्त समय में तोतों की एक जोड़ी और एक मोर को विद्यालय परिसर में स्वतंत्र रूप से घूमते हुए देखा गया। ये दृश्य हमारे विद्यालय के पारिस्थितिकी तंत्र की बढ़ती जैव विविधता का जीता-जागता सबूत हैं। यह हमारी टीम के प्रकृति को बचाने के लिए किए जा रहे प्रयासों का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

कीर्ति लांबा दिल्ली के शालीमार बाग़ स्थित सीएम श्री स्कूल, बीएल ब्लॉक में सामाजिक विज्ञान की प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (टीजीटी) हैं। वे विगत 19 वर्षों से अध्यापन कर रही हैं। कीर्ति अपने विद्यालय में 'इको क्लब फ़ॉर मिशन लाइफ़' की समन्वयक हैं, और 'पर्यावरण योद्धाओं' का एक समूह बनाकर प्रकृति के संरक्षण में अपना दायित्व निभाती हैं।

सम्पर्क : kirtilamba25@gmail.com

इबारती सवालों में क्यों उलझते हैं विद्यार्थी?

मीनू पालीवाल

शिक्षा में काम करने वाले लोगों का अनुभव है कि बहुत-से बच्चे जोड़, घटाना, गुणा और भाग तो कर लेते हैं, लेकिन इबारती प्रश्न पढ़कर समझ नहीं पाते कि इस प्रश्न में उन्हें कौन-सी संक्रिया करनी है। जो हिसाब-किताब बच्चे दैनिक जीवन में आसानी से कर लेते है वही कक्षा में जब इबारती सवाल के रूप में आता है तब मुश्किल क्यों बन जाता है, जानते हैं इस लेख में।

मैं जिन बच्चियों के साथ गणित सीखने-सिखाने का काम कर रही थी, उन्होंने कक्षा 5-6 के बाद विद्यालय छोड़ दिया था। 3-4 सालों के बाद अब इन बच्चियों ने दोबारा पढ़ाई शुरू की थी। शुरुआती 3 महीनों के लिए इनके साथ कक्षा 3 की गणित के स्तर का काम किया जा रहा था। इन बच्चियों ने पूछे गए मौखिक इबारती प्रश्न आसानी से हल कर लिए, लेकिन संक्रिया लिखकर हल करने में इन्हें परेशानी हुई, तथा इबारती प्रश्न को पढ़कर करने में और ज़्यादा परेशानी हुई। जैसे, रमा के पास कुछ रुपए थे। मम्मी ने 38 रुपए और दे दिए। अब रमा के पास 59 रुपए हो गए। बताइए, रमा के पास शुरुआत में कितने रुपए थे?

> **गणित मात्र गणना नहीं है। गणित, विभिन्न राशियों के सम्बन्ध के बारे में सोचना, व्यापीकरण कर नियम व सिद्धान्त बनाना, और तब विभिन्न परिस्थितियों में इसे लागू कर पाना है।**

सवाल यह है कि इबारती प्रश्नों का उपयोग करते हुए इन्हें पढ़ाना क्यों है? और जब बच्ची संक्रिया सही तरह से कर रही है तब इबारती प्रश्न की क्या ज़रूरत है? इसका एक उत्तर एक प्रश्न के रूप में है—"हम क्या सिखाना चाह रहे हैं, और क्यों सिखाना चाह रहे हैं?" *पाठशाला भीतर और बाहर* पत्रिका के अंक 11 में प्रकाशित लेख 'गणित क्यों और कैसे?' इन्हीं प्रश्नों पर चर्चा करता है।

गणित मात्र गणना नहीं है। गणित, विभिन्न राशियों के सम्बन्ध के बारे में सोचना, व्यापीकरण कर नियम व सिद्धान्त बनाना, और तब विभिन्न परिस्थितियों में इसे लागू कर पाना है। इबारती प्रश्न बच्चों को जाना-पहचाना सन्दर्भ उपलब्ध कराते हैं, और गणितीय राशियों के बीच सम्बन्ध समझने में मदद करते हैं। यदि सन्दर्भ परिचित है तो बच्चे मौखिक इबारती प्रश्न कर लेते हैं, लेकिन इबारती प्रश्न पढ़कर समझ न आना एक बड़े स्तर पर देखा जाता है। अकसर ऐसे बच्चे भी, जो ठीक से पढ़ लेते हैं, शिक्षक से उम्मीद करते हैं कि वे उन्हें बताएँ कि इस प्रश्न में क्या करना है। उदाहरण के लिए, मेरी एक विद्यालय में विज़िट के दौरान कक्षा 5 की एक बच्ची ने बिना अटके एक प्रश्न पढ़ा—"रेवती ने अपने जन्मदिन पर कक्षा में चॉकलेट बाँटीं। वह 55 चॉकलेट लेकर आई थी, और उसने कक्षा में 42 बच्चों को 1-1 चॉकलेट दे दी। बताइए, अब उसके पास कितनी चॉकलेट हैं?"

चित्र 1: पाठ्यपुस्तक में सवालों को समझने और हल करने के प्रयासों में जुटे बच्चे

प्रश्न पढ़ने के बाद बच्ची मेरी ओर देखने लगी कि इसमें क्या करना है। जब मैंने मदद नहीं की तो वह दुबारा किताब खोलकर देखने लगी। मुझे लगा दुबारा प्रश्न पढ़ रही होगी, पर वह प्रश्न दुबारा नहीं पढ़ रही थी। मैंने उससे पूछा, "तुम प्रश्न नहीं पढ़ रही हो तो किताब में क्या देख रही हो?" उसने कहा कि वह यह देख रही है कि यह प्रश्न किताब के किस पन्ने पर लिखा है। किताब में एक पन्ने पर जोड़ने के सभी इबारती प्रश्न लिखे थे, और अगले पन्ने पर घटाने के इबारती प्रश्न। ज़ाहिर ही है कि यह बच्ची प्रश्न को पढ़कर समझने की मेहनत नहीं कर रही थी। वह सही उत्तर तक पहुँचने के लिए यह पता लगा रही थी कि प्रश्न जोड़ने के अध्याय में है या घटाने के।

प्रश्नों को हल करने का मशीनी तरीक़ा

अकसर कक्षाओं में बच्चे संक्रिया के कुछ चरण याद कर लेते हैं, और तब बिना सोचे, मशीनी तरीक़े से कक्षा में याद कराए गए इन चरणों को दोहराते हैं। ऐसा करने में उनसे विचित्र क़िस्म की ग़लतियाँ होती हैं। जैसे चित्र 2 में आप देख सकते हैं कि बच्चे ने भाग के 3 प्रश्न सही किए हैं, लेकिन 535 में 5 का भाग देकर 17 उत्तर लिखा है। इस तरह की ग़लतियाँ बच्चे आम जीवन में नहीं करते। असल में, यह ग़लती प्रश्न करने के

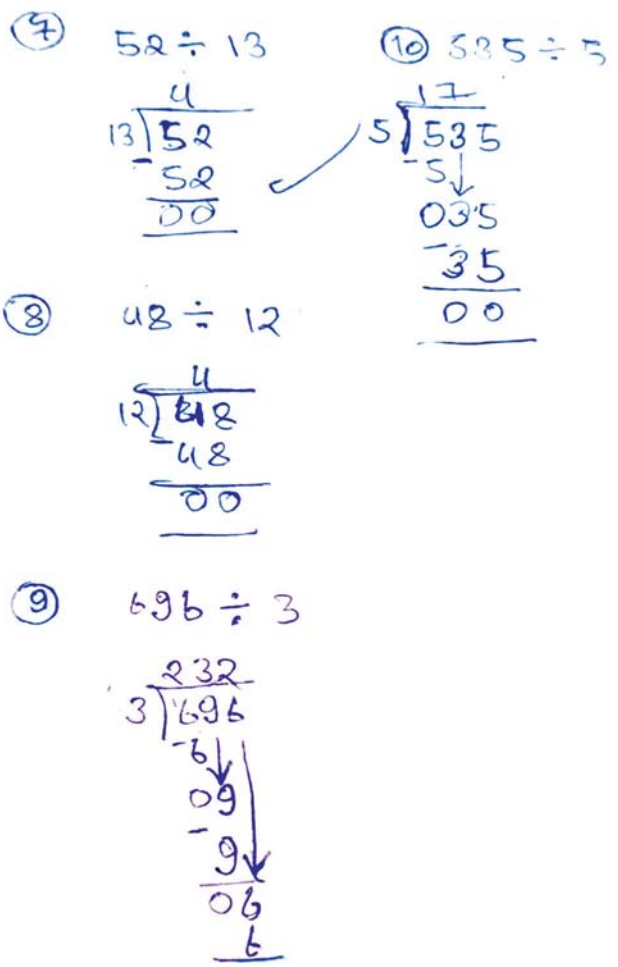

चित्र 2 : बच्चों द्वारा भाग करने के तरीक़ों के कुछ उदाहरण

मशीनी तरीक़े के इस्तेमाल के कारण है। मशीनी ढंग से प्रश्न हल करने पर बच्चे संख्याओं के बीच कोई सम्बन्ध नहीं बना पाते। यह भी कि मशीनी तरीक़े से कुछ चरण दोहराते रहने से बच्चे विद्यालय के गणित और विद्यालय के बाहर के गणित में सम्बन्ध नहीं देख पाते।

> **प्रश्न पूछना उत्तर देने से ज़्यादा बेहतर क़ाबिलियत है क्योंकि यदि प्रश्न ही नहीं होगा तो उसका उत्तर ढूँढ़ने की शुरुआत ही कैसे होगी?**

इससे बच्चों में यह नज़रिया भी विकसित होता है कि हमें बस उत्तर लाना है, और शिक्षक से यह पता करना है कि उत्तर सही है या नहीं। बच्चे इसी में ख़ुश होने लगते हैं कि उनके कितने उत्तर सही हैं और दूसरों के कितने ग़लत। आपने कई बार बच्चों को यह कहते सुना होगा, "मैडम, मैंने सबसे पहले बताया न?"; मैडम, मेरा उत्तर सही है न, उसका ग़लत?"; आदि। सारी क़वायद इस बात की होती है कि कौन पहले उत्तर देगा। बच्चों को अपने ढंग से प्रश्न करने का मौक़ा नहीं मिलता, इसलिए यह बात ही नहीं होती कि बच्चे का प्रश्न हल करने का तरीक़ा क्या था, न ही उन्हें नए प्रश्न बनाने का, और उन्हें हल करने का मौक़ा मिलता है। एक समय पर एक जैसे ही प्रश्न करने को दिए जाते हैं जिससे प्रश्नों को समझकर करने की गुंजाइश ही नहीं होती। "कितना बढ़िया प्रश्न पूछा है!", यह कक्षाओं में सुनने को बहुत कम मिलता है। जब मैं स्नातक की पढ़ाई कर रही थी तब मैंने अपने शिक्षक को एक बच्ची के लिए कहते सुना, "तुम बहुत बढ़िया प्रश्न पूछती हो।" उस समय से लेकर आज भी मुझे लगता है कि प्रश्न पूछना उत्तर देने से ज़्यादा बेहतर क़ाबिलियत है क्योंकि यदि प्रश्न ही नहीं होगा तो उसका उत्तर ढूँढ़ने की शुरुआत ही कैसे होगी!

मैंने अपनी कक्षा में इन बातों को मुखरता से जगह दी है–

1. तुमने यह प्रश्न कैसे हल किया?
2. क्या आप लोगों को यह उत्तर ठीक लगता है? क्यों?
3. क्या तुम अपने दोस्तों को यह प्रश्न समझा सकते हो?
4. तुम्हारा प्रश्न बहुत ही बढ़िया है!

इन प्रश्नों पर बात करते हुए कक्षा में काम करने में काफ़ी वक़्त लगता है, पर सोचती हूँ कि हम जो सिखाना चाह रहे हैं, क्या उसके लिए यह समय लगाना आवश्यक नहीं? कभी-कभी समय की कमी ज़रूर महसूस होती है, पर यदि हम इस तरह से चर्चा नहीं करेंगे तो बच्चे तार्किकता से सोच पाना नहीं सीख पाएँगे। इससे बच्चों की सोच पाने की क्षमता तो सीमित होती ही है साथ ही नए जुड़ाव बनाने, जैसे पाठ्यपुस्तक और अपने अनुभवों के बीच, दो संक्रियाओं के बीच इस तरह के विभिन्न सम्बन्ध बनाने, की क्षमता भी प्रभावित होती है। धीरे-धीरे गणित से, गणितीय सोच से बच्चों की दूरी बढ़ती चली जाती है।

कुछ और अनुभव

कक्षा 4 के बच्चों के साथ इबारती प्रश्नों का एक पर्चा लेकर बैठी। बच्चों को पता था कि हम गुणा सीख रहे हैं। उन्हें प्रश्न में केवल 2 संख्याएँ खोजनी थीं जिनका वे गुणा कर सकें। इस बात का ध्यान रखते हुए मैंने प्रश्नों में 2 से ज़्यादा संख्याएँ रखने की कोशिश की। उदाहरण के लिए, प्रश्न ऐसा था—"एक गाय दिन में दो बार दूध देती है। यदि एक बार में वह 4 लीटर दूध देती है तो वह 5 दिनों में कुल कितना दूध देगी?" इस प्रश्न में बच्चे ने 5 को 4 से गुणा करके 20 उत्तर दिया, जबकि 2 × 4 × 5 किया जाना चाहिए था। चित्र 3 में आप ऐसे और भी उदाहरण देख सकते हैं।

चित्र 3 में आप देख सकते हैं कि इस बच्चे ने बहुत-से प्रश्न सही हल कर लिए हैं। कुछ प्रश्नों पर बच्चे से चर्चा भी हुई। इससे उसे यह समझने में मदद मिली कि कौन-सी दो संख्याओं का गुणा करना है, पर उसने एक प्रश्न में 121 का 1 से गुणा भी किया है। यदि वह गुणा का मतलब समझता, प्रश्न को समझता तो 121 का 1 से गुणा नहीं करता। इस तरह की परेशानी की एक वजह मुझे इबारती प्रश्न न पूछा जाना लगती है। लेकिन यहाँ इबारती प्रश्न है—"एक विद्यालय में 121 बच्चे हैं। हर एक बच्चे के लिए 1 थाली, 4 कटोरी और 2 चम्मचों की ज़रूरत होगी। बताइए, कितनी कटोरी, चम्मच और थाली की ज़रूरत होगी?" इसके बाद भी बच्चे ने 121 को 1 से गुणा किया है। एक और प्रश्न में भी बच्चे ने 1 से गुणा किया है। इसका एक कारण यह है कि बच्चा कक्षा में मशीनी तौर से सीखे गए गुणा के चरण दोहरा रहा है। दूसरा कारण जल्दी-से-जल्दी प्रश्न हल करके दिखाना हो सकता है। यह भी कारण हो सकता है कि ज़रूरत से ज़्यादा प्रश्न दिए हैं और काम जल्दी ख़त्म करना है, या प्रश्न को हल करके दिखाना ही है तो कुछ प्रक्रिया करनी होगी।

इस पन्ने में और भी बहुत-सी ग़लतियाँ हैं। जैसे, 128 से 8 का गुणा करने पर इकाई के अंक में 6 लिखना और 4 दहाई को हासिल के रूप में दहाइयों में जोड़ना। पर बच्चे ने हर जगह यह ग़लती नहीं की है। कुछ दूसरे प्रश्नों में, जैसे 122 में 6 का गुणा करने पर, वह ग़लती नहीं की है, और गुणा करके वह ठीक उत्तर पर पहुँच गया है। इससे यह भी पता चलता है कि किसी भी अवधारणा पर काम करते समय बच्चे अलग-अलग तरह के प्रश्न हल करते हैं, और धीरे-धीरे सीखते हैं। इसके अलावा, गणित में प्रश्न को समझना भी महत्त्वपूर्ण है, और यह भी महत्त्वपूर्ण है कि प्रश्न को हल करने के लिए किस तरह से लिखना है, और फिर उसे हल करते समय क्या-क्या ध्यान रखना है।

इसलिए इसके बाद मैंने बच्चे से कहा कि आप हर प्रश्न को पढ़कर पूरे वाक्य में उत्तर भी लिखो। आगे चित्र 5 में आप देख सकते हैं कि इसी बच्चे ने ठीक से प्रश्न लिखा, और पूरे वाक्य में उत्तर लिखा है। इससे बच्चे, प्रश्न में क्या करना था और क्या किया, इस बारे में सोच पाते हैं और गणित सार्थक बनता है।

कक्षा में काम करने के दौरान मुझे समझ आया कि बच्चों द्वारा ग़लतियाँ होंगी ही। कई बार ऐसी ग़लतियाँ भी होती हैं जिनका

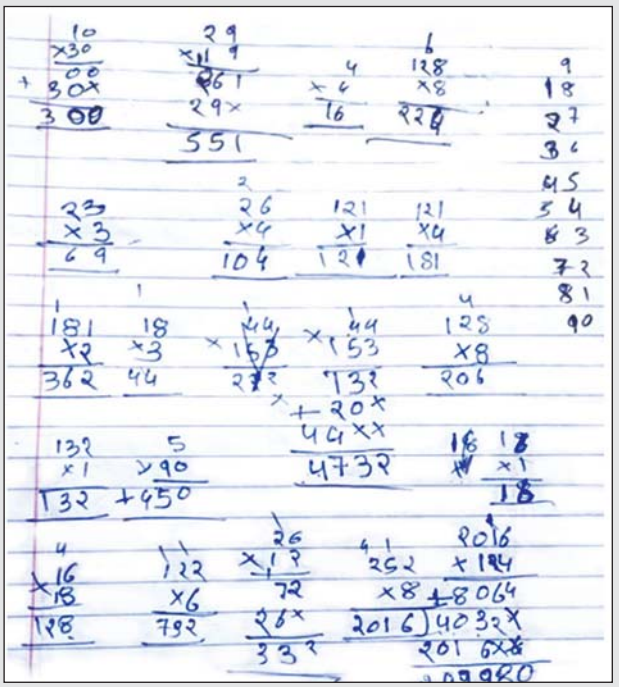

1. एक पौधा हर साल 10 सेंटीमीटर बढ़ता है। उसकी ऊँचाई 30 साल तक बढ़ती है। यह पौधा 25 साल के अन्त में कितने सेंटीमीटर ऊँचा हो जाएगा?
2. राजीव नगर में घरों की 19 लेन (कतार) हैं। हर लेन में 29 घर हैं। कॉलोनी में कुल कितने घर हैं?
3. एक होटल में 4 तरह के (आलू, गोभी, मटर, पनीर) पराठे मिलते हैं। यह पराठे वह 4 तरह की चटनी (लाल, हरी, सफ़ेद, पीली) के साथ बेचता है। एक व्यक्ति के पास कितनी तरह से पराठे खाने का विकल्प हैं?
4. स्कूल में 128 बच्चे हैं। सभी बच्चे प्रार्थना के लिए कतार में खड़े हो गए। बच्चों की 8 कतारें थीं। हर कतार में कितने बच्चे होंगे?
5. अपना घर स्कूल में 23 कमरे हैं। हर कमरे में 3 पंखे और 4 ट्यूबलाइट हैं। स्कूल में कुल कितने पंखे और ट्यूबलाइट हैं?
6. एक भैंस दिन में दो बार दूध देती है। एक बार में भैंस 5 लीटर दूध देती है। 90 दिनों में भैंस कितना दूध देगी?
7. एक किताब की क़ीमत 26 रुपए है। शारदा मन्दिर स्कूल को उसकी 56 प्रतियाँ चाहिए हैं। स्कूल को 56 प्रतियों के कितने रुपए देने होंगे?
8. अपना घर स्कूल में 121 बच्चे हैं। हर बच्चे के लिए स्कूल को 1 थाली, 4 कटोरी और 2 चम्मच की ज़रूरत है। स्कूल को कितनी थाली, कटोरी और चम्मच की ज़रूरत होगी?
9. एक स्कूल में 18 कमरे हैं। हर कमरे के लिए 3 दरी ख़रीदना हैं। एक दरी की क़ीमत 153 रुपए है। स्कूल को कितनी दरी की ज़रूरत होगी और कितने रुपए ख़र्च करने होंगे?
10. एक दुकानदार हर महीने अपनी दुकान में 132 बिस्कुट पैकेट बुलवाता है। एक साल में वह कितने बिस्कुट के पैकेट बुलवाएगा?

चित्र 3 : इबारती सवाल और उन्हें हल करने के कुछ नमूने

कोई कारण समझ नहीं आता, और कई बार बच्चा भी इस बात का उत्तर नहीं दे पाता कि यह उत्तर कैसे आया। कोई भी तरीक़ा कितना भी अच्छा हो, अगर बच्चा उसे काम में लेने के दौरान अर्थ नहीं निकाल पा रहा है, या समझ नहीं पा रहा है तो ग़लतियाँ होंगी ही। जैसे, छोटी संख्या में से बड़ी संख्या घटाना। अर्थ समझना तभी हो पाएगा जब बच्चा उस पद्धति या एल्गोरिदम को तार्किक रूप से हल कर रहा है। इसके लिए यह कर सकते हैं कि हर बार हम कक्षा में प्रश्नों पर चर्चा करें। इस पर चर्चा करें कि कोई उत्तर क्यों सही या ग़लत है, या किसी भी उत्तर तक वे कैसे पहुँचे? बच्चों को प्रश्न को अलग-अलग तरह से हल करने की आज़ादी दें, और ऐसे तरीक़ों को कक्षा में

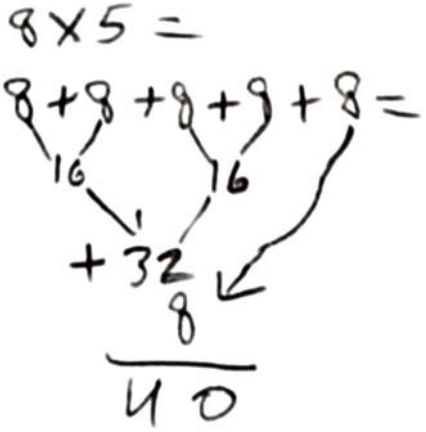

चित्र 4 : गुणा हल करने का यह भी है एक तरीक़ा

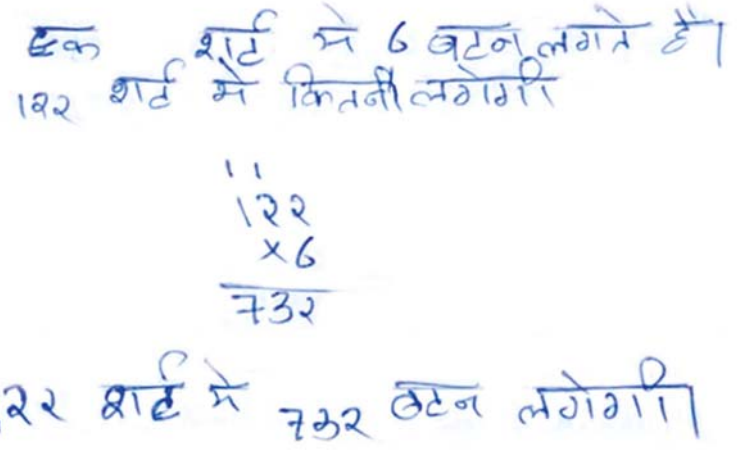

चित्र 5 : बच्चे ने ख़ुद इबारती सवाल लिखा, उसे हल किया और इबारत में उत्तर लिखा

प्रोत्साहित करें। अपने उत्तर के पक्ष में बच्चों को अपनी सोच को व्यक्त करने की जगह दें। दूसरे बच्चों को उस तर्क से सहमत या असहमत होने की जगह दें। यदि हम बच्चों को सोचना सिखाना चाहते हैं तो इस तरह की बातों को कक्षा में जगह देनी होगी। (चित्र 4 में देखिए कि बच्चे ने 8 × 5 का उत्तर कैसे खोजा है।)

> **ख़ुद से प्रश्न करते हुए बच्चे सोचना सीखते हैं। वे सीखते हैं कि किस क्रम में और किस तरह से सोचने से मदद मिलेगी। यह सीखते हुए बच्चे ग़लतियाँ करेंगे, लेकिन यह सिर्फ़ उत्तर पाने की क़वायद करने से ज़्यादा अर्थपूर्ण होगा।**

गणित सीखने में बच्चों को सिर्फ़ संक्रियाएँ ही नहीं करनी हैं। गणित, प्रश्नों के सही उत्तर पाने से अधिक है। यह सोचने का एक तरीक़ा है। ख़ुद से प्रश्न करते हुए बच्चे सोचना सीखते हैं। वे सीखते हैं कि किस क्रम में और किस तरह से सोचने से मदद मिलेगी। यह सीखते हुए बच्चे ग़लतियाँ करेंगे, लेकिन यह सिर्फ़ उत्तर पाने की क़वायद करने से ज़्यादा अर्थपूर्ण होगा। बच्चे इबारती प्रश्न करें भी और बनाएँ भी। इबारती प्रश्न उन्हें व्यावहारिक गणित से जुड़ने का मौक़ा देते हैं जिससे उन्हें पाठ्यपुस्तक के प्रश्नों को समझने में भी मदद मिलती है।

अन्त में

'सिखाना' एक बेहद जटिल काम है। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि हम किसी को कुछ सिखा नहीं सकते, केवल सीखने का वातावरण दे सकते हैं। बहुत हद तक यह बात सही लगती है क्योंकि कुछ सीखने के लिए सोचना / मानसिक प्रक्रिया बहुत ज़रूरी होती है जो दबाव डालने से नहीं हो सकती। कहीं-न-कहीं अन्दर की इच्छा के बिना यह नहीं किया जा सकता। हम चाहते हैं कि बच्चे प्रश्नों से जूझें। इसमें बहुत हद तक सन्दर्भ मदद कर सकता है। पर सिर्फ़ सन्दर्भ से काम बन जाएगा यह भी नहीं कह सकते। इसमें और भी कारक महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। मसलन, कक्षा और घर का वातावरण, बच्चे / शिक्षक का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य, बच्चे की अपनी दिलचस्पी, रुचि, इत्यादि। इन कारकों को ध्यान में रखते हुए और सचेत रहते हुए शिक्षण करने की ज़रूरत है।

मीनू पालीवाल ने अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन और मुस्कान के साथ लगभग सात वर्षों तक काम किया है। छह वर्ष आईसीआईसीआई बैंक के साथ काम करने के दौरान अपने मन में आने वाले प्रश्नों की तलाश में शिक्षण प्रक्रिया से जुड़ीं। उन्हें प्राथमिक कक्षाओं में सीखने-सिखाने का काम करना अच्छा लगता है।

सम्पर्क : paliwal.meenu@gmail.com

पाठ योजना बनाकर पढ़ाने के अनुभव

आरती पाण्डेय

पाठ्यपुस्तक के पाठ की कहानी को सुविचारित योजना बनाकर कक्षा में कैसे पढ़ाया जाए, इसकी एक अनुभवपरक रूपरेखा इस लेख में है। शिक्षिका, सीखने के प्रतिफल के आधार पर कहानी शिक्षण के उद्देश्य तय करती हैं, फिर ऐसे प्रभावी तरीक़ों को आज़माती हैं जिनसे उद्देश्यों के अनुरूप परिणाम हासिल किए जा सकें। वे कितनी सफल होती हैं; क्या चुनौतियाँ आती हैं; और कैसे वे इनको सुलझाती हैं; यह सब लेख का हिस्सा है।

चित्र 1: कहानी सुनकर उससे जुड़े अपने अनुभव लिखते विद्यार्थी

कहानी के बारे में

मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'नादान दोस्त', बच्चों के सरल एवं जिज्ञासु स्वभाव को दर्शाती है। कहानी में, केशव और श्यामा भाई-बहन हैं। उनके घर में कॉर्निस पर चिड़िया ने अण्डे दिए हैं। उनमें उत्सुकता है कि चिड़िया के अण्डे कैसे होंगे; उनमें से बच्चे कैसे निकलेंगे; वह क्या खाएँगे; कैसे रहेंगे; आदि। बच्चों ने दोपहर की गर्मी में अण्डों की सुरक्षा के लिए अनेक उपाय किए जिससे उन पर धूप और बरसात न पड़े। कटोरी में पानी और चावल के दाने भी रखे। चिड़िया के बच्चों की देखभाल करते हुए इन बच्चों से बहुत बड़ी नादानी हो जाती है जिसका उन्हें बहुत पछतावा होता है। यह कहानी आम बच्चों के परिवेश से जुड़ती है। चिड़ियाँ अकसर घरों में घोंसला बनाती हैं, इसलिए कक्षा का प्रत्येक बच्चा स्वयं को कहानी से जुड़ा हुआ महसूस करता है।

पाठ पढ़ाने का उद्देश्य

यह कहानी कक्षा 6 की *वसंत* पाठ्यपुस्तक में है। अपनी तैयारी हेतु मैंने इस कक्षा के लिए निर्धारित भाषा सीखने के प्रतिफल पढ़े। इन प्रतिफलों के आधार पर मुझे कहानी को पढ़ाने की योजना बनाते समय इसके कुछ उद्देश्य समझ में आए। इनमें शामिल हैं—वार्तालाप के माध्यम से बच्चों का कहानी से भावनात्मक जुड़ाव बन सके; वे पशु-पक्षियों व प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता से सोच सकें; बच्चे इस रचना को गहराई से जान-समझ सकें; और उनमें अन्य रचनाओं को पढ़ने की उत्सुकता बने। यह भी उद्देश्य था कि पाठ पढ़ाने के दौरान बच्चों को सोचने, अपना भाषा ज्ञान और शब्द सम्पदा बढ़ाने, कल्पनाशक्ति विकसित करने और अपने अनुभवों को ताज़ा करने के मौक़े मिलें। मुझे बच्चों में कहानी, उसकी घटनाओं व किरदार, आदि के बारे में समालोचक दृष्टिकोण से विचार करने पर भी काम करना था।

> अपनी तैयारी के लिए मैंने इस कक्षा के लिए निर्धारित भाषा सीखने के प्रतिफल पढ़े। इन प्रतिफलों के आधार पर मुझे कहानी को पढ़ाने की योजना बनाते समय इसके कुछ उद्देश्य समझ में आए।

चित्रों पर बच्चों के अनुभव से जुड़ती चर्चा

पहले दिन मैंने कहानी पढ़ते समय इसके चित्रों पर बच्चों से बात की जिससे वे कहानी से परिचित हो सकें। चित्र दिखाकर पूछा, "इसमें क्या-क्या दिख रहा है?" बच्चों ने कहा, "एक चिड़िया अपने अण्डों पर बैठी है, जैसे मुर्ग़ी अपने अण्डों पर बैठती है। वह अण्डे 'से' रही है जिससे उनमें बच्चे आ जाएँ।" मुनमुन ने कहा, "चिड़िया चारों तरफ़ नज़र दौड़ा रही है, कहीं कोई उसके अण्डे ले न जाए।" इसी तरह, दूसरे चित्र पर मीनू ने जवाब दिया, "मुझे लग रहा है, चिड़िया कुछ बता रही है। जैसे उसके अण्डों पर ख़तरा आने वाला हो!" तीसरे चित्र के बारे में बच्चों ने कहा, "केशव और श्यामा चिड़िया के अण्डों को ऊपर चढ़कर देख रहे हैं, उन्हें छू रहे हैं, अण्डों की जगह पर सफ़ाई कर रहे हैं।" रोहित ने कहा, "लेकिन चिड़िया के अण्डों को छूना नहीं चाहिए। ऐसा मेरी दादी कहती हैं।" इस बात से काफ़ी बच्चे सहमत थे। वे कह रहे थे, जब हम चिड़िया का घोंसला और अण्डा देख लेते हैं तो हमारा मन उन्हें पास से देखने का ज़रूर करता है। इस पूरी बातचीत में बच्चे चित्रों से अपने आस-पास को बख़ूबी जोड़ पा रहे थे।

एक और चित्र जिसमें दो बच्चे और उनकी माँ है। चित्र के बारे में पूछते ही बच्चों ने कहा, "ज़रूर भाई-बहन ने चिड़िया के अण्डों से छेड़खानी की होगी, मम्मी उनकी पिटाई कर रही हैं।" कुछ बच्चों ने कहा, "नहीं।" रूपाली ने कहा, "पक्का पिटाई हो रही है। ऐसी बातों पर मम्मी समझाती नहीं हैं।"

चित्र 2 : चिड़िया के बच्चों व अण्डों की देखभाल के लिए उत्सुक बच्चे

(चित्र एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक 'वसंत' से साभार)

चलो, अब कहानी पढ़ते हैं

धानिया ने कहा, "यह तो कहानी पढ़कर ही पता चलेगा। चलो, कहानी पढ़ते हैं!" बच्चों में जिज्ञासा थी, आख़िर कहानी में ऐसा क्या हुआ है! जो बच्चे किताब पढ़ लेते हैं, पढ़ते-पढ़ते कह रहे थे, "देखा! मैंने सही कहा था। बच्चे चिड़िया के अण्डों को छू रहे हैं। अपनी मम्मी को भी नहीं बताया।" जो बच्चे अभी पढ़ने के शुरुआती स्तर पर हैं, उनके साथ बैठकर मैंने अक्षर और मात्रा जोड़कर पढ़ाने की कोशिश की। चित्रों के माध्यम से वे कहानी से जुड़ तो रहे थे, लेकिन पढ़ नहीं सकते थे। इन बच्चों से मैंने एक पैराग्राफ़ बार-बार पढ़वाया। परिणाम यह हुआ कि बच्चों की उन अक्षरों, शब्दों और वाक्यों से जैसे जान-पहचान हो गई थी। वह अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। मैंने कमज़ोर और पढ़ने में ठीक बच्चों का समूह बनाया। एक साथ पढ़ने से भी बच्चे देखकर पढ़ना सीख रहे थे। वे बच्चे जो अच्छी तरह से पढ़-लिख लेते हैं, उन्होंने बहुत मन से कहानी पढ़ी।

नए शब्दों और मुहावरों के अर्थ बनाना

दूसरे दिन मैंने बच्चों को कहानी के कुछ अंश पढ़कर सुनाए। मैं कहानी में आए नए व कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ समझाने पर भी ज़ोर दे रही थी। जैसे—करुण स्वर। इसका जवाब केवल मुनमुन ने दिया, "उदास या दुःखी होकर बोलना।" चेहरे का रंग उड़ना, सुरेन्द्र ने बताया, "डर जाना, अफ़सोस करना।" ज़्यादातर बच्चों द्वारा अर्थ न बताने का कारण यह समझ में आया कि शब्द थोड़ा बड़ा था। अब मैंने 'भीगी बिल्ली' वाक्य को सामने रखा। कक्षा के आधे से ज़्यादा बच्चों ने उत्तर दिया, "सीधा-सादा, एकदम मासूम बनना।" उनकी बातचीत से पता चला कि अधिकतर बच्चे अभी मुहावरों से परिचित नहीं हैं। तब मैंने कुछ मुहावरों को श्यामपट्ट पर लिखा। जैसे—नौ दो ग्यारह हो जाना, ईद का चाँद होना, आँखों का तारा, आदि। एक बच्चे ने तुरन्त ही कुछ और मुहावरे बताए। मसलन, नाक में दम करना, ईंट का जवाब पत्थर से देना, आदि। उसके जवाब से लग रहा था कि वह इन वाक्यों को अपने बोलचाल या कही-सुनी बातों से जोड़ रहा था। पूछने पर उसने बताया कि जब मम्मी को परेशान करते हैं तो वे कहती हैं, तुमने मेरी नाक में दम कर रखा है। इस जवाब का पूरी कक्षा आनन्द ले रही थी।

मैंने बच्चों को बताया कि इस प्रकार के वाक्यों को मुहावरा कहते हैं। इनसे हम अपनी बात बहुत कम शब्दों में

प्रभावशाली ढंग से रख सकते हैं। अब हर बच्चा मुहावरों का उपयोग कर अपने-अपने वाक्य बनाने की कोशिश कर रहा था।

कहानी और उसका घटनाक्रम

आगे कहानी के घटनाक्रम पर बातचीत हुई। बच्चों ने बताया कि इस कहानी में एक चिड़िया ने केशव और श्यामा के घर में कॉर्निस पर अण्डे दिए थे। बच्चों का अण्डे छूने का मन कर रहा था। उन्होंने बहाने से उनके पास सामान रखना शुरू कर दिया और अण्डे फूट गए। श्याम ने घटनाक्रम बताया, "केशव और श्यामा के घर चिड़िया ने अण्डे दिए। अण्डों के पास उन्होंने खाने-पीने का सामान रखा कि चिड़िया को बाहर नहीं जाना पड़ेगा। लेकिन चिड़िया तो अपने मन की करती है। चुपके-चुपके केशव और श्यामा ने जिज्ञासावश अण्डों को छू लिया, और अपनी माँ को भी नहीं बताया। चिड़िया को यह अच्छा नहीं लगा। अण्डे फूट गए। केशव और श्यामा से बहुत बड़ा बचपना हो गया। उन्हें बहुत अफ़सोस भी हो रहा था।"

> **इस पाठ पर काम करके मैं स्वयं का मूल्यांकन भी कर पाई कि निर्धारित उद्देश्यों को मैंने कहाँ तक हासिल किया; क्या छूट गया; क्या समस्या और चुनौतियाँ आईं; आदि।**

कहानी का परिवेश और समय काल

अब मैंने बच्चों से एक प्रश्न किया, "यह कहानी किस दौर में लिखी गई होगी; किस परिवेश की होगी; और उस समय का जीवन कैसा रहा होगा?" किसी ने कहा, "यह हमारे गाँव के पुराने समय की है।" राजू ने उत्तर दिया, "जब घर खपरैल और ईंटों के बने होते थे उसी समय की है क्योंकि चिड़िया खपरैल और झोपड़ी में ज़्यादा घोंसले बनाती है।" मीनू ने बहुत अलग उत्तर दिया, "यह हमारे दादा-दादी के ज़माने की हो सकती है क्योंकि उस समय बहुत ज़्यादा पेड़ व खेत हुआ करते थे।" बच्चे प्रश्न के बारे बहुत कुछ सोच पा रहे थे। धानिया ने कहा, "आजकल तो पता ही नहीं चलता कि चिड़िया कब और कहाँ घोंसला बनाती है।"

बनी नई कहानी की सम्भावना

जब यह बात आई कि टूट गए अण्डों के बारे में केशव और श्यामा आपस में ही सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली क्यों दिया करते थे, बच्चों के काफ़ी दिलचस्प उत्तर आए।

मुनमुन ने बताया, "उनका कोई दोस्त नहीं था। दोस्त होता तो कहानी में उसका भी नाम ज़रूर होता। सब मिलकर बातचीत कर लिए होते तो शायद अण्डे बच गए होते। दोस्त बड़े काम के होते हैं। दोस्त कभी-कभी अच्छी राय देते हैं।" मुनमुन के इस उत्तर ने कहानी को एक नया मोड़ दे दिया कि उनका एक और दोस्त होना चाहिए था। मैंने मुनमुन से कहा, "कल्पना करो, अगर केशव और श्यामा का कोई दोस्त होता तो कहानी में क्या बदलाव आता!" मुनमुन ने उत्साहित होकर कहा, "हाँ मैम, मैं सोचकर एक नई कहानी बनाकर दिखाऊँगी!"

कहानी के किरदार

"कहानी पढ़ते समय तुम्हें केशव और श्यामा के बारे में क्या पता चलता है?" पूछने पर काफ़ी बच्चों ने उत्तर दिया कि उनको अपनी ग़लती का एहसास हो गया था। वह बहुत अच्छे बच्चे थे, और अण्डों से बच्चे निकलना देखना चाहते थे। वे चिड़िया की मदद करना चाहते थे, लेकिन अण्डा फूट गया। उन्हें बहुत अफ़सोस भी हो रहा था।

क्या अच्छा लगा और क्या नहीं ?

"कहानी में तुम्हें कहाँ-कहाँ बहुत अच्छा लगा?" पूछने पर जवाब आया, "हमें तो पूरी कहानी बहुत अच्छी लगी।" सुरेन्द्र ने जवाब दिया, "अण्डे फूट जाने के बाद अम्मा दोनों बच्चों को डाँटने लगीं। उस समय श्यामा, अम्मा की तरफ़ हो गई, यह मुझे अच्छा लगा।" कहानी पढ़ते समय कक्षा के सभी बच्चे, केशव ने जब श्यामा को डाँटा, "तेरे सर पर।", इस पंक्ति को बहुत मज़े लेकर पढ़ रहे थे।

रोहित बोला, "श्यामा ने जब सारा इल्ज़ाम केशव पर लगा दिया, तब उन्हें अपनी नादानी का एहसास हुआ।" राजू ने कहा, "जब चिड़िया के बच्चों को देखने के लिए वे दोनों बहुत ख़ुश थे, और श्यामा, केशव से बार-बार पूछ रही थी, 'भैया बच्चे कैसे हैं; वह क्या खाएँगे; कैसे लग रहे हैं?' मुझे अच्छा लगा।"

बच्चों को कहानी में जब इतना कुछ अच्छा लगा, फिर यह प्रश्न करना बहुत ज़रूरी था, "कहानी में तुम्हें क्या अच्छा नहीं लगा?", ताकि वह और अधिक कल्पना करके अपनी बातों को रख सकें। प्रतिमा का जवाब था, "जब अण्डे गिरकर टूट गए, मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।" काफ़ी बच्चे इस बात का समर्थन कर रहे थे।

एक अलग दृष्टिकोण

किशन की बात ने तो पूरी कहानी को ही पलटकर रख दिया। उसने कहा, "चिड़िया को अण्डा नहीं गिराना चाहिए था। उसको यह समझना चाहिए था कि जैसे उसके बच्चे हैं, केशव और श्यामा भी तो किसी के बच्चे हैं। उनके छूने से चिड़िया को इतना बुरा लग गया कि उसने अपना अण्डा गिरा दिया! इससे दोनों बच्चों को डाँट भी पड़ी और केशव को रात में नींद भी नहीं आई।" इस उत्तर से कक्षा में चर्चा होने लगी कि यह कैसे हो सकता है, चिड़िया ऐसा नहीं सोच सकती है! वह अपने घोंसले और बच्चों के बारे में ही सोचती है, उसके पास इन्सानों जैसी बुद्धि नहीं होती। मुनमुन ने कहा, "अरे बुद्धू! उनके पास हमसे ज़्यादा बुद्धि होती है। अगर वह ऐसा सोचती तो बताती कैसे?"

लेखक से जुड़ाव

अब बच्चों को कहानी के लेखक से परिचित कराने की बारी थी। "इतनी सुन्दर कहानी आख़िर किसने लिखी होगी?" मैंने पूछा। बच्चों को पता नहीं था। मैंने मुंशी प्रेमचंद का चित्र मोबाइल में दिखाते हुए कहा, "यह कहानी इन्होंने लिखी है। क्या तुमने प्रेमचंद की लिखी कोई दूसरी कहानी पढ़ी है?" बच्चों को जानकारी नहीं थी। मैंने कक्षा 5 के पाठ 'ईदगाह' की याद दिलाई। सभी बच्चे ख़ुश हो गए। लेखक से परिचय ज़रूरी था जिससे उनकी लिखीं अन्य कहानियों की किताबें बच्चों को पढ़ने को दी जाएँ। यह प्रयास मैं अपने पुस्तकालय से ज़रूर करूँगी।

मैंने क्या जाना, क्या समझा ?

इस पाठ पर काम करके मैं स्वयं का मूल्यांकन भी कर पाई कि निर्धारित उद्देश्यों को मैंने कहाँ तक हासिल किया; क्या छूट गया; क्या समस्या और चुनौतियाँ आईं; आदि। मैंने देखा, पढ़ने के शुरुआती स्तर के ज़्यादातर बच्चे बातचीत में भाग नहीं ले पा रहे थे। एक बालिका ने बताया, "यह कहानी बहुत बड़ी है। मेरी समझ में नहीं आ रही है।" कक्षा में उसके जैसे और भी बच्चे हैं जिन्होंने इस पाठ पर समझ बनाने और अपनी बात रखने में कठिनाई महसूस की। इसके लिए मुझे उनके साथ *बरखा* सीरीज़ व अन्य बाल साहित्य की मदद से काम करना होगा।

शिक्षण योजना बनाकर काम करने से मैंने देखा कि बच्चे रचना, किरदारों और घटनाओं से स्वयं को जोड़ पा रहे थे। उनका भावनात्मक जुड़ाव उनके उत्तरों में देखने को मिल रहा था। हर घटना और किरदार के बारे में उनकी राय और विचार बन रहे थे। प्रत्येक बच्चा अपना तर्क देकर सहमति-असहमति, दोनों जता रहा था। इससे उनको और भी अधिक सोचने-समझने, कल्पना करने और अपनी बात को रखने का मौक़ा मिल रहा था। कई बार बच्चों की प्रतिक्रियाएँ अचम्भित करने वाली थीं। उनमें अन्य रचनाओं के प्रति उत्सुकता भी देखने को मिली। इस प्रकार बच्चों के साथ काम करके उनसे एक अलग जुड़ाव महसूस हुआ।

चित्र 3 : माँ को घटना के बारे में बताते बच्चे

(चित्र एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक "वसंत" से साभार)

आरती पाण्डेय राजकीय माध्यमिक विद्यालय रामनगर, रुद्रपुर, ज़िला ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका हैं। उन्हें चित्रकारी करना और कविताएँ लिखना पसन्द है। उनकी किताबें पढ़ने और बच्चों से जुड़ाव बनाकर कुछ नए ढंग से सीखने-सिखाने में विशेष दिलचस्पी है।

सम्पर्क : articsc83@gmail.com

एक कहानी के ज़रिए कई दक्षताओं तक पहुँचना

मंजू रेवरिया

कहानियाँ बचपन का एक अहम हिस्सा होती हैं। हम सभी ने अपने बुज़ुर्गों से कहानियाँ सुनी हैं। कहानियाँ अकसर मनोरंजन के लिए सुनाई जाती हैं। हम स्कूल में बच्चों को कहानियाँ सुनाते हैं। इसका मक़सद मनोरंजन के साथ-साथ बच्चों की कल्पनाशक्ति को विकसित करना, दुनिया के बारे में सीखना, संस्कृतियों की समानताओं को जानना, भावनाओं पर चर्चा करना और भाषा का अधिग्रहण करना होता है। कहानी की सम्भावनाओं की एक झलक इस लेख में प्रस्तुत है।

चित्र 1 : एक कहानी, ढेर सारी कल्पनाएँ

कहानी सुनाना

एक कहानी सुनाने से हम बच्चों को क्या-क्या सिखा सकते हैं, यह कहानी के चयन और उसे सुनाने वाले पर निर्भर करता है। मैंने बच्चों के साथ एक कहानी 'जल्द बहुत जल्द' पर चर्चा की। यह कहानी फ़ारिदेह ख़ल्अतबरी द्वारा लिखी गई है और अली नामवर ने इसके चित्र बनाए हैं। मैंने इस कहानी पर 4 अलग-अलग जगह के बच्चों के साथ कार्य किया। इस लेख में बच्चों के साथ किए इस काम के अनुभव प्रस्तुत हैं।

> **मैंने हर एक अवसर पर बच्चों को बोलने की छूट दी थी। वो जब चाहें अपनी बात रख सकते थे।**

कहानी का सार

शुरुआत एक छोटी-सी लड़की के सवाल से होती है। वह अपनी अम्मी से पूछती है, "हम कितने समय तक नानी के घर रहने वाले हैं?" अम्मी का जवाब होता है, "जब तक तुम्हारे अब्बू नहीं आते।" उसका अगला सवाल होता है, "और वो कब आएँगे?" बिना उसका जवाब दिए अम्मी कुछ सालों पीछे का सोचकर काँप जाती हैं। वो उन हालात और समय में खो जाती हैं जब वह उसके अब्बू, माने अपने शौहर, से अलग हुई थीं। छोटी लड़की बार-बार प्रश्न करती है कि अब्बू कब आएँगे? गुड़िया ख़रीदने से लेकर, ग़लीचा बनाते समय हर बार अम्मी का जवाब होता है, "जल्दी ही।" जब लड़की स्कूल से वापस आती है, पढ़ाई करने के बजाय ख़ुद से ही फुसफुसाती है कि तुम्हें जवाब पता है, फिर क्यूँ बार-बार अम्मी से पूछ रही हो।

बच्चों के साथ बातचीत

ग्रामीण और शहरी स्कूलों के बच्चों के साथ इस कहानी पर चर्चाओं में अन्तर बख़ूबी देखने को मिला। आप जान ही गए होंगे कि यह कहानी पति-पत्नी के अलग होने की है। लेकिन यह हुआ क्यों होगा, ये कहानी पढ़कर पता नहीं चलता। कहानी पढ़ने के बाद जब बच्चों से सवाल किया कि बच्ची के अब्बू कहाँ गए होंगे, उनके जवाब थे–

- उसके पापा कहीं बाहर नौकरी करते होंगे।
- आर्मी में भी हो सकते हैं।
- घर से दूर रहते होंगे।
- शायद वो भगवान के पास चले गए हैं।
- शहीद हो गए होंगे।

ग्रामीण व शहरी, किसी भी स्कूल के बच्चे ने यह नहीं कहा कि वे अलग हो गए होंगे या उनका तलाक़ हो गया होगा। सिर्फ़ एक ग्रामीण स्कूल के बच्चे ने कहा, "अरे दीदी! उनका तलाक़ हो गया होगा।"

मैंने पूछा, "आपको क्यों लगा कि तलाक़ हो गया होगा?"

बच्चे ने कहा, "दीदी! मेरे चाचा ने लव मैरिज की थी। मेरी चाची को यहाँ गाँव में रहना भी पसन्द नहीं आ रहा था, इसलिए झगड़ा होने लगा। अब उन दोनों ने तलाक़ ले लिया है। चाची अपने घर चली गईं।"

मैंने हर एक अवसर पर बच्चों को बोलने की छूट दी थी। वो जब चाहें अपनी बात रख सकते थे। कहानी भी ऐसी थी कि इसमें बच्चों को अपने विचारों को साझा करने में समय लग रहा था। कुछ बातें उन्होंने मेरे पूछे बग़ैर भी साझा कीं। जैसे–उसको अपने अब्बू की याद आती होगी, उसके अब्बू होते तो उसे गुड़िया भी लाकर देते, उसको घुमाने ले जाते, खिलौने लाते जैसे हमारे पापा लाते हैं, उसकी मम्मी को भी बहुत रोना आता होगा क्योंकि अब वो अकेली रह गई हैं, आदि। बच्चे साथ ही अपने कुछ उन दोस्तों का भी ज़िक्र कर रहे थे, जिनके पापा नहीं हैं। उन्होंने कहा कि जिन बच्चों के माँ-बाप नहीं होते वो हमेशा दु:खी ही रहते हैं। उनको अपने मामा या चाचा के घर रहना होता है, और उन्हें कोई वैसे नहीं रखता जैसे उनके अपने मम्मी-पापा रखते हैं।

"और जिनकी माँ होती है वो कैसे रहते हैं?" मैंने उनसे पूछा।

बच्चों ने कहा, "दीदी! माँ होती है तो भी ठीक रहता है।"

मैंने फिर पूछा, "अच्छा बताओ! क्या माँ का होना पापा से भी ज़्यादा ज़रूरी होता है?"

जवाब आया, "हाँ, क्योंकि माँ सब कुछ अच्छे से सँभाल लेती हैं।"

मैंने पूछा, "आपको ऐसा क्यों लगता है कि माँ सँभाल लेती हैं पापा नहीं?"

बच्चों ने कहा, "मम्मी घर-बाहर दोनों का काम कर लेती हैं, लेकिन पापा लोग तो बाहर का ही काम कर पाते हैं।

इस कहानी में लड़की की अम्मी ग़लीचा बनाने का काम करती हैं। मैंने हर समूह के बच्चों से यह प्रश्न पूछा, "उसकी मम्मी ग़लीचा क्यों बनाती होंगी?" यह प्रश्न पूछने का मक़सद यह जानना था कि बच्चे रोज़गार के प्रति कितने जागरूक हैं। सिर्फ़

चित्र 2 : कक्षा में मज़ेदारी से कहानी सुनते बच्चे और सुनातीं अध्यापिका

शहरी क्षेत्र के बच्चों ने जवाब दिया कि वह उनको बनाकर बेचती होंगी। ग्रामीण स्कूल के बच्चों के दिमाग़ में यह आया ही नहीं कि औरतें आजीविका कमाने के लिए ग़लीचा बनाने का काम भी करती हैं क्योंकि उन्होंने अपने आस-पास महिलाओं को ऐसे काम करते हुए नहीं देखा है।

मैंने अगला प्रश्न किया, "बताओ! मम्मी क्या-क्या काम करती हैं?"

जवाबों के ढेर लग गए। बच्चों ने काम गिनवाने शुरू किए जिनमें घरेलू और खेतों के काम भी शामिल थे। कुछ बच्चों ने बताया कि उनकी मम्मी सिलाई का भी काम करती हैं। इसी जवाब का मुझे इन्तज़ार था।

मैंने पूछा, "सिलाई ख़ुद के कपड़ों की या पैसे लेकर भी?"

बच्चों का जवाब आया, "पैसे लेकर भी।"

मैंने उनसे पूछा, "जिस काम से हम पैसे कमाते हैं उस काम को आप कैसे देखते हैं?"

वे एक दूसरे की तरफ़ ऐसे देखने लगे मानो उनको समझ नहीं आया। तब मैंने प्रश्न बदलकर पूछा, "सिलाई का जो काम है जिससे पैसे कमाए जा रहे हैं, वह वैसा ही काम है क्या जैसा पापा बाहर जाकर करते हैं और उससे पैसे मिलते हैं?"

बच्चों ने कहा, "हाँ दीदी! बस मम्मी घर रहकर करती हैं और पापा बाहर जाते हैं।"

> मैंने तब बच्चों को बताया कि ऐसा कोई भी काम जो हम पैसे कमाने के लिए करते हैं, उसे रोज़गार कहते हैं। नौकरी सिर्फ़ वही नहीं होती जिसमें कोई किसी ऑफ़िस में बैठकर काम करे। हर वो काम नौकरी है जिससे पैसे कमाए जाएँ, इसमें जगह मायने नहीं रखती।

अब ऐसे और काम बताओ जो आपकी मम्मी या महिलाएँ कर सकती हैं, और पैसे भी कमा सकती हैं। फिर से जवाबों की बरसात हुई। अचार, पापड़, नमकीन, सिलाई, पार्लर, आदि काम बच्चों ने बताए।

"बिन्दी को पैकेट में चिपकाना, उसके बण्डल बनाना, मोमबत्ती के पैकेट, चूड़ी बनाना, कंगन बनाना, जूते और जूतियों में सजावट, आदि काम भी होते हैं। क्या आपने इन कामों के बारे में कभी सुना या देखा है?" मैंने फिर पूछा।

"ये काम तो मशीन करती होंगी न दीदी!" एक बच्चे ने कहा। बातचीत हुई कि ऐसे बहुत सारे काम हैं जो आज भी मशीन से नहीं किए जा सकते। आप सभी को अपने परिवार के सदस्यों से बात करनी है, और इन कामों के बारे में पता करना है। अब हम कहानी के अगले हिस्से की तरफ़ बढ़े।

इस कहानी में एक जगह बच्ची अपनी गुड़िया से फुसफुसाती है, "मैं मज़ाक़ कर रही थी अम्मी से। मुझे कोई भाई-बहन नहीं है न, तो क्या तुम्हें भी ज़रूरत नहीं है?"

मैंने बच्चों से प्रश्न किया, "वह गुड़िया से ऐसी बातें क्यों कर रही है?" बच्चों का जवाब था, "उसके कोई भाई-बहन नहीं है

चित्र 3 : कहानी पर चर्चा करते बच्चे

इसीलिए वह गुड़िया से बात कर रही है। शायद उसको बुरा लगता है। वह अपनी गुड़िया के लिए एक और गुड़िया लाना चाहती है ताकि उसकी गुड़िया बिना बहन के दु:खी न हो।"

मैंने पूछा, "भाई-बहन इतने ज़रूरी हैं क्या?"

बच्चों ने कहा, "राखी बाँधने के लिए ज़रूरत होती है दीदी!"

मैंने प्रश्न किया, "दोस्त के बारे में आपका क्या कहना है?"

जवाब आया, "दोस्त सबसे ज़्यादा ज़रूरी होते हैं। बहन-भाई से भी ज़्यादा। बहन-भाई, पापा-मम्मी से चुगली कर फँसाते हैं, लेकिन दोस्त हमेशा साथ देते हैं और बचाते भी हैं। दोस्त, भाई और बहन के जैसे ही रहते हैं।"

मैंने पूछा, "जैसे का क्या मतलब है? बहन या भाई ही क्यों नहीं होते दोस्त?"

सभी बच्चे हँसकर बोले, "क्योंकि दोस्त अपने सगे भाई-बहन नहीं होते हैं न! हाँ, लेकिन दोस्त ज़्यादा अच्छे होते हैं दीदी!"

ग्रामीण और शहरी दोनों ही जगह के ज़्यादातर बच्चों ने दोस्तों को प्राथमिकता दी। यह सवाल मैंने इसीलिए किया था क्योंकि सभी बच्चे ख़ुद को कहानी की लड़की की जगह रखते हुए जवाब दे रहे थे।

सभी स्कूलों के बच्चों से इस प्रश्न पर भी बात हुई कि तलाक़ अच्छा होता है या बुरा? और क्यों? सभी बच्चों का एक ही जवाब था, बुरा होता है। बच्चों को बुरा लगता है और तक़लीफ़ होती है। लोग अच्छा नहीं मानते तलाक़ को। अलग नहीं होना चाहिए बस।

तब मैंने दो परिस्थितियाँ उनके सामने रखीं।

एक पति-पत्नी कुछ समय अच्छे से रहते हैं, फिर उनके बीच झगड़ा होने लगता है। झगड़ा होने के बहुत-से कारण हो सकते हैं। आप बताओगे, वे क्या हो सकते हैं?

बच्चों ने कहा, "दीदी! शराब पीता होगा, मार-पीट भी करता होगा, कमाता नहीं होगा, अपनी पत्नी की सुनता भी नहीं होगा, गाली-गलोच करता होगा।"

मैंने पूछा, "क्या आदमी की ही ग़लती होती होगी?"

बच्चों ने जवाब नहीं दिया।

मैंने पूछा, "मान लिया वह ऐसा करता है। क्या उसकी पत्नी को तलाक़ ले लेना चाहिए या मार-पिटाई खाते रहना चाहिए।"

लड़कियों का जवाब जल्दी आया, "ले लेना चाहिए।"

वहीं दूसरी परिस्थिति में, पत्नी शराब पीती है, लड़ाई करती है और उसको मारती है। इस पर बच्चे हँस दिए। अब उसको अपनी पत्नी के पास रहना चाहिए क्या?

जवाब आया, "नहीं, आदमी को तलाक़ ले लेना चाहिए दीदी!"

"पर तलाक़ तो बुरा होता है न! लोग क्या कहेंगे?" बच्चों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा और आत्मविश्वास के साथ बोले, "तलाक़ ले लेना चाहिए। लोगों का क्या है वह तो बोलते ही हैं।"

मैंने पूछा, "अब बताओ, तलाक़ अच्छा है या बुरा?"

बच्चों का कहना था कि तलाक़ न अच्छा है न बुरा, वो तो परिस्थिति पर निर्भर करता है।

कहानियाँ क्या करती हैं ?

कहानियाँ न सिर्फ़ परिवेश से जुड़े मुद्दों को खुलकर साझा करने के मौक़े देती हैं, बल्कि एक साझी समझ बनाने में भी मदद करती हैं। वह बच्चों को कहानी के किरदारों को महसूस करने का भी मौक़ा देती हैं। जैसे, इस कहानी में बच्चे, उस बच्ची की गुड़िया से हुई बातचीत से और उससे निकलते अकेलेपन के माध्यम से, अपने अकेलेपन को भी महसूस कर रहे थे। कहानी सुनकर भावनात्मक रूप से जुड़कर सहानुभूति की तरफ़ जाया जाता है, लेकिन उसके माध्यम से ख़ुद से जुड़कर, ख़ुद को किरदार की परिस्थिति में रखते हुए समानुभूति की तरफ़ बढ़ा जाता है। इससे सामाजिक मुद्दों को अच्छे से समझने में मदद मिलती है।

> **कहानियाँ न सिर्फ़ परिवेश से जुड़े मुद्दों को खुलकर साझा करने के मौक़े देती हैं, बल्कि एक साझी समझ बनाने में भी मदद करती हैं।**

इस कहानी से रोज़गार और तरह-तरह के काम के बारे में बातचीत हुई। ऐसे काम जो हाथों से किए जाते हैं, और ऐसे भी जो घर बैठकर करते हैं। यह भी कि, नौकरी की परिभाषा जो हमारे दिमाग़ में है, वह क्या है और ज़मीनी स्तर पर क्या-क्या नौकरियाँ हम देखते हैं? साथ ही, ऐसे रोज़गार हैं जिन्हें हमने अपने परिवेश में नहीं देखा है। यह वैसा ही है जैसे कुछ प्रमुख कामों को हम स्त्री-पुरुष में बाँटे हुए देखते हैं। कहानी पर चर्चा करते हुए ऐसी धारणाओं को हम तोड़ पाते हैं।

तलाक़ एक सामाजिक मुद्दा है जिसके बारे में बहुत कम बात होती है, और यदि होती भी है तो नकारात्मक। ऐसे कई सामाजिक मुद्दे हैं जिनके प्रति सकारात्मक सोच परे की बात है। उन पर बातचीत करने से अकसर हम कतराते हैं। लेकिन ऐसे मुद्दों की एक गहरी समझ हम कहानी के द्वारा बड़े अच्छे और रोचक ढंग से बना सकते हैं, बिना किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाए।

मंजू रेवरिया एकलव्य संस्था, नर्मदापुरम HITEC प्रोजेक्ट में पिछले 3 साल से कार्य कर रही हैं। प्राथमिक शिक्षा से जुड़े विभिन्न मुद्दों—शिक्षक शिक्षा, बाल साहित्य, प्राथमिक भाषा—में इनकी रुचि है। वे बच्चों के साथ काम करते हुए अनुभवों को लिखकर अपने साथियों के साथ साझा करने का भी शौक़ रखती हैं।

सम्पर्क : manju.rewaria@eklavya.in

सीखने की एक प्रभावी पद्धति है पीयर लर्निंग

शमीम भाटी

सीखने की प्रक्रिया केवल शिक्षक और विद्यार्थी के बीच तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह एक सामाजिक अनुभव है जिसमें विद्यार्थी आपस में संवाद करके, और एक दूसरे को देखकर सीखते हैं। वे नई अवधारणाओं को अधिक प्रभावी रूप से आत्मसात् कर पाते हैं। इस प्रक्रिया को पीयर लर्निंग या सहपाठी शिक्षण कहा जाता है। यह तरीक़ा न केवल सीखने की प्रक्रिया को रोचक बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच, विश्लेषण क्षमता और सीखने में आत्मनिर्भरता को भी बढ़ाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और *एनसीएफ़-एसई 2023* उपर्युक्त विचार को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का एक हिस्सा मानते हुए अनुशंसा करते है कि सीखने की प्रक्रिया को खोज-आधारित, समूह-आधारित और प्रयोगात्मक बनाना चाहिए जिससे विद्यार्थी केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित न रहें, बल्कि वास्तविक दुनिया से जुड़कर व्यावहारिक ज्ञान अर्जित करें।

कुछ शिक्षक एक शान्त कक्षा को आदर्श व अनुशासित कक्षा का पर्याय मानते हैं जहाँ विद्यार्थी एक दूसरे से कोई बात न करें, बल्कि चुपचाप अपना काम करते रहें। जबकि वायगोत्स्की का सामाजिक सीखने का सिद्धान्त बताता है कि सीखना एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें बातचीत, सहयोग और मार्गदर्शन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पीयर लर्निंग में बातचीत व सहयोग के ख़ूब मौक़े मिलते हैं।

लेख में कुछ उदाहरणों से यह समझने की कोशिश करेंगे कि पीयर लर्निंग विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास में किस तरह सहायक होती है, और उनके सीखने की प्रक्रिया के दौरान क्या कुछ सकारात्मक परिस्थितियाँ बनती हैं?

मोतियों की गिनती

मैंने कक्षा 1 से 3 के विद्यार्थियों को कुछ मोती दिए, और बारी-बारी से गिनने को कहा। सबसे पहले शुभम ने गिना और बताया कि 8 (उसने एक मोती को दो बार गिना था)। स्नेहा

चित्र 1: साथ मिलकर लिखते-पढ़ते, एक दूसरे से सीखते विद्यार्थी

बहुत छोटी थी लेकिन वह भी गिनना चाहती थी, उसे मौक़ा भी दिया गया। उसने सब मोतियों को उँगली से बार-बार छुआ और 3 बोला। गौरव ने गिनकर बताया कि कुल 9 मोती हैं। इसके बाद अंजना ने गिना और बताया कि 6 हैं। उसने मोतियों को बेतरतीब रखकर गिना था। इसके बाद जीविका ने एक-एक कर सब मोतियों को अलग करते हुए गिनकर बताया कि 7 मोती हैं। जीविका ने प्रत्येक मोती को गिना था और सही संख्या बताई थी।

> **विद्यार्थी जब अपने सहपाठियों से सीखते हैं, वे आत्मनिर्भर बनते हैं। वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना, और दूसरों के विचारों को समझना सीखते हैं।**

अब मैंने एक सवाल रखा कि सब विद्यार्थियों की गिनती अलग-अलग क्यों आ रही है। विद्यार्थी मुस्कुराने लगे। मैंने कहा, "चलो एक बार और गिनकर देख लेते हैं।" गिनने की बारी इस बार भी उसी क्रम में दी गई। लेकिन विद्यार्थियों ने अपने गिनने के तरीक़े में कुछ बदलाव किए। शुभम ने मोतियों को एक-एक कर उठाते हुए गिनना शुरू किया। जब 5 मोती हो गए, और उसे अपने हाथ में मोती सँभालना मुश्किल हो गया, उसने उन मोतियों को अलग रखकर बाक़ी के मोती गिने। इस बार उसने कहा कि 7 मोती हैं। स्नेहा ने भी गिनने के लिए मोतियों को उठाकर हाथ में रखना शुरू किया, और बताया कि 7 मोती हैं। अंजना ने अपना पुराना तरीक़ा ही अपनाया और बोली कि 12 मोती हैं।

हालाँकि दूसरी बार गिनने पर भी जीविका के अलावा दो ही विद्यार्थियों ने सही उत्तर दिया। उसमें भी स्नेहा ने केवल सुनकर 7 बोला था, लेकिन उसने अपने गिनने के तरीक़े में बदलाव किया था और गिने हुए मोतियों को अलग करने की कोशिश की। इसी तरह शुभम ने जीविका को गिनते देखकर गिने जा चुके मोतियों को अलग रखते हुए काम किया और सही उत्तर तक पहुँचा।

इस उदाहरण से देखने में आया कि जब विद्यार्थी एक दूसरे को गिनते हुए देख रहे थे तो वे अपनी पद्धति को परिष्कृत कर रहे थे। बिना किसी शिक्षक के हस्तक्षेप के वे अपनी त्रुटियों को पहचानकर सही विधि अपनाने लगे। इस उदाहरण में हमने देखा कि पीयर लर्निंग की एक ख़ास विशेषता यह है कि विद्यार्थी नक़ल करने से अधिक सोचने, विश्लेषण और सुधार करने की प्रवृत्ति विकसित करते हैं। बाल मनोविज्ञानी जीन पियाजे (Jean Piaget) ने अपने 'संज्ञानात्मक विकास के सिद्धान्त' में बताया कि विद्यार्थी 'समूह में अधिक प्रभावी रूप से सीखते हैं,' क्योंकि वे एक दूसरे से संवाद करते हुए अपनी ग़लतियों को सुधारते हैं। यह समझ पीयर लर्निंग के महत्त्व को वैज्ञानिक रूप से भी सिद्ध करती है।

वस्तुओं के लुढ़कने और खिसकने की समझ

एक अन्य अवलोकन में कक्षा 2 के दो विद्यार्थी कार्यपुस्तिका में दी गई एक सारणी पर काम कर रहे थे। उन्हें यह तय करना था कि कौन-सी वस्तु लुढ़कती है, कौन-सी खिसकती है, और कौन-सी दोनों कर सकती है। उनके बीच संवाद कुछ इस प्रकार हुआ :

ज़ोया : गिलास तो खिसकता है।

सुरजा : नहीं, मेरे हिसाब से हमें दोनों में टिक लगाना चाहिए।

ज़ोया : ऐसे कैसे दोनों में?

सुरजा : (पास रखी पानी की बोतल उठाकर) देखो, जब यह सीधी रखी होती है तो खिसकती है, लेकिन जब यह गिर जाती है तो लुढ़कने लगती है। (यहाँ सुरजा ने गिलास की जगह बोतल का उपयोग करते हुए अपनी बात रखी और ज़ोया ने कोई आपत्ति नहीं की।)

ज़ोया : (ख़ुश होकर) हाँ, सही है!

यह संवाद दर्शाता है कि विद्यार्थी पीयर लर्निंग के ज़रिए न केवल अपने सन्देहों को दूर कर रहे थे, बल्कि एक दूसरे की सोच को विस्तार भी दे रहे थे। शिक्षक की भूमिका यहाँ केवल एक प्रेक्षक की थी, जबकि वास्तविक शिक्षण स्वयं विद्यार्थियों के बीच हो रहा था।

मिलकर सीखना

कक्षा 4 की जयश्री को हिन्दी भाषा पढ़ने में दिक़्क़त थी। वह एक शान्त और चुप रहने वाली लड़की थी। जब उनकी शिक्षिका ने विद्यार्थियों को दो-दो के जोड़े में बैठकर किताब पढ़ने के लिए देनी शुरू की, कुछ ही दिनों में जयश्री की पठन क्षमता बेहतर होने लगी। कक्षा की बातचीत में भी उसने खुलकर भाग लेना शुरू कर दिया। जब जयश्री से पूछा गया कि रौनक के साथ तो तुमने बहुत जल्दी पढ़ना सीख लिया, उसने बताया कि रौनक के सामने ग़लत पढ़ने पर डर नहीं लगता। जो बात मन में आती है रौनक से पूछ लेती हूँ। अकसर देखने में आता है कि किसी बड़े के साथ बात करने में विद्यार्थियों को झिझक महसूस होती है। विद्यार्थी जब अपने सहपाठियों से सीखते हैं, वे आत्मनिर्भर बनते हैं। वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना, और दूसरों के विचारों को समझना सीखते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

स्कूल ट्रिप

कक्षा 5 के विद्यार्थियों को एक टास्क दिया गया। टास्क में उन्हें स्कूल ट्रिप की योजना बनानी थी। विद्यार्थियों ने जब बातचीत शुरू की तो सबसे पहले यात्रा के लिए साधन तय करने पर चर्चा हुई। अयान बोला, "एक ऑटो में 5 लोग बैठ सकते हैं तो पूरी कक्षा के लिए 6 ऑटो लगेंगे।"

रश्मि (तपाक से) बोली, "केवल हमारी कक्षा ही थोड़ी जाएगी! 8वीं तक के सभी 120 विद्यार्थी ट्रिप पर जा रहे हैं। इतने विद्यार्थियों के लिए तो ऑटो की रेल ही बन जाएगी।"

विक्रम (हँसते हुए) बोला, "फिर तो ट्रेन ही बुला लो।"

अयान ने टोकते हुए कहा, "ट्रेन स्कूल तक थोड़ी आती है।"

चित्र 2 : मिलकर अँगूठे से रंगों की आकृतियाँ बनाते विद्यार्थी

विशाल ने कहा, "तो फिर बस बुला लो।"

सभी को बस का आइडिया ठीक लगा। उन्होंने हिसाब लगाया कि एक बस में 45-50 विद्यार्थी बैठ जाएँगे तो 3 बस का इन्तज़ाम करना होगा।

इस पूरे कार्य में विद्यार्थी अपने अनुभव व समझ के आधार पर तर्क कर रहे थे, और समस्या समाधान के अपने तरीक़े सोचते हुए बता पा रहे थे। हर विद्यार्थी अलग सोचता है, और अलग तरीक़े से समस्याओं का समाधान करता है। जब विद्यार्थी आपस में सीखते हैं तब वे विभिन्न दृष्टिकोणों को समझते हैं, और अपने ज्ञान को समृद्ध करते हैं।

गिनते हुए जोड़ना

कक्षा 2 के विद्यार्थी जोड़ के सवाल हल कर रहे थे। विनय ने सभी सवालों को हल कर लिया। उसने देखा कि दिलीप अभी भी काम कर रहा है। दिलीप पहले जोड़ की दोनों संख्याओं जितनी लाइनें गिनकर खींचता, और फिर सभी लाइनों को गिनता। यह देखकर विनय ने उसे समझाया, "बार-बार गिनने की क्या ज़रूरत है? ये देख (दिलीप की बनाई एक संख्या की लाइनों की ओर इशारा करते हुए), यह तो तुझे पता ही है न कि कितनी लाइनें हैं, तो बस उसके आगे से गिन ले।" दिलीप ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, "अरे हाँ, ये तो मैंने सोचा ही नहीं!"

जब एक विद्यार्थी दूसरे की ग़लती को पहचानता है, या उसे नई जानकारी देता है तब वह अपने तर्क और सोचने की क्षमता को विकसित करता है। दूसरे विद्यार्थी भी साथी द्वारा बताए तरीक़े को जानकर ख़ुद के तरीक़े से उसकी तुलना कर उसमें बदलाव करते हैं। इस तरह सीखने की प्रक्रिया उन्हें आलोचनात्मक व विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करती है।

कहानी लिखना

कक्षा 3 के विद्यार्थियों को कुछ चित्र देकर कहानी लिखने का काम दिया गया।

नव्या ने कहा, "मुझे लिखना नहीं आता।"

साक्षी बोली, "लिख तो मैं लूँगी, पर लिखें क्या?"

नव्या ने सुझाया, "चित्र में एक आदमी और कुछ बन्दर हैं। इन्हीं की कहानी बनाओ।"

गौरव ने कहा, "हाँ, शायद ये आदमी बन्दरों को डाँट रहा है?"

नव्या बोली, "ये आदमी ज़रूर इस बग़ीचे का मालिक है। ऐसे ही शुरू करते हैं—एक आदमी का बड़ा-सा बग़ीचा था..."

गौरव बोला, "एक दिन एक बन्दर आया और मालिक से पूछा, 'क्या मैं यहाँ रह सकता हूँ?' "

तीनों विद्यार्थी दिए गए चित्रों को देखकर अपने अन्दाज़ लगाते और विचार करते कहानी को आगे बढ़ाने लगे। सभी की अपनी क्षमता थी। इसने समूह को एक बेहतर कहानी लिखने में मदद की। विद्यार्थी आपस में संवाद करते हैं, अपनी बात रखते हैं, और दूसरों की बातें समझते हैं। वे समझते हैं कि एक दूसरे की मदद से मुश्किल कार्य भी आसान हो सकते हैं। उनके लिए यह कौशल पूरे जीवन के लिए उपयोगी होता है।

पीयर लर्निंग को यदि केवल 'होशियार और कमज़ोर विद्यार्थियों का समूह बनाकर, होशियार को सिखाने वाला और कमज़ोर को सीखने वाला' मान लिया जाए तो यह पीयर लर्निंग की संकीर्ण समझ होगी। बजाय इसके, शिक्षक जब पीयर लर्निंग को विद्यार्थियों की सीख को बेहतर बनाने वाली एक आवश्यक और स्वाभाविक शिक्षण पद्धति के रूप में अपनाएँ तब न केवल विद्यार्थियों का सीखना समृद्ध होता है, बल्कि शिक्षक का कार्य भी अधिक सहज हो जाता है। ऐसी स्थिति में शिक्षक व्यक्तिगत रूप से अधिक विद्यार्थियों तक पहुँच बना पाते हैं।

पीयर लर्निंग पद्धति के बेहतर उपयोग के लिए कुछ सुझाव

- समूह बनाते समय विद्यार्थियों की उम्र, रुचि और क्षमताओं का ध्यान रखना ज़रूरी है ताकि समूह कार्य में सभी की भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।
- शिक्षक सरल व स्पष्ट शब्दों में समूह को सौंपे गए कार्य व इसमें विद्यार्थियों की भूमिका के बारे उन्हें बताएँ। इससे काम में स्पष्टता होगी, और सभी विद्यार्थियों की सक्रिय भूमिका बनी रहेगी।
- समूह कार्य में जो विद्यार्थी शामिल नहीं हो रहे हों, उनके कारण को चिह्नित कर समाधान निकालते हुए उन्हें शामिल करने का प्रयास करें।
- पीयर लर्निंग में एक ही तरह की रणनीति के स्थान पर ज़रूरत के अनुसार बदलाव करें।
- विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे समूह कार्य व बातचीत को आवश्यकता पड़ने पर सही दिशा देने में शिक्षक सहयोगी की भूमिका निभाएँ।
- विद्यार्थियों की उम्र और समझ के स्तर के अनुसार गतिविधियों में सरलता या जटिलता तय कर सकते हैं।
- विद्यार्थियों के टीमवर्क, सहयोग करने की भावना और प्रयासों की सराहना करें। इससे सीखने का वातावरण सकारात्मक बनता है।
- समय-समय पर विद्यार्थियों की भूमिकाएँ बदलें ताकि सभी को नेतृत्व करने और सीखने का अवसर मिले।

निष्कर्ष

पीयर लर्निंग केवल एक शिक्षण पद्धति नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के स्वाभाविक सीखने की प्रक्रिया का ही विस्तार है। जब विद्यार्थी आपस में विचार-विमर्श करते हैं तब वे न केवल अपने ज्ञान को बढ़ाते हैं, बल्कि 'सहयोग, धैर्य, और सहनशीलता' जैसे सामाजिक गुण भी विकसित करते हैं। *एनईपी 2020* एवं *एनसीएफ़-एसई 2023* भी इसे महत्त्व देते हुए कहते है कि सीखने की प्रक्रिया को अधिक संवादात्मक और व्यावहारिक बनाया जाना चाहिए।

ख़ासतौर से, कक्षा, शिक्षक और अभिभावक प्रयास करें कि विद्यार्थी खोज करने, प्रयोग करने, और एक दूसरे से सीखने के लिए प्रोत्साहित हों। इस तरह, सीखना न केवल रोचक बन सकता है, बल्कि अधिक प्रभावी और यादगार भी हो सकता है।

शमीम भाटी साल 2013 से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में गणित की सन्दर्भ व्यक्ति के रूप में कार्य कर रही हैं। उन्हें विद्यार्थियों के साथ समय गुज़ारना, उनसे बातचीत करना अच्छा लगता है। वर्तमान में वे जयपुर, राजस्थान में गणित विषय पर कार्य कर रही हैं।

सम्पर्क : shamim.bhati@azimpremjifoundation.org

परिवेश से जुड़ी सामग्रियों से भाषा शिक्षण

पोम्पा घोषाल

कक्षा और पाठ्यपुस्तकों से इतर परिवेश में न जाने कितनी ऐसी सामग्रियाँ है, कितने अवसर हैं जो बच्चों के भाषा शिक्षण की राह को आसान करते हैं। एक शिक्षक जब इस सामग्री और बच्चों के जीवन में मौजूद परिवेश से जुड़े अनुभवों को कक्षा की प्रक्रिया से जोड़ते हैं तब न सिर्फ़ सीखना सुनिश्चित होता है, बल्कि मज़ेदार भी होता है। यह लेख ऐसे ही अनुभवों के बारे में है।

बचपन में मेरे पापा मुझे साइकिल पर बैठाकर दूर-दूर तक घुमाने के लिए ले जाते थे। वे हमेशा मुझसे सड़क के किनारे लगे हुए साइनबोर्डों को ध्यान से पढ़ने के लिए कहते थे। उदाहरण के लिए, उस बोर्ड को पढ़ो; या फिर, देखकर बताओ, इस जगह का नाम क्या है; आदि। धीरे-धीरे, यह मेरी आदत बन गई। मैं रास्ते में आने वाले हर साइनबोर्ड, हर विज्ञापन, हर पोस्टर को पढ़ने लगी। इससे मेरा पढ़ना बेहतर होता गया, और पढ़ने को लेकर आत्मविश्वास भी बढ़ने लगा।

एक शिक्षिका होने के नाते, आज मैं यह मानती हूँ कि विद्यार्थियों का सीखना केवल पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उससे हटकर भी एक बड़ा संसार है। मैंने अपनी कक्षा में अपने बचपन के उन दिनों को लौटा लाने के बारे में सोचा। सच कहूँ, जब कक्षा 4 के सीखने के प्रतिफलों में बाल साहित्य, समाचार पत्र के मुख्य शीर्षक, बाल पत्रिकाओं के साथ ही होर्डिंग्स को समझकर पढ़ने के प्रतिफल को देखा तो मुझे ध्यान आया कि मैं इस पर कक्षा 3 में पहले भी कार्य कर चुकी हूँ। तब मैंने इसी दस्तावेज़ के 'पाठ्यचर्या सम्बन्धी अपेक्षाओं' में पुस्तकालय, रीडिंग कॉर्नर के साथ ही तरह-तरह की चीज़ों के रैपर से सामग्री ढूँढ़कर पढ़ने के विचार को समझा था। मैं जानती थी जो विद्यार्थी ठीक से पढ़ नहीं पा रहे हैं वो भी रोज़मर्रा की दिनचर्या में दिखाई देने वाले होर्डिंग्स, घर में उपयोग में आने वाली सामग्रियों के रैपर, और इनके अख़बारों में छपे विज्ञापनों से पढ़ने की तरफ़ बढ़ पाएँगे क्योंकि इन सन्दर्भित सामग्रियों में जो दृश्य हैं वो उन्हें अनुमान लगाकर पढ़ने को प्रोत्साहित करेंगे।

बातचीत से बनाया सीखने का माहौल

मन में योजना बन चुकी थी। मैं मुस्कान के साथ कक्षा में आई। मेरे हाथ में बिस्कुट का एक पैकेट था, तथा बैग में अख़बार, मैगज़ीन और काग़ज़ की ढेर सारी पर्चियाँ। मैंने कक्षा में पहुँचते ही नाटकीय ढंग से कहा (ठीक वैसे ही, जैसे एक मशहूर बिस्कुट के विज्ञापन में कहते हैं), "सबसे पहले इसे घुमाओ, फिर इसे चाटो, और आख़िर में इसे डुबाकर खाओ। है न यह बहुत ही स्वादिष्ट! बताओ तो, यह क्या है?"

नव्या तुरन्त जवाब देने के लिए तैयार थी। वह झट से बोली, "मैम, यह एक विज्ञापन है!"

मैंने बिस्कुट का पैकेट उठाया, उसे ऊपर करके दिखाया, और फिर कहा, "हाँ! यह एक विज्ञापन है। अब क्या कोई अन्दाज़ा लगा सकता है कि आज हम कक्षा में क्या करने वाले हैं?"

यह सुनते ही पूरी कक्षा उत्साह से गूँज उठी। नव्या ने तुरन्त अनुमान लगाया और कहा, "विज्ञापन गतिविधि!" उसकी आँखों में चमक थी।

चित्र 1: विज्ञापन के बारे में कुछ सोचते-लिखते विद्यार्थी

चारु बोली, "मैम, हमने तीसरी कक्षा में भी ऐसा ही कुछ किया था न?"

मैं मुस्कुराई और कहा, "बिल्कुल किया था। क्या तुम्हें याद है कि हमने उस गतिविधि में क्या किया था?"

> **मैंने विद्यार्थियों से कहा, "आज तुम्हारे लिए कुछ अख़बार, पत्रिकाएँ और पर्चे लाई हूँ। तुम सभी इन्हें आपस में बाँट लो। फिर तुम्हें अपनी पसन्द की किसी ऐसी चीज़ का विज्ञापन ढूँढ़ना है जो तुम्हारी समझ में आ जाए, और उसे काटकर अलग रख लेना है।"**

चारु ने उत्सुकता से सिर हिलाया और कहा, "हाँ, मुझे याद है! हम अपने घर से कुछ चीज़ें लेकर आए थे, फिर हमने उन्हें कक्षा में दिखाया और उनके बारे में पढ़ा था।"

मैंने ऐसा जताया जैसे मैं कुछ सोचने की कोशिश कर रही हूँ। मैंने कहा, "वह क्या था? मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा है।"

इस पर चारु ने मुझे याद दिलाते हुए विस्तार से बताया, "मैडम, आपको याद होगा कि हम सब नमक, चावल, चॉकलेट, नमकीन जैसी अलग-अलग तरह की चीज़ों के रैपर और चाय पत्ती, माचिस के डिब्बे, ख़ाली बोतलें जैसी कुछ वस्तुएँ अपने घरों से कक्षा में लेकर आए थे। फिर उन सभी चीज़ों पर लिखी जानकारी को ध्यान से पढ़ा, और एक दूसरे के साथ साझा किया था। मुझे याद है, मैं गोंद की एक चौकोर बोतल लाई थी, और उस पर छपा वज़न, मूल्य बनाने वाली कम्पनी का नाम तथा उसके इस्तेमाल करने के तरीक़े के बारे में पढ़ा था। और आपने मुझसे कहा था कि मैं उसे इस तरह पढ़ूँ, 'यह गोंद की एक बोतल है। इसका वज़न 25 ग्राम है।' इसके बाद मैंने गोंद इस्तेमाल करने के तरीक़ों के बारे में भी बताया था। और हाँ, मैंने यह सब लिखने की कोशिश भी की थी।"

मैंने गर्मजोशी से कहा, "बहुत बढ़िया, चारु! तुम्हारी याददाश्त बहुत अच्छी है।"

राजीव ने हाथ उठाया और बोला, "मैडम, हमने ऐसा ही कुछ पहली कक्षा में भी तो किया था!"

"ओह, सच में! क्या किया था?" मैंने उनसे पहली कक्षा की गतिविधि के बारे में बताने को कहा।

मीरा ने आगे कहा, "मैडम, हम सब अपने-अपने घरों से रैपर लेकर आए थे, और हमने उन्हें पढ़ा था। आपने तो उन सभी रैपरों का इस्तेमाल करके एक फ़ाइल भी बनाई थी।"

मैं मुस्कुराई और पूछा, "और उसके बाद क्या हुआ?"

"मुझे याद है, फिर आपने रैपरों में रखा कपड़े धोने का पाउडर, नमक, नारियल तेल, चावल, हल्दी, आदि जैसी चीज़ों के नाम हमसे पूछे थे, और उन्हें बोलते हुए बोर्ड पर लिखा था। फिर हम सबने इन चीज़ों के उपयोग के बारे में बहुत सारी बातें बताई थीं। कुछ बातें बहुत मज़ेदार थीं। सरोज ने बताया था कि सर्दी-खाँसी होने पर पिताजी नमक के पानी से गुड़गुड़ गरारे करवाते हैं।"

मीरा ने बात जारी रखते हुए कहा, "हम उस फ़ाइल को रोज़ पढ़ते थे। वह फ़ाइल बहुत ही सुन्दर और रंगीन थी। क्या हम उसे फिर से बना सकते हैं?"

मैंने सहमति जताते हुए कहा, "हाँ, बिल्कुल! हम उसे अब एक प्रोजेक्ट के तौर पर बना सकते हैं।"

भीम ने मशविरा दिया, "इस बार हम सब अपनी-अपनी फ़ाइलें ख़ुद ही बनाएँगे।"

मैंने हँसते हुए कहा, "हाँ-हाँ, क्यों नहीं! ज़रूर बनाएँगे।"

प्रोजेक्ट के काम की शुरुआत

मैंने विद्यार्थियों से कहा, "आज तुम्हारे लिए कुछ अख़बार, पत्रिकाएँ और पर्चे लाई हूँ। तुम सभी इन्हें आपस में बाँट लो। फिर तुम्हें अपनी पसन्द की किसी ऐसी चीज़ का विज्ञापन ढूँढ़ना है जो तुम्हारी समझ में आ जाए, और उसे काटकर अलग रख लेना है।"

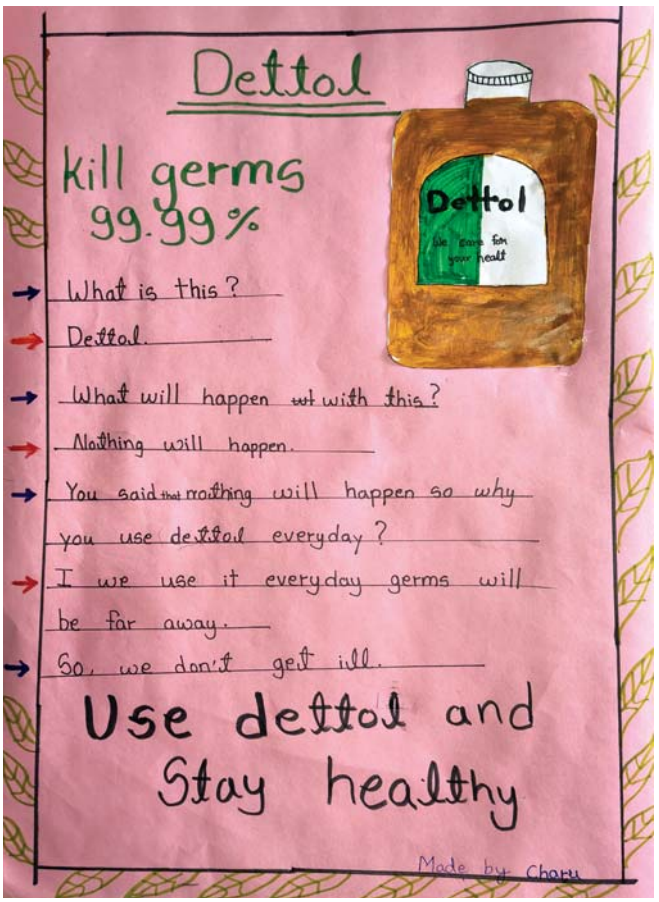

चित्र 2 : विद्यार्थियों द्वारा बनाया गया विज्ञापन

यह सुनते ही विद्यार्थी काम में जुट गए, और उत्सुकता से पन्ने पलटने लगे। नव्या ने चॉकलेट के एक रंगीन विज्ञापन को हवा में लहराते हुए कहा, "मैम, मुझे एक विज्ञापन मिल गया!"

> **विज्ञापन की गतिविधि में सभी विद्यार्थियों को आनन्द भी आ रहा था और उनका पढ़ना, सवाल करना, नए ढंग से अपनी बात को रखना बेहतर हो रहा था।**

मैंने कहा, "बहुत बढ़िया! अब इस विज्ञापन पर लिखी हर बात को ध्यान से पढ़ो। इसमें इस्तेमाल किए गए शब्दों, चित्रों और नारे (जो कि विज्ञापन का प्रचार वाक्य होता है) को ध्यान से देखो और समझो।"

कक्षा के अन्त तक, प्रत्येक विद्यार्थी के हाथ में अपना चुना हुआ एक विज्ञापन था। मैंने कहा, "अब तुम सब अपने घर जाओ, तथा टीवी पर कुछ और विज्ञापन देखो। रास्ते में जो भी होर्डिंग दिखे उसे पढ़ना। अगर कोई पैकेट वाली चीज़ इस्तेमाल करना तो उसका पैकेट रख लेना, कल हम सब इस बारे में बात करेंगे और मिलकर कक्षा में अपने विज्ञापन बनाएँगे।"

रणनीति को समझना

अगले दिन जब कक्षा शुरू हुई तो विद्यार्थियों में ऊर्जा दिखाई दे रही थी। माहौल बहुत उत्साहजनक था। स्वर्णिका ने बताया कि उसने कल शैम्पू, साबुन, टूथपेस्ट जैसी चीज़ों के ढेर सारे विज्ञापन देखे।

"बहुत बढ़िया!" फिर मैंने उनसे सवाल किया, "क्या तुम लोगों को यह पता है कि कम्पनियाँ कई बार किसी वस्तु का नाम थोड़ा-सा बदलकर, मिलते-जुलते नाम से बाज़ार में नक़ली सामान बेचती हैं?"

यह सुनकर विद्यार्थी एकदम से आश्चर्यचकित हो गए। चारु की आँखें हैरानी से फैल गईं, और उसने पूछा, "क्या यह सच है, मैडम?"

"हाँ," मैंने जवाब दिया, "और अकसर ऐसा होता है कि जो लोग ठीक से पढ़ना नहीं जानते हैं, वे इस तरह के नक़ली सामान को असली समझकर ख़रीद लेते हैं।"

राजीव उत्सुकतावश पूछने लगा, "लेकिन वे ऐसा करते कैसे हैं?"

मैंने समझाया, "वे नक़ली सामान को लगभग असली जैसा ही बनाते हैं। बस उस चीज़ के नाम की वर्तनी में थोड़ा-सा बदलाव कर देते हैं। इससे लोगों को लगता है कि यह असली चीज़ ही है। इसलिए हम जब भी कुछ पढ़ें तो हमें उसे बहुत ध्यान से पढ़ना चाहिए।"

मीरा ने कहा, "यह तो एक तरह का धोखा है!"

"हाँ, बिल्कुल! यह धोखा ही है," मैंने सहमति जताई, "इसलिए ठीक तरह से पढ़ना आना ज़रूरी है।"

विज्ञापन की जादूगरी

मैंने कहा, "अब विज्ञापनकर्ता बनने की बारी तुम्हारी है। कल तुमने जो विज्ञापन काटा था उसे लो, और उसमें मौजूद कुछ शब्दों को बदलकर उन्हें और भी रचनात्मक बनाओ ताकि वह एक नया रूप ले सके। इस तरह अपना ख़ुद का विज्ञापन बनाओ।" इसमें विद्यार्थियों की रचनात्मकता के लिए जगह बनाना, नया सोचना, और उसे लिखना शामिल था।

मैंने विद्यार्थियों को अपने विज्ञापन लिखने के लिए पुराने कैलेंडरों के ख़ाली पन्ने दिए। रंगीन पेंसिलें और क्रेयॉन, गोंद, कैंची, आदि भी साझा किए।

"मैम, क्या मैं एक जादुई शैम्पू का विज्ञापन बना सकती हूँ?" नव्या ने पूछा।

"क्यों नहीं, ज़रूर बनाओ!" मैंने हँसते हुए कहा।

जल्द ही, पूरी कक्षा एक साथ अपनी-अपनी बातें कहने लगी। राजीव ने अपना पोस्टर ऊँचा करके दिखाया, और कहने लगा, "मैम, यह देखिए!" उसके पोस्टर पर बड़े अक्षरों में लिखा था—दुबराज चावल, स्वाद और ख़ुशबू के क्या कहने!

"वाह! यह तो बहुत बढ़िया है।" मैंने कहा।

सुनीता ने कहा, "मैम, क्या मैं छत्तीसगढ़ी में बनाऊँ?"

"हाँ, बनाओ न! यह अच्छी बात है।" मैंने कहा।

"बाह! अब्ब्ड़ महमहात हे, आज दुबराज राँधे हस का वो?" उसने लिखा।

(वाह क्या ख़ुशबू है, घर में आज दुबराज बना है क्या?)

सभी विद्यार्थी बहुत ख़ुश हुए।

एक घण्टे तक चले रचनात्मक काम के बाद प्रस्तुतीकरण का समय आया। सभी विद्यार्थी एक-एक करके आगे आए, और हर एक के हाथ में उनका बनाया हुआ चार्ट था। मीरा ने बड़े ही नाटकीय अन्दाज़ में कहा, "मैम, मेरा विज्ञापन एक ऐसे टूथपेस्ट का है जो आपके दाँतों को मोती की तरह चमका देगा!"

कक्षा ने तालियाँ बजाईं, और मीरा, राजीव तथा सुनीता का उत्साहवर्धन किया। उनके आत्मविश्वास और ख़ुशी को देखकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा था।

मिथक बनाम वास्तविकता

विज्ञापनों पर चर्चा के दौरान एक सवाल उठा : "मैडम, क्या सभी विज्ञापन सच्चे होते हैं?"

मैं मुस्कुराई और कहा, "यह बहुत अच्छा सवाल है। तुम्हें क्या लगता है?"

"ऐसा नहीं है," नव्या ने सोच-समझकर कहा, "शैम्पू के विज्ञापन कहते हैं कि वे बालों को लम्बा करते हैं, लेकिन यह सच नहीं है।"

"बिल्कुल," मैंने कहा, "विज्ञापन अकसर कहानी का केवल एक पहलू दिखाते हैं। फ़ेयरनेस क्रीम एक हफ़्ते में गोरी त्वचा का वादा करती हैं, लेकिन क्या यह सच है?"

"नहीं!" पूरी कक्षा सहमति में चिल्लाई।

"मैडम, मेरी मम्मी कहती हैं कि फ़ेयरनेस क्रीम से कोई गोरा नहीं होता। यह सब मार्केटिंग का खेल है," चारु ने बताया।

"हाँ, बिल्कुल सही," मैंने कहा, "वैसे भी फ़ेयरनेस की बात ही गड़बड़ है। गोरा रंग अच्छा होता है और साँवला कम अच्छा, यह तो बात ही ग़लत है। साँवला रंग भी तो कितना सुन्दर होता है! क्यों होना है किसी को गोरा! अगर यह बात समझ लें तो ऐसी क्रीम की ज़रूरत ही नहीं।"

मुझे लगा, यह अवसर है विद्यार्थियों के ज़ेहन में गोरे-काले के भेद की दीवार को कमज़ोर करने का।

रोल प्ले

पाठ्यपुस्तकों के पाठों और उनके अभ्यास प्रश्नों में भी मुझे इस गतिविधि के लिंक मिलने लगे। हमें पाठ 4 'आहार' पढ़ना था। मैंने कहा, "आज हम पाठ पढ़ने से पहले एक गतिविधि करेंगे। पाठ में से कुछ चीज़ें चुनकर उनके विज्ञापन बनाएँगे। एक समूह विज्ञापन बनाएगा, दूसरा ग्राहक बनेगा और विज्ञापन के दावों पर सवाल उठाएगा।"

कक्षा एक मिनी बाज़ार में बदल गई।

पाठ में से जिन चीज़ों की लिस्ट बनी उनमें चावल, दाल, आलू, भिंडी, दूध, दही, केला, आम, अमरूद, आदि चीज़ें शामिल हुईं।

नव्या बड़े आत्मविश्वास के साथ खड़ी थी। उसके चार्ट पर एक बड़ी-सी गाजर का फ़ोटो चिपका था। "यह गाजर है बड़ी कमाल, इसे खाकर आप एक दिन में ही बन जाएँगे पहलवान", उसने ज़ोर से कहा। राजीव ग्राहक की भूमिका में था। उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, "क्या सच में? रातोंरात? क्या आप इसे साबित कर सकती हैं?"

नव्या खिलखिलाकर हँसी। "हाँ, यह जादुई गाजर है! आप खाकर तो देखिए।"

कक्षा हँसी से गूँज उठी, लेकिन बात साफ़ थी कि दावों पर सवाल उठाना ज़रूरी है। मैंने देखा, विज्ञापन की गतिविधि में सभी विद्यार्थियों को आनन्द भी आ रहा था और उनका पढ़ना, सवाल करना, नए ढंग से अपनी बात को रखना बेहतर हो रहा था। विद्यार्थी अब होर्डिंग और साइनबोर्ड पढ़ते हुए विद्यालय से घर जाने लगे थे जिनके बारे में अगले दिन कक्षा में बात करते। कुछ विद्यार्थी खाने-पीने वाली चीज़ों के रैपर सँभालने लगे थे ताकि उन्हें अपनी फ़ाइल में चिपकाकर उसके बारे में कुछ लिख सकें। मैं सोच रही थी, आने वाले किस पाठ से जोड़कर फिर से इस गतिविधि को किसी नए तरह से करा सकती हूँ!

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

पोम्पा घोषाल को अध्यापन करने का 28 वर्ष का अनुभव है। वे विगत 10 वर्षों से अँग्रेज़ी पढ़ा रही हैं, और अपने विद्यार्थियों में निरन्तर रचनात्मकता विकास के लिए कार्य करती रहती हैं। वर्तमान में वे बतौर शिक्षिका अज़ीम प्रेमजी स्कूल धमतरी, छत्तीसगढ़ में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : pompa.ghoshal@azimpremjifoundation.org

स्कूल पुस्तकालय को प्रभावी बनाने की तरकीबें

कमलेश चन्द्र जोशी

स्कूल में पुस्तकालय होना ज़रूरी है लेकिन उससे ज़्यादा ज़रूरी है उस पुस्तकालय का प्रभावी संचालन। जब शिक्षकों ने पुस्तकालय को विद्यार्थियों के लिखने-पढ़ने से जोड़ा तथा उसके सूत्र कक्षा शिक्षण से जोड़े और बतौर शिक्षक ख़ुद भी उन प्रक्रियाओं से जुड़े तो विद्यार्थियों के सीखने में सकारात्मक बदलाव दिखा।

किसी भी स्कूल पुस्तकालय को देखते समय स्वाभाविक रूप से मन में यह जिज्ञासा रहती है कि यह पुस्तकालय कितने प्रभावी ढंग से काम कर पा रहा है, और इसे कैसे बेहतर बनाया जा सकता है? इसे समझने के कई व्यवस्थागत व अकादमिक पहलू होते हैं। मसलन, पुस्तकालय में कितनी और किस तरह की किताबें हैं; कितने विद्यार्थी पुस्तकालय में नियमित रूप से आते हैं; वे किताबों का उपयोग कितना कर पा रहे हैं; पुस्तकालय संचालित करने वाले शिक्षकों का बाल पुस्तकों और उनके उपयोग के प्रति क्या नज़रिया बन रहा है; इत्यादि। इसी के साथ प्रभावी पुस्तकालय की पहचान वहाँ विद्यार्थियों के बीच की जाने गतिविधियों, किताबों की प्रस्तुति, रखरखाव, स्थान की उपलब्धता, आदि से भी होती है। साथ ही, यह भी कि शिक्षक पुस्तकालय के लिए कितना समय निकाल पाते हैं। इन सभी पहलुओं पर चर्चा ज़रूरी है।

कुछ सरकारी स्कूलों के शिक्षक अपने स्कूल पुस्तकालय को बेहतर और प्रभावी बनाने के कार्य में जुटे हैं। ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड के शिक्षकों के साथ हुई बातचीत के दौरान उन्होंने अपने पुस्तकालय के बेहतर संचालन, और उसे प्रभावी बनाने के सन्दर्भ में बिन्दुवार कई महत्त्वपूर्ण विचार साझा किए।

शिक्षकों की स्वयं की तैयारी

पुस्तकालय को प्रभावी बनाने के काम में जुटे शिक्षकों ने बताया कि वे अपनी तैयारी के लिए पुस्तकालय विकास से सम्बन्धित सत्रों में भाग लेते हैं, इससे जुड़े विषयों को गहराई से समझने के लिए इन पर आपस में बातचीत करते हैं, और बाल साहित्य व पुस्तकालय के जानकार व्यक्तियों से संवाद करते हैं। इसके अलावा, वे ख़ुद से अच्छा बाल साहित्य और बच्चों की स्तरीय पत्रिकाएँ निरन्तर पढ़ते रहते हैं। इनमें *बस की सैर, नन्हा करमकल्ला, नन्हे मुन्ने गीत, बरास्ता तरबूज़* तथा *ननिहाल में गुज़रे दिन* जैसी किताबें और *चकमक, प्लूटो* तथा *साइकिल* जैसी बाल पत्रिकाएँ शामिल हैं। शिक्षकों के बीच इन पढ़ी गई किताबों की विषयवस्तु, घटनाक्रम, पात्रों, चित्रांकन और इनसे बनने वाले नज़रियों पर गहन बातचीत होती है। शिक्षक यह भी चर्चा करते हैं कि किस कक्षा स्तर के विद्यार्थियों के लिए कैसी व कौन-सी किताबें उपयुक्त होंगी। कुछ शिक्षकों के मन में यह सवाल आज भी कौंधते हैं कि विद्यार्थी पढ़ना कैसे सीखते हैं। उनमें पढ़ने की ललक एवं स्वाध्याय की आदतों का विकास कैसे करें? हम क्या करें कि विद्यार्थी अच्छे पाठक बनें? इस तैयारी के लिए उन्होंने *पढ़ने की समझ, पढ़ने की दहलीज़ पर, बच्चे*

चित्र 1: अपनी-अपनी पसन्द की किताबें पढ़ते, आनन्दित होते विद्यार्थी

की भाषा और अध्यापक और *पढ़ना-लिखना सीखने में किताबों का महत्त्व* जैसी शिक्षक उपयोगी किताबों को पढ़कर सामूहिक विमर्श किया है। उन्होंने 'क्या-क्या हो एक अच्छी किताब में', 'कहानी कहाँ खो गई', और 'किताब पढ़ने की आदत' जैसे कई लेखों को पढ़कर इस दिशा में गहरी समझ बनाने के प्रयास किए हैं। इन सारी तैयारियों से पुस्तकालय के प्रभावी संचालन में काफ़ी मदद मिली, और विद्यार्थियों के साथ कार्य करते हुए एक प्रभावी पुस्तकालय चलाने की दृष्टि भी मिली।

शिक्षकों ने बताया कि इस तरह शिक्षकों के बीच बाल साहित्य को पढ़ने और समझने के लिए माहौल बना है। एक शिक्षक ने बताया कि वे एकलव्य संस्था के 'लाइब्रेरी से दोस्ती' कोर्स से भी जुड़े, और इसके परिणामस्वरूप वे अपने स्कूल में और बेहतर काम कर पा रहे हैं, तथा अपने साथी शिक्षकों को भी बाल साहित्य के उपयोग में मदद कर पा रहे हैं। शिक्षकों ने यह भी बताया कि वे स्कूल व्यवस्था से जुड़े अन्य कार्यों के साथ ही पुस्तकालय को संचालित करने की ज़िम्मेदारी भी निभाते हैं।

चित्र 2 : पाठ्यपुस्तक से कविता, कहानी पढ़कर सुनाते विद्यार्थी

पढ़ने की घण्टी

कई शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने अपने स्कूल में एक ऐसा समय निर्धारित कर रखा है जिसमें विद्यार्थियों को पुस्तकालय में आकर पढ़ना है। वे वहाँ आकर अपनी पसन्द की किताब चुन सकते हैं, और बैठकर पढ़ सकते हैं। पढ़ने की घण्टी के दौरान, शिक्षक विद्यार्थियों के पढ़ने का अवलोकन करते रहते हैं और कभी-कभार उनसे बातचीत भी करते हैं। कुछ शिक्षक विद्यार्थियों के साथ बैठकर किताबें भी पढ़ते हैं। (इस पर एक विस्तृत लेख *पाठशाला भीतर और बाहर* के अंक 16, जून 2023 में प्रकाशित हुआ है।)

पुस्तकालय के लिए किताबों का चयन

शिक्षकों ने बताया कि पुस्तकालय को आकर्षक बनाने के लिए नई-नई किताबों की ज़रूरत पड़ती है। वे विद्यार्थी जो ज़्यादातर किताबों को एक से अधिक बार पढ़ चुके होते हैं, उनमें उनकी रुचि कुछ कम हो जाती है, और उन्हें नई किताबें चाहिए ही होती हैं। किन्तु स्कूल पुस्तकालय में किताबों के लिए सीमित बजट आता है। कई बार विभाग द्वारा उपलब्ध कराई गई किताबें प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के मतलब की नहीं होती हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षक अपनी पहल और अपने स्रोतों से भी किताबें मँगवाते हैं। इन किताबों में कहानी व कविताओं के अलावा जानकारी प्रदान करने वाली, अपने परिवेश को समझने वाली किताबें, यात्रा वृत्तान्त, डायरी, रचनात्मक गद्य, माथापच्ची, पहेलियों की किताबें, शब्दकोश, आदि भी शिक्षकों द्वारा मँगवाए गए हैं। इनके साथ, छोटे विद्यार्थियों के लिए बिग बुक, चित्रात्मक किताबें, कविता पोस्टर, आदि मँगवाने का भी ध्यान रखा गया है। कुछ शिक्षकों ने हिन्दी के अलावा अँग्रेज़ी की किताबें भी मँगवाई हैं।

आपसी बातचीत में शिक्षक बाल साहित्य की पराग ऑनर लिस्ट से भी परिचित हुए हैं। वे उस सूची की किताबें भी मँगवा लेते हैं। इसमें सबसे ख़ास अवलोकन यह है कि जिन शिक्षकों को पुस्तकालय से मिली ऊर्जा का एहसास हो जाता है, वे समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए किताबें मँगवाते रहते हैं और पुस्तकालय को समृद्ध करते हैं। कुछ शिक्षक किताबों को ख़रीदने के लिए विश्व पुस्तक मेले, आदि का भ्रमण भी करते हैं, और अपने स्कूल के लिए तो किताबें ख़रीदते ही हैं, अपने साथियों के लिए भी किताबें ख़रीदकर लाते हैं।

किताबों को पुस्तकालय में व्यवस्थित करना

शिक्षकों ने बताया कि पुस्तकालय में किताबें कैसे व्यवस्थित व प्रस्तुत की गई हैं, इसका किताबों तक विद्यार्थियों की पहुँच पर असर होता है। किताबें विद्यार्थियों के सामने हों, उनको दिखें, व उनकी पहुँच में हों तब वे ज़्यादा आसानी से चुन सकते हैं। इसके लिए शिक्षक परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग तरीक़े इस्तेमाल करते हैं। कई शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने विद्यार्थियों को यह भी सिखा दिया है कि किताबें वापस रखना ज़रूरी है, और वह भी उनके सही स्थान पर। विद्यार्थी ऐसा करने भी लगे हैं। कुछ जगह पर विद्यार्थियों ने पुस्तकालय में व्यवस्था जमाने में और पूरे संचालन में भी मुख्य भूमिकाएँ ले ली हैं।

विद्यार्थियों का किताबों से जुड़ाव कैसे बना ?

इस सन्दर्भ में भी शिक्षकों ने कई अनुभव साझा किए। उनका कहना था कि विद्यार्थियों का किताबों से जुड़ाव बने, इसके लिए ज़रूरी है कि किताबें सिर्फ़ पुस्तकालय तक ही सीमित न रहें। इसलिए पुस्तकालय के साथ-साथ कक्षा में भी वे किताबों के साथ कार्य करते हैं। शिक्षकों के साथ बातचीत, और किए गए स्कूल अवलोकन में विद्यार्थियों के किताब के साथ जुड़ाव बनाने के बारे में आए कुछ पहलू आगे प्रस्तुत हैं।

कक्षा में किताबों का उपयोग

शिक्षकों से बातचीत के दौरान यह पता चला कि वे पाठ्यपुस्तकों के पाठों की योजना के साथ पुस्तकालय की किताबों का जुड़ाव बनाकर भी उनका उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा

5 की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* के पाठ 'नन्हा फ़नकार' में राजा अकबर की विनम्रता और उसके आम लोगों से सीखने की बात है तो उस पाठ को पढ़ते हुए *शहंशाह अकबर को कौन सिखाएगा* किताब को पढ़ा, और उसे भी जोड़ा। इसी तरह, कक्षा 2 की पाठ्यपुस्तक में शामिल 'चींटी' कविता के साथ एकलव्य द्वारा प्रकाशित किताब *चींटा* से जोड़कर बातचीत की गई। यह भी देखने को मिला कि उनकी बातचीत में अकसर पाठ्यपुस्तकों के पाठ की चर्चाओं के साथ बाल साहित्य का भी ज़िक्र आ ही जाता था। इसका कारण उनका यह सोचा-समझा प्रयास था कि विद्यार्थियों का बाल साहित्य से जुड़ाव बने, और पाठों को वे थोड़ा व्यापक परिप्रेक्ष्य में देख पाएँ। इससे यह समझ में आ रहा था कि जो किताबें पहले केवल लेन-देन तक सीमित थीं, अब विद्यार्थियों के बीच पढ़ने के मज़े लेने के साथ एक शिक्षण योजना के तहत उपयोग के लिए भी तैयार थीं।

विद्यार्थियों का नियमित अवलोकन व बातचीत

स्कूलों में शिक्षकों ने विद्यार्थियों के साथ किताबों पर ग़ौर करना शुरू किया कि कौन-से विद्यार्थी किताबें ले जा रहे हैं, कौन नहीं। जो किताबें ले जा रहे हैं, वे उन्हें पढ़ रहे हैं या नहीं, यह जानने के लिए शिक्षक उनसे कभी-कभी किताब के सन्दर्भ में बातचीत भी करते। इस प्रक्रिया से शिक्षक यह भी समझ पाए कि किस विद्यार्थी को किस तरह की किताबें पसन्द आती हैं। और तब वह उनको सुझाव भी दे पाते थे कि उन्हें और कौन-सी किताबें पसन्द आ सकती हैं।

किताबों पर आधारित गतिविधियाँ

विद्यार्थियों की किताबों में दिलचस्पी बढ़े, इसके लिए शिक्षकों ने उनके साथ किताबों पर आधारित गतिविधियाँ भी शुरू कीं। ये गतिविधियाँ थीं—शिक्षक द्वारा किताबों को पढ़कर सुनाना; किसी किताब से कहानी चुनकर उस पर विद्यार्थियों से रोल प्ले करवाना; किसी कहानी को कठपुतली का इस्तेमाल कर सुनाना; जो विद्यार्थी कहानी पढ़कर सुना सकते हैं, उनसे अपनी पसन्दीदा किताब की कहानी सुनाने के लिए कहना; आदि।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह देखने को मिली कि शिक्षकों ने किताबों पर चर्चा के लिए योजना बनानी शुरू की, और उसके अनुसार विद्यार्थियों से बातचीत की शुरुआत की। इसमें *छुटकी उल्ली, मितवा, ख़ुश-ख़ुश कछुआ, नीलोफ़र की मुस्कान, पंछी प्यारा, बुढ़िया की रोटी, महागिरी, क्यूँ-क्यूँ छोरी,* आदि किताबों की योजनाएँ देखने को मिलीं। विद्यार्थियों के लिए किताबों के एक्सपोज़र में यह भी देखने को मिला कि कविता-कहानियों के अलावा शिक्षकों ने माथापच्ची की किताबों या गतिविधियों की किताबों को भी विद्यार्थियों को पढ़ने का मौक़ा दिया।

विद्यार्थियों के पढ़े व लिखे को जगह देना

जैसा कि ऊपर ज़िक्र आया है, विद्यार्थियों ने जो पढ़ा है उसे अभिव्यक्त करने के मौखिक मौक़े शिक्षकों ने उन्हें दिए। इसी के साथ शिक्षकों ने विद्यार्थियों को नई कहानियाँ और कविताएँ बनाने के मौक़े दिए, और उन्हें अपने अनुभवों को लिखने के लिए प्रोत्साहित भी किया। शिक्षकों ने विद्यार्थियों के इन अनुभवों को कुछ बाल पत्रिकाओं को भेजा। उनमें से कुछ विद्यार्थियों के अनुभव प्रकाशित भी हुए। इस कोशिश ने भी उन्हें आगे पढ़ने के लिए प्रेरित किया। कुछ बड़े विद्यार्थियों ने किताबों पर समीक्षाएँ लिखने की भी शुरुआत की।

> **शिक्षकों ने यह पाया कि किताबों के साथ बहुत-से मुद्दों पर बात करने में आसानी रहती है। इनमें जातीय, लैंगिक, भाषाई, क्षेत्रीय भेदभाव से जुड़े मुद्दे शामिल हैं जिन पर हम शायद सीधे बात नहीं कर सकते।**

सारांश

शिक्षकों के साथ बातचीत व स्कूल पुस्तकालय के अवलोकन में यह समझ आया कि पुस्तकालयों का प्रभावी संचालन करने के दौरान शिक्षक यह समझ पाए कि किताबों को पढ़ने का प्रभाव विद्यार्थियों के भाषा विकास पर ही नहीं, बल्कि उनके पूरे व्यक्तित्व पर पड़ता है। उनकी अभिव्यक्ति का विकास तो होता ही है, उनका आत्मविश्वास भी बढ़ता है, और विभिन्न चीज़ों को समझने की उनकी क्षमता का विकास होता है। शिक्षकों ने महसूस किया कि जो विद्यार्थी किताबें पढ़ते हैं उसका प्रभाव अन्य विषयों पर भी पड़ता है, और वे दूसरे विषयों में भी अच्छा प्रदर्शन करते हैं। इसके अलावा, शिक्षकों ने यह भी पाया कि किताबों के साथ बहुत-से मुद्दों पर बात करने में आसानी रहती है। इनमें जातीय, लैंगिक, भाषाई, क्षेत्रीय भेदभाव से जुड़े मुद्दे शामिल हैं जिन पर हम शायद सीधे बात नहीं कर सकते, लेकिन किताबों के माध्यम से बातचीत हो सकती है। उन्हें इस बात का भी एहसास हुआ कि किताबों पर समझ बनाने के लिए अच्छी योजना बनाने की ज़रूरत होगी तभी वे विद्यार्थियों के बीच अच्छी बातचीत करवा सकते हैं। इसके अलावा, यह सब ठीक से करने के लिए उन्हें ख़ुद के लिए अच्छे बाल साहित्य को पढ़ने, और उस पर नियमित रूप से अपनी समझ बनाने की ज़रूरत महसूस होती है।

कमलेश चन्द्र जोशी 30 वर्षों से प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के साथ भाषा शिक्षण, स्कूल पुस्तकालय, शिक्षक प्रशिक्षण, आदि को लेकर गहराई से काम किया है। वे विगत 16 सालों तक अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में कार्यरत रहे हैं।

सम्पर्क : kamlesh.joshee@gmail.com

शिक्षिका के जज़्बे ने आँगनवाड़ी को बनाया सीखने का केन्द्र

अनन्या डी

एक आँगनवाड़ी, जहाँ शिक्षिका के प्रयासों से न सिर्फ़ नामांकन 10 से बढ़कर 45 तक पहुँचा, बल्कि बच्चों का सीखना भी काफ़ी बेहतर हुआ। शिक्षिका ने यह किस तरह किया; कैसे इस प्रक्रिया में समुदाय को शामिल किया; कैसे बच्चों की संख्या बढ़ी और उनका सीखने में मन लगा; इन्हीं जिज्ञासाओं के जवाब तलाशता है यह आलेख।

जब शंकरम्मा साल 2010 में एक आँगनवाड़ी शिक्षिका के रूप में एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) विभाग में शामिल हुईं, उनके केन्द्र में बमुश्किल 10 से 15 बच्चे ही आते थे। इनमें ज़्यादातर केवल भोजन के लिए ही आते थे। अभिभावकों को शाला-पूर्व शिक्षा की बहुत कम जानकारी थी। केन्द्र में किसी ने सीखने की पहले से नियोजित गतिविधियों के बारे में नहीं सुना था।

शंकरम्मा को केन्द्र में नियमित रूप से उपस्थित रहने, और ईमानदारी के लिए जाना जाता था। उनका सपना था कि बच्चों को मध्याह्न भोजन के अतिरिक्त भी कुछ मिलना चाहिए। उन्हें यह अवसर 2019-20 में तब मिला, जब अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन ने कलबुर्गी ग्रामीण ब्लॉक में अपनी ईसीई सहभागिता शुरू की। मासिक कार्यशालाओं, ब्लॉक स्तरीय बैठकों, ईसीसीई दिवसों, बाल मेलों और शिक्षक मेलों के माध्यम से शंकरम्मा ने प्रारम्भिक वर्षों में थीम-आधारित अधिगम के महत्त्व के बारे में सीखा। और, आँगनवाड़ी में चिलिपिली पाठ्यक्रम[1] के अनुसार कार्यक्रम की शुरुआत करके बदलाव लाने का दृढ़ संकल्प लिया।

और फिर केन्द्र जीवन्त हो उठा

छोटे-छोटे क़दमों से बदलाव की शुरुआत हुई। शंकरम्मा ने अपना केन्द्र सुबह 9:30 बजे खोलना शुरू किया। वे दोपहर 1:30 बजे तक बच्चों को मुक्त खेल, गीत, कहानी सुनाना, संज्ञानात्मक, रचनात्मक और थीम-आधारित गतिविधियों और लर्निंग कॉर्नर की सामग्री से जोड़कर व्यस्त रखतीं।

> **केन्द्र के कोनों को समृद्ध और आकर्षक बनाने के लिए शंकरम्मा ने स्थानीय समुदाय और दुकानों से सामग्री जुटाई। माता-पिता को यह बात समझ में आने लगी कि साधारण घरेलू वस्तुएँ भी सीखने के लिए उपयोगी बन सकती हैं।**

चित्र 1: रंगों में ब्लॉक्स डुबोकर अपनी मर्ज़ी की आकृतियाँ बनाते बच्चे

केन्द्र में संसाधनों की कमी एक चुनौती थी। एक कार्यशाला में शंकरम्मा ने विभिन्न शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग के बारे में जानकारी प्राप्त की थी। उससे प्रेरित होकर उन्होंने ख़ुद की सामग्री बनानी शुरू कर दी। अपने परिवार की मदद से उन्होंने प्रत्येक विद्यार्थी के लिए टीएलएम तैयार किए ताकि हर बच्चे के पास सक्रियता से काम करने के लिए कुछ-न-कुछ हो। इससे कक्षा का माहौल बदल गया। जो बच्चे पहले उदासीन रहा करते थे, अब हर गतिविधि में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे।

पहले शंकरम्मा ज़ोर से कहानियाँ पढ़कर सुनाती थीं। बच्चे न तो ध्यान से सुनते थे न ही ज़्यादा याद रखते थे। उन्होंने अपना तरीक़ा बदला। ख़ुद से बनाए कहानी कार्ड और कठपुतलियों का इस्तेमाल करके उन्होंने कहानी सुनाने के चार-पाँच अलग-अलग तरीक़े खोजे। मसलन, मौखिक वर्णन, ज़ोर से पढ़ना, चित्र क्रम कहानियाँ, एकल अभिनय, रोल प्ले, आदि। इसका नतीजा काफ़ी प्रभावी रहा। जो बच्चे कभी चुपचाप बैठे रहते थे, अब उत्सुकता से पात्रों का अभिनय करते, और कहानियों को अपने शब्दों में सुनाने लगे।

शंकरम्मा रचनात्मक गतिविधियों में भी विविधता लेकर आईं। मसलन, रंग भरना, चित्रों पर मोती लगाना, काग़ज़ की छोटी-छोटी गोलियाँ चिपकाना, आदि। संज्ञानात्मक विकास के लिए, उन्होंने मिलान करने, पहेलियाँ हल करने और ग़ायब चित्रों की पहचान करने जैसी थीम-आधारित साप्ताहिक गतिविधियाँ शुरू कीं। ये अभ्यास आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल का आधार बनते हैं। अब तो खेल के समय ने भी एक नया रूप ले लिया। उन्होंने चिलिपिली थीम वाले नाटक, पारम्परिक खेल और लर्निंग कॉर्नर के ज़रिए मुक्त खेल शुरू किए। अभिनय करने का कॉर्नर (प्रिटेंड प्ले कॉर्नर) सबको बहुत अच्छा लगने लगा। बच्चे, माता-पिता, डॉक्टर या रसोइए की भूमिकाएँ निभाते, रोटी बनाने जैसी वास्तविक गतिविधियों की नक़ल करते, और सारा केन्द्र कल्पना और हँसी से गूँज उठता।

केन्द्र के कोनों को समृद्ध और आकर्षक बनाने के लिए शंकरम्मा ने स्थानीय समुदाय और दुकानों से सामग्री जुटाई। माता-पिता को यह बात समझ में आने लगी कि साधारण घरेलू वस्तुएँ भी सीखने के लिए उपयोगी बन सकती हैं।

जब शंकरम्मा को एहसास हुआ कि उनकी आँगनवाड़ी में कोई रनिंग ब्लैकबोर्ड नहीं है, उन्होंने किसी बाहरी मदद का इन्तज़ार नहीं किया, बल्कि दीवार के एक हिस्से को काले रंग से रँगकर लिखने का स्थान बना दिया। बच्चे उस पर खुलकर लिखते, और चित्र बनाते थे। यह सरल नवाचार आँख-हाथ के समन्वय और लेखन व चित्रांकन कौशल विकास का एक शक्तिशाली साधन बन गया।

उन्होंने आईसीडीएस कार्यक्रम के अन्य लाभार्थियों (जैसे– गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं, 0-3 साल के बच्चों, किशोरियों, अभिभावकों, समुदाय और अन्य सेवाओं के लाभार्थियों) को दोपहर 2 बजे के बाद ही केन्द्र में आने के लिए कहा ताकि सुबह का समय शाला-पूर्व गतिविधियों के

चित्र 2 : मुखौटे वाली गतिविधि में प्रतिभाग करते बच्चे

लिए पूरी तरह से सुरक्षित रहे। माता-पिता हैरान थे। जो बच्चे कभी इधर-उधर घूमते रहते थे, वे अब लगातार चार घण्टे आँगनवाड़ी में ही रहते थे। वे गाते, नाचते, सवाल पूछते, और कहानियाँ सुनाते थे।

ऐसे बढ़ा नामांकन

शंकरम्मा ने एक कमी और देखी–बच्चों का कम नामांकन। उनके प्रयासों के बावजूद गाँव के कई बच्चे अभी भी आँगनवाड़ी नहीं आ रहे थे। इसलिए उन्होंने एक और साहसिक क़दम उठाया–मासिक 'ईसीसीई दिवस'[2] का आयोजन। बच्चों ने बाल-गीत, कहानियाँ, फुर्ती से की जाने वाली गतिविधियाँ आदि जो कुछ सीखा था, उसे अभिभावकों और समुदाय के सामने प्रदर्शित किया। शंकरम्मा ने बच्चों की प्रगति उनके अभिभावकों के साथ भी साझा की। धीरे-धीरे जागरूकता बढ़ने लगी।

एक वर्ष में नामांकन 10 से बढ़कर 45 बच्चों तक पहुँच गया। उन्होंने 2-3 वर्षों में 20 से अधिक 'ईसीसीई दिवस' आयोजित किए। अपने गाँव में एक बाल मेला[3] भी आयोजित किया जिसमें 200 गाँव वाले जुटे। यह बाल मेला केन्द्र द्वारा नए तरीक़ों से किए गए प्रयासों को उजागर करने का एक मंच बन गया। बच्चों ने आत्मविश्वास के साथ गीत जैसी बहुत-सी संज्ञानात्मक गतिविधियाँ प्रस्तुत कीं और अपनी कलाकृतियाँ दिखाईं। इससे अन्य शिक्षिकाओं को प्रेरणा मिली, और अभिभावकों ने भी इसे बहुत सराहा।

> **नामांकन के लिए बच्चों ने बाल-गीत, कहानियाँ, फुर्ती से की जाने वाली गतिविधियाँ आदि जो कुछ सीखा था, उसे अभिभावकों और समुदाय के सामने प्रदर्शित किया। शंकरम्मा ने बच्चों की प्रगति उनके अभिभावकों के साथ भी साझा की। धीरे-धीरे जागरूकता बढ़ने लगी।**

यह सब देखकर पंचायत के सदस्यों और समुदाय ने आँगनवाड़ी के लिए रंग, खेल सामग्री, यहाँ तक कि छोटी-मोटी धनराशि भी दान में देनी शुरू कर दी। अभिभावक एक व्हाट्सऐप ग्रुप में शामिल हो गए जिस पर शंकरम्मा बच्चों की प्रगति के बारे में उन्हें रोज़ सूचित करती रहती थीं।

शंकरम्मा का केन्द्र अब सिर्फ़ एक आँगनवाड़ी केन्द्र नहीं था। यह सीखने का एक जीवन्त केन्द्र बन गया था!

बच्चों को अपनी आवाज़ मिल गई

बच्चे बहुत सारे गीत एक्शन करते हुए गा सकते थे, कहानियाँ सुना सकते थे, और अपनी भावनाएँ खुलकर व्यक्त कर सकते थे। अब उन्हें किसी सहायक की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। वे सुबह 9:00 बजे तक उत्सुकता से केन्द्र पर पहुँच जाते थे।

इसका असर तब भी दिखा जब बच्चे प्राथमिक विद्यालय में गए। शिक्षकों ने बताया कि शंकरम्मा के विद्यार्थी ज़्यादा सक्रिय थे। वे सवाल पूछते थे और पाठ जल्दी समझ लेते थे।

एक कहानी आज भी उनके दिल के क़रीब है। गाँव का एक बच्चा, जिसके बारे में शुरू में यह सोचा जाता था कि वह बोलने में असमर्थ है, आँगनवाड़ी केन्द्र में आने के बाद बोलने लगा। उसके माता-पिता की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा, क्योंकि पहले वे यही मानते थे कि उनका बच्चा गूँगा है।

एक और अभिभावक ने अपने बच्चे का दाख़िला निजी स्कूल में कराया था। जब उन्होंने देखा कि शंकरम्मा के तरीक़ों से केन्द्र में बहुत बदलाव आया है तो अभिभावक ने स्वीकार किया कि "हमारा बच्चा यहाँ बेहतर सीख सकता है", और बड़े गर्व के साथ बच्चे को फिर से आँगनवाड़ी केन्द्र में दाख़िल करवाया।

> **शंकरम्मा के तरीक़ों से केन्द्र में बहुत बदलाव आया, अभिभावक ने स्वीकार किया कि "हमारा बच्चा यहाँ बेहतर सीख सकता है", और बड़े गर्व के साथ बच्चे को फिर से आँगनवाड़ी केन्द्र में दाख़िल करवाया।**

कुछ चुनौतियाँ और समाधान

शंकरम्मा को नए बच्चों के साथ कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा। कहानियाँ सुनाते समय बच्चे ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते थे। ग़ैर-कन्नड़ भाषी समुदाय के कुछ बच्चे कन्नड़ नहीं समझ पाते थे। वे आपस में बातें करते थे, और उन्हें घेरे में एक साथ बैठाना मुश्किल लगता था। लेकिन इन चुनौतियों से उनका हौसला नहीं टूटा, और उन्होंने छोटी-मोटी समस्याओं का समाधान ढूँढ़ लिया। कहानी सुनाते समय उन्होंने निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाईं :

चित्र 3 : आँगनवाड़ी की खेल गतिविधि में शामिल बच्चे

- बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए डफली जैसे एक वाद्य यंत्र खंजरी का उपयोग करना।
- ग़ैर-कन्नड़ भाषी समुदाय के बच्चों को कन्नड़ भाषी बच्चों के साथ बैठकर खेलने के लिए प्रोत्साहित करना।
- बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कहानी सुनाते समय प्रश्न पूछना। उदाहरण के लिए, कौन बोल रहा है; आगे क्या होगा; आदि।
- पुनः ध्यान आकर्षित करने के लिए ताली बजाना (मसलन, केले की ताली—बच्चे एक और दो की गिनती पर ताली बजाते हैं, फिर ऐसा अभिनय करते हैं जैसे केला छीलकर खा रहे हों)।
- बच्चों को ध्यान केन्द्रित करने में मदद करने के लिए कहानी से सम्बन्धित चित्र कार्ड का उपयोग करना।
- बच्चों की आपस में बात करने की आदत को कम करने के लिए कहानियाँ सुनाते समय कठपुतलियों का उपयोग करना।

गीत गाते समय भी उन्होंने महसूस किया कि कुछ बच्चे अनुसरण करने या साथ गाने में असमर्थ हैं। उन्हें गाते समय वाक्य बनाने और शब्दों को जोड़ने में कठिनाई होती थी। वे गाते समय एक घेरे में खड़े नहीं होते थे। यहाँ तक कि जब वे ख़ुद गाने के बाद बच्चों से उसे दोहराने के लिए कहतीं, तब भी कुछ बच्चे एक साथ नहीं, बल्कि अलग-अलग या अकेले गाते थे। कुछ चुप रहते थे, और बिल्कुल भी नहीं गाते थे। शंकरम्मा के पास इनसे उबरने के भी अपने तरीक़े थे।

- उन्होंने पहले प्रदर्शन के तौर पर गीत गाना शुरू किया। फिर बच्चों से दोहराने के लिए कहा।
- वे गीत में तुकबन्दी वाले शब्दों, शब्द संयोजनों और वाक्य रचना पर ध्यान केन्द्रित करती थीं।
- गाते समय क्रियाओं, भाव और हाव-भाव का उपयोग करके, उन्होंने गतिविधि को और अधिक आकर्षक बना दिया जिससे भाषा विकास में मदद मिली।

> **शंकरम्मा का सफ़र दर्शाता है कि कैसे किसी शिक्षिका का समर्पण प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा की कहानी को एक नए सिरे से लिख सकता है। उन्होंने संशय को विश्वास में, मौन को वाणी में, और ख़ाली जगहों को आनन्द के केन्द्रों में बदल दिया।**

उनकी अन्तर्दृष्टि न केवल उनके अकादमिक ज्ञान, बल्कि आँगनवाड़ी कक्षाओं में उनके लम्बे अनुभव को भी दर्शाती थी।

जोगुर-2 से कोतनूर-डी तक शंकरम्मा का सफ़र दर्शाता है कि कैसे किसी शिक्षिका का समर्पण प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा की कहानी को एक नए सिरे से लिख सकता है। उन्होंने संशय को विश्वास में, मौन को वाणी में, और ख़ाली जगहों को आनन्द के केन्द्रों में बदल दिया। आज, उनके बच्चे आत्मविश्वास, जिज्ञासा और सीखने की चाहत के साथ प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश करते हैं। उनकी कहानी सिर्फ़ आँगनवाड़ियों को बदलने की कहानी नहीं है, बल्कि भविष्य को बदलने की भी है।

[1]चिलिपिली पाठ्यक्रम कर्नाटक में 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए विकसित प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) कार्यक्रम है।
[2]बच्चों के अधिगम को प्रदर्शित करने के लिए आँगनवाड़ी केन्द्रों में महीने में एक बार 'ईसीसीई दिवस' मनाया जाता है ताकि अभिभावकों व समुदाय में शाला-पूर्व शिक्षा, स्वस्थ दिनचर्या और खेल-आधारित शिक्षा के महत्त्व के बारे में जागरूकता पैदा हो सके।
[3]बाल मेला एक वार्षिक / अर्धवार्षिक आयोजन है। इसमें विभिन्न आँगनवाड़ी केन्द्रों के बच्चे खेलने, सीखने और अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए इकट्ठा होते हैं। अभिभावक और समुदाय के सदस्यों के भी भाग लेने के कारण यह आयोजन प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा का उत्सव बन जाता है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

अनन्या डी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में एसोसिएट के रूप में शामिल हुईं और कर्नाटक के कलबुर्गी ज़िले के चित्तपुर ब्लॉक की ब्लॉक समन्वयक हैं। वर्तमान में, वे ईसीई, प्राथमिक भाषा और गणित, उच्च प्राथमिक गणित जैसे क्षेत्रों में काम कर रही हैं, और युवाओं के साथ फ़ाउण्डेशन के कार्यों में योगदान दे रही हैं।

सम्पर्क : ananya.d@azimpremjifoundation.org

बूझो पहेली हफ़्ते-हफ़्ते, सोचो-सीखो हँसते-हँसते!

मोख़्तार ज़मान

हमारे विद्यालय के प्रवेश द्वार के पास ही एक व्हाइटबोर्ड लगा हुआ है। हर सोमवार को मैं इस बोर्ड पर गणित की एक ऐसी पहेली लिखता हूँ जो लगती तो आसान है, लेकिन सोचने पर मजबूर करती है। यह पहेली मैं पाठ्यपुस्तक से नहीं लेता। उदाहरण के लिए, एक घोंघा हर दिन एक दीवार पर 3 सीढ़ियाँ चढ़ता है, लेकिन हर रात 2 सीढ़ियाँ फिसलकर नीचे आ जाता है। इस दीवार की ऊँचाई 5 सीढ़ियों जितनी है। घोंघे को दीवार के ऊपर तक पहुँचने में कितने दिन लगेंगे?

यह सवाल तर्क पर आधारित है जिसे हल करने की कोशिश कक्षा 1, 2 और 3 के विद्यार्थी भी कर सकते हैं। मैं ज़्यादातर तर्क पर आधारित पहेलियाँ ही चुनता हूँ, लेकिन कभी-कभी ऐसी पहेली भी चुनता हूँ जिससे विद्यार्थी मज़ेदार और आसान तरीक़े से पैटर्न, आकार या सरल संख्याओं के बारे में सीख सकें।

इन पहेलियों पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया का मैं ध्यान से अवलोकन करता हूँ। सबसे पहले यह कि उनमें जिज्ञासा होती है। कुछ विद्यार्थी ज़रा रुककर सवाल को ध्यान से पढ़ते हैं। कुछ जवाब का अन्दाज़ा लगाते हैं, और फुसफुसाकर अपने दोस्तों को बताते हैं। तो कुछ अपनी नोटबुक निकालकर सवाल लिख लेते हैं कि बाद में उसे हल करेंगे। मैंने कक्षा 2 और 3 के विद्यार्थियों को भी पहेली पढ़ने की कोशिश करते देखा है। कभी-कभी जब वे पहेली को समझ नहीं पाते तो बड़ी कक्षा के विद्यार्थियों के साथ इस पहेली में बुने सवाल के बारे में चर्चा करते हैं। और सबसे अच्छी बात यह है कि ये बड़ी कक्षा के विद्यार्थी सिर्फ़ जवाब ही नहीं देते, बल्कि उनका मार्गदर्शन भी करते हैं, और उनसे बातचीत करते हैं कि इस पहेली के बारे में चरण-दर-चरण कैसे सोचना है।

दोपहर के भोजन के समय तक यह पहेली चर्चा का विषय बन जाती है। कुछ विद्यार्थी बड़े आत्मविश्वास के साथ कहते हैं कि उन्होंने इसका हल ढूँढ़ लिया है, जबकि अन्य अपना जवाब देने से पहले उसे एक बार और जाँचने में लग जाते हैं। हमने विद्यालय के स्टाफ़ रूम के सामने एक डिब्बा रखा हुआ है जिसमें विद्यार्थी अपने जवाब की पर्ची डालते हैं। वे इस मज़ेदार गतिविधि को बहुत गम्भीरता से लेते हैं। हर कोई काग़ज़ के एक टुकड़े पर अपना जवाब लिखता है, अपना नाम लिखता है, और उसे मोड़कर डिब्बे में डाल देता है।

एक हफ़्ते बाद मैं डिब्बा खोलता हूँ और उनके जवाब देखता हूँ—कुछ सही, कुछ ग़लत। सही जवाबों को अलग करते समय मेरे ज़ेहन में विद्यार्थियों के उत्सुकता से भरे चेहरे उभर आते हैं। वे यह जानना चाहते हैं कि उनके नाम बोर्ड पर लिखे जाएँगे या नहीं, क्योंकि जिनके सभी जवाब सही होते हैं, उनके नाम के साथ उनकी तस्वीर भी लगाई जाती हैं।

इस तरह की गतिविधियों से विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर भी गणित सीखने का अवसर मिलता है। साथ ही, इन पहेलियों से उत्साह और जिज्ञासा का माहौल भी बनता है। इसके कुछ फ़ायदे और भी हैं, जैसे—

- विद्यार्थी सोचने-विचारने लगते हैं। फ़ॉर्मूले याद करने के बजाय वे सवालों को तर्कपूर्ण नज़रिए से सुलझाना सीखते हैं। वे बड़े सवालों को छोटे हिस्सों में बाँटना और तार्किक रूप से सोचना सीखते हैं।
- ये पहेलियाँ सीखने का माहौल बनाती हैं। छोटे विद्यार्थियों को बड़ी कक्षाओं के विद्यार्थियों से मार्गदर्शन मिलता है, और कक्षा के बाहर भी उनकी आपस में चर्चाएँ होती हैं जिनसे सीखना आसान हो जाता है।
- इससे उनमें धीरज रखने का भाव बढ़ता है, क्योंकि वे बड़े धैर्य के साथ नतीजे का इन्तज़ार करते हैं।
- पहेलियाँ हल करने से उन्हें यह एहसास होता है कि उन्होंने कुछ पा लिया है। जब उनके नाम बोर्ड पर लिखे जाते हैं तो उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। वे प्रेरित महसूस करते हैं, और अगली चुनौती के लिए तैयार हो जाते हैं।
- पहेलियों से विद्यालय का वातावरण मज़ेदार हो जाता है। सिर्फ़ रोज़मर्रा के काम करते रहने के बजाय विद्यार्थी किसी आश्चर्यजनक और दिलचस्प चीज़ का इन्तज़ार करते हैं, कोई ऐसी चीज़ जो उनकी जिज्ञासा को जगाए।

हर हफ़्ते एक नई पहेली दी जाती है, और यह सारा चक्र फिर से शुरू हो जाता है। धीरे-धीरे यह गतिविधि उनकी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का हिस्सा बन जाती है, जहाँ वे बड़े उत्साह के साथ एक नई चुनौती का सामना करते हैं, उस पर चर्चा करते हैं, और उसे हल करने की कोशिश करते हैं। इससे विद्यालय की पढ़ाई कुछ और दिलचस्प हो जाती है।

मोख़्तार ज़मान, शिक्षक, अज़ीम प्रेमजी स्कूल रायगढ़, छत्तीसगढ़

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

विषयों और भाषा की दीवारों के पार शिक्षण

द्रोण साहू

वर्ष का नया सत्र शुरू हुआ था। मुझे कक्षा 3 के विद्यार्थियों को हिन्दी पढ़ाने की ज़िम्मेदारी मिली थी। मैंने पाठ्यपुस्तक पढ़ी और पाया कि नए-नए पाठ जुड़ गए थे। देखने में वे हिन्दी के पाठ कम, पर्यावरण के अधिक लग रहे थे।

मुझे पाठ 3 पर विद्यार्थियों के साथ काम करना था। पाठ का नाम था, 'कितने पैर?' मेरे मन में विचार आया कि शायद इस पाठ को पर्यावरण विषय में होना चाहिए था। ख़ैर, मैंने विद्यार्थियों के साथ पाठ पर मौखिक बातचीत करने का निर्णय लिया।

शुरुआत इन्सान के पैरों पर बातचीत से की। विद्यार्थियों से ऐसे जीवों के नाम बताने को कहा जिनके दो पैर होते हैं। उन्होंने कई जीवों के नाम बताए। जैसे—मयूर (मोर), बाज़, इन्सान (मनखे), आदि। इन नामों को बताते हुए कुछ विद्यार्थियों ने चार पैर वाले जीवों के नाम बताने भी शुरू कर दिए। चर्चा में उनकी बढ़ती रुचि को देखकर मेरे मन में भी कौतूहल हुआ कि देखा जाए कि विद्यार्थी किस-किस तरह के जीव-जन्तुओं के और कुल कितने नाम बता पाते हैं। मैंने विद्यार्थियों से कहा कि अब उन्हें जीव-जन्तुओं के पैरों की संख्या के आधार पर उनके नाम बताने हैं।

ऐसा कहते हुए मैंने बोर्ड पर जीवों के पैरों की संख्या के आधार पर कुछ वर्ग बनाए। विद्यार्थियों से कहा कि अब हम इन वर्गों के आधार पर जीवों के नाम बताएँगे। मसलन, दो पैर वाले, चार पैर वाले, आदि। सभी ने इस प्रस्ताव पर उत्साहपूर्वक हामी भरी।

विद्यार्थियों ने नाम बताना शुरू किया, और मैं उन्हें ब्लैकबोर्ड पर उपयुक्त वर्ग में लिखता गया। कुछ विद्यार्थी अपनी भाषा में उन जीवों के नाम जानते थे, पर हिन्दी में उनके नाम न मालूम होने के कारण बोलने में झिझक रहे थे। उनकी परेशानी भाँपते हुए उनसे कहा कि वे जिस भी भाषा में जीवों के नाम जानते हैं, बता सकते हैं। फिर क्या था, वे एक-एक कर जीवों के नए-नए नाम बताने लगे। कई जीवों के नाम मैं ख़ुद नहीं जानता था। मैं उनके आकार, रंग और उनके रहने वाले स्थान, आदि के बारे में विद्यार्थियों से पूछता, और वे बड़े उत्साह से उस जीव के बारे में बताने लगते। मसलन, बित्ता-नप्पा कीड़ा कैसा होता है? पूछने पर उन्होंने बताया कि यह पत्तों व ज़मीन पर चलता है, और बित्ते से मापते वक़्त हम जैसे बित्ता रखते हैं यह कीड़ा वैसे ही चलता है। इससे समझ आया कि विद्यार्थी लूपर्स (कैटरपिलर) की बात कर रहे हैं। उन्होंने और भी कई कीड़ों और जानवरों के बारे में इस तरह का विवरण प्रस्तुत किया। उनके द्वारा दिए गए विवरण से यह समझने में मदद मिली कि वे किस जीव के बारे में बात कर रहे हैं।

चर्चा आगे बढ़ती गई, और जीवों के पैरों की संख्या के आधार पर हमारी सूची में भी इज़ाफ़ा होता रहा। कई विद्यार्थी कुछ जीवों के नाम अँग्रेज़ी में भी जानते थे। वे इस चर्चा के दौरान उनके नाम अँग्रेज़ी में भी बता देते थे जिसे हम अपनी चर्चा में शामिल कर लेते थे। मैं उन जीवों के नाम अँग्रेज़ी में दोहरा देता था ताकि विद्यार्थी उन्हें ठीक से सुन लें।

जैसा कि मैंने पहले बताया, शुरुआत दो पैरों वाले जीवों से हुई थी। उसके बाद, चार, छह, आठ, फिर दस पैरों वाले जीवों की भी बात हुई। ऐसी स्थिति भी आई कि खजूरकीरा (कनखजूरा) जैसे कुछ जीवों के पैरों की संख्या हम निश्चित नहीं कर पा रहे थे। इसलिए

हमने मिलकर तय किया कि एक ऐसा वर्ग भी ब्लैकबोर्ड पर बनाना चाहिए जिसमें अनगिनत पैर वाले जीवों के नाम लिखे जाएँ। अब एक और वर्ग बढ़ गया। इसी तरह बिना पैर वाले जीवों के लिए भी एक वर्ग बनाना पड़ा।

बातचीत उत्साहपूर्ण माहौल में आगे बढ़ ही रही थी कि अचानक एक समस्या खड़ी हो गई। विद्यार्थियों का एक समूह कह रहा था कि बन्दर दो पैर वाला जीव है, जबकि दूसरा बता रहा था कि वह चार पैर वाला जीव है। इसके लिए दोनों समूह अपने-अपने हिसाब से कई तरह के तर्क भी दे रहे थे। एक समूह कह रहा था कि बन्दर चलते समय अपने चारों पैरों का इस्तेमाल करता है, वहीं दूसरा यह तर्क दे रहा था कि वह खाते समय तो अपने हाथों का ही प्रयोग करता है। अब किस समूह की बात मानकर उस जीव को किस वर्ग में लिखा जाए, यह मेरे लिए भी एक बड़ी समस्या बन गई। दोनों समूहों के तर्क अपनी-अपनी जगह पर सही थे। इस सवाल-जवाब में सबसे दिलचस्प बात यह थी कि इसमें वे विद्यार्थी भी अपने तर्क प्रस्तुत कर रहे थे, जो कक्षा में न कभी सामने आते थे न ही कभी बोलना पसन्द करते थे। अन्त में, बहुत तर्क-वितर्क के बाद विद्यार्थियों के दोनों समूह बन्दर को, इस तर्क के आधार पर कि वह इन्सान जैसा दिखता है, दो पैर वाले जीवों के वर्ग में रखने के लिए सहमत हो गए। कंगारू, मेंढक और मगरमच्छ के लिए भी ऐसे ही बहुत तर्क-वितर्क हुए। कंगारू के लिए तो मुझे मोबाइल में कंगारू का वीडियो भी दिखाना पड़ा।

बातचीत के बीच में कुछ विद्यार्थियों ने एक पैर तथा तीन पैर वाले जीवों के बारे में भी जानना चाहा। मैंने उन्हें ऐसे जीवों के बारे में घर से पता करके आने के लिए कहा। कुछ विद्यार्थी ब्लैकबोर्ड पर बने वर्गों को देखते हुए 8, 10, और 10 से भी ज़्यादा पैरों वाले जीवों के बारे में घर से पता करके आने के लिए राज़ी हो गए। मैंने उन्हें इनके बारे में पता करने के लिए तकनीक का इस्तेमाल करने का भी संकेत दे दिया।

इस तरह नब्बे मिनट की कक्षा उनके साथ कैसे बीत गई, पता ही नहीं चला। मैं जिस पाठ को पढ़ाने से पहले थोड़ा अनमना और संशय में था, आज उसी पाठ के कारण मेरी कक्षा जीवन्त हो उठी थी। मुझे इस पाठ में बहुत-सी सम्भावनाएँ नज़र आईं। विद्यार्थी अपनी भाषा का मौखिक उपयोग कर रहे थे, नए शब्द सीख रहे थे, और उन्हें पाठ की विषयवस्तु के कारण भागीदारी करने और अभिव्यक्त करने के मौक़े मिल रहे थे। मेरे शब्द भण्डार में भी वृद्धि हो रही थी। यह इसीलिए सम्भव हुआ क्योंकि यह पाठ उनके परिवेश, उनके पर्यावरण से जुड़ा हुआ था।

द्रोण साहू, शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय बिजेमाल, महासमुन्द, छत्तीसगढ़

कक्षा में भावनात्मक सुरक्षा

पूनम

हर रोज़ की तरह उस दिन भी हम अपने विद्यालय के कार्यों में व्यस्त थे। मैं पहली कक्षा में पढ़ा रही थी। उस दिन हम 'द बी एंड द एलिफेंट' कहानी के बारे में बातचीत कर रहे थे। इसके बाद विद्यार्थियों को कुछ सवालों के जवाब देने थे। जैसे, कहानी का नाम, उसके किरदार और कहानी का कथानक, वग़ैरह। कहानी शुरू करने से पहले मैंने उन्हें कुछ निर्देश दे दिए थे, और ब्लैकबोर्ड पर कहानी का शीर्षक, किरदारों के नाम, आदि भी लिख दिए थे।

मैंने कहानी सुनाई, और विद्यार्थी अपनी किताब में पढ़ते उसे ध्यान से सुनते रहे। फिर वे सवालों के जवाब देने के लिए एक-एक करके आगे आए। कुछ विद्यार्थियों को मुश्किल शब्दों को पढ़ने और कहानी को समझने में दिक़्क़त हो रही थी, इसलिए उन्हें फिर से कहानी समझाई।

तभी मुझे किसी ज़रूरी काम के लिए बुलाया गया, और मुझे कक्षा से बाहर जाना पड़ा। क़रीब 10 मिनट बाद जब वापस आई तो मैंने देखा कि 10-15 विद्यार्थी सुनीता के चारों ओर इकट्ठे थे। दो-तीन विद्यार्थी दौड़कर मेरी तरफ़ आए और बोले, "मैम, सुनीता रो रही है!" मैंने तुरन्त पूछा, "क्या हुआ? वह क्यों रो रही है?" लेकिन किसी के पास कोई जवाब नहीं था।

मैं सुनीता के पास गई, और रोने की वजह पूछी। पहले तो वह चुप रही। फिर से पूछने पर बोली कि उसे न तो चोट लगी है न ही किसी ने उसे चिढ़ाया है। बात यह थी कि कक्षा से बाहर जाने से पहले मैंने विद्यार्थियों से कहा था कि वे मेरे लौटने तक कहानी के बारे में चर्चा न करें, और सुनीता को अनुशासन बनाए रखने का काम सौंपा था। एक अन्य विद्यार्थी को उसकी मदद करनी थी, लेकिन उसने इस काम में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई, इसलिए अकेली सुनीता पर यह ज़िम्मेदारी आन पड़ी, और वह तनाव में आ गई।

आख़िर में वह बोली, "मैं विद्यार्थियों से कहती रही कि सभी चुप हो जाओ, लेकिन कोई चुप ही नहीं हो रहा था। फिर मुझे एकदम से ग़ुस्सा आ गया और मैंने अपना स्केल लेकर अपने हाथ पर मार लिया।"

मैंने पूछा, "तुमने ऐसा क्यों किया?"

सुनीता : कोई मेरी बात नहीं मान रहा था और वे चुप ही नहीं हो रहे थे।

मैं : तो क्या उसके बाद उन्होंने तुम्हारी बात मानी?

सुनीता : (सिर हिलाते हुए) नहीं।

मैं : सुनीता, क्या तुम्हारे ऐसा करने से तुम्हारी समस्या हल हुई?

सुनीता : नहीं।

मैं : 15 मिनट पहले इस कहानी में हम इसी बारे में तो बात कर रहे थे न कि मधुमक्खी मुसीबत में थी, वह अपने घर का रास्ता भूल गई थी। फिर किसी ने उसका घर ढूँढ़ने में मदद की। तो बताओ, क्या मधुमक्खी सिर्फ़ रो रही थी या अपना घर ढूँढ़ने की कोशिश कर रही थी?

सुनीता : वह अपना घर ढूँढ़ रही थी।

मैं : क्या मधुमक्खी ने ख़ुद को चोट पहुँचाई?

सुनीता : नहीं।

मैं : क्या तुम्हें कहानी में सही हल मिला?

सुनीता : हाँ, मधुमक्खी ने मदद माँगी और हाथी ने उसकी मदद की।

मैं : तो बताओ, अगर मधुमक्खी एक जगह बैठकर रोती रहती और मदद नहीं माँगती तो क्या उसे उसका घर मिल पाता?

सुनीता : नहीं।

मैं : मुझे लगता है कि तुम मधुमक्खी से ज़्यादा समझदार हो। तुम रोने या ख़ुद को चोट पहुँचाने के बजाय अपनी समस्या का हल ढूँढ़ सकती हो।

सुनीता : (सिर हिलाते हुए) हाँ।

इस बातचीत के बाद सुनीता को थोड़ी राहत महसूस हुई और उसने कक्षा की बाक़ी गतिविधियों में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। एक शिक्षिका होने के नाते मुझे लगा कि ये मेरा फ़र्ज़ है कि उसके माता-पिता को इस घटना के बारे बताऊँ। इसलिए मैंने उसके पिता को फ़ोन किया और स्थिति समझाई। वे बहुत समझदार थे, और अपनी बेटी से भावनात्मक रूप से जुड़े थे। उन्होंने बताया कि पहले भी ऐसी घटनाएँ हुई हैं। जब सुनीता परेशान हो जाती थी तो कभी-कभी ख़ुद को दोष देने लगती थी या अपने-आप को नुक़सान पहुँचाने लगती थी।

इसके बाद सुनीता की मदद करने के लिए उसे नियमित रूप से सलाह दी गई और मार्गदर्शन किया गया। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ने लगा। इस घटना के सात महीने बाद अब स्थिति यह है कि वह प्रार्थना सभा के दौरान ख़ुशी-ख़ुशी ज़िम्मेदारियाँ सँभालती है। उसके पिता ने बताया कि घर पर भी वह सबको बताती है कि उसे इन कामों को करना कितना अच्छा लगता है। उसने यह भी सीख लिया है कि अगर उसे कोई काम करना सहज नहीं लगता तो वह किसी और काम का ज़िम्मा ले सकती है। इस एहसास से उसमें आत्मविश्वास आया, और काम के साथ जुड़े रहने की भावना का विकास हुआ है।

संवेदनशील विद्यार्थियों के साथ काम करने के लिए यह ज़रूरी है कि उनके साथ बड़े ध्यान से बातें की जाएँ, और उनके लिए की जाने वाली गतिविधियों की योजना सोच-समझकर बनाई जाए। ऐसा करने से उन्हें असल ज़िन्दगी की समस्याओं को समझने और उनके समाधान खोजने में मदद मिलेगी। सबसे ज़रूरी बात यह है कि उन्हें पता होना चाहिए कि अगर वे किसी स्थिति से ख़ुद नहीं निपट पा रहे हों तो उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति की मदद लेनी चाहिए जिस पर वे भरोसा करते हैं। अगर वे किसी समस्या को नहीं सुलझा पा रहे हैं तो उन्हें परेशान नहीं होना चाहिए। कोई हर्ज़ नहीं अगर वे उसे यूँ ही छोड़ दें, लेकिन ख़ुद को चोट पहुँचाना ठीक नहीं है।

इस अनुभव से पता चलता है कि कक्षा में सिर्फ़ अकादमिक कौशल ही नहीं, बल्कि भावनात्मक विकास को भी बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षकगण कहानी सुनाकर, खुली चर्चाओं और आपसी बातचीत को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं से निपटने, समस्याओं को सही तरीक़े से हल करने और ज़रूरत पड़ने पर मदद माँगने में मदद कर सकते हैं। इस प्रकार उन्हें सिर्फ़ परीक्षाओं ही नहीं, बल्कि ज़िन्दगी के सफ़र के लिए भी तैयार किया जा सकता है। विद्यार्थियों के लिए हम जो सबसे ज़रूरी काम कर सकते हैं, उनमें से एक है—विद्यालय और घर में ऐसा माहौल बनाना जहाँ वे ख़ुद को सुरक्षित महसूस करें, आराम से बात कर सकें, सवाल पूछ सकें और अपनी परेशानियाँ व समस्याएँ बाँट सकें।

पूनम, शिक्षिका, अज़ीम प्रेमजी स्कूल दिनेशपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

शिक्षकों के सामूहिक प्रयास विद्यालय को बेहतर बनाते हैं : कविता सिंह

मनीष किशोर

कविता सिंह

जयपुर के सांगानेर ब्लॉक में स्थित महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय भाटवाला में कार्यरत कविता सिंह एक प्रतिबद्ध व प्रेरक प्रधानाध्यापिका हैं। एक समय था जब उनका विद्यालय भौतिक सुविधाओं की कमी, घटते नामांकन और कमज़ोर अकादमिक माहौल से जूझ रहा था। इन चुनौतियों के बीच उन्होंने विद्यार्थियों के सीखने पर ध्यान केन्द्रित करते हुए विद्यालय में 'रीडिंग कॉर्नर' की शुरुआत की। और इसके ज़रिए, समुदाय, स्टाफ़ व विद्यार्थियों के साथ मिलकर अकादमिक माहौल व सीखने की संस्कृति को जीवन्त बनाया। साथ ही, उन्होंने समुदाय को विद्यालय से जोड़ा, और साथी शिक्षकों के लिए साझी ज़िम्मेदारी वाला वातावरण बनाया। यह सब जानने के लिए उनसे बात की है अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथी मनीष ने। प्रस्तुत हैं कुछ अंश :

मनीष किशोर : प्रधानाध्यापिका की ज़िम्मेदारी मिलने पर प्राथमिकताएँ क्या थीं? उन पर कैसे काम किया?

कविता सिंह : शुरुआत में विद्यालय की वास्तविक स्थिति समझने पर दो प्रमुख चुनौतियाँ स्पष्ट थीं—पहली, विद्यालय में पेयजल, बिजली, जर्जर भवन जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव; और दूसरी, लगातार घटता हुआ नामांकन। तब नामांकन 105 से घटकर मात्र 70 रह गया था। यह गम्भीर चिन्ता का विषय था। समस्याओं को सुलझाने के लिए स्टाफ़ के साथ मिलकर एक साझी योजना बनाई। एक भामाशाह (दानदाता) के सहयोग से विद्यालय में पानी के लिए बोरिंग करवाई गई, तथा बिजली व्यवस्था सुचारु रखने के लिए स्थानीय लाइनमैन से नियमित सम्पर्क बनाया गया। इससे विद्यालय का भौतिक वातावरण बेहतर हुआ।

नामांकन बढ़ाने के लिए अभिभावकों से बातचीत कर समझने की कोशिश की कि वे बच्चों को विद्यालय क्यों नहीं भेज रहे हैं। उनकी चिन्ता थी कि विद्यालय में पढ़ाई ठीक से नहीं हो रही है। उन्हें भरोसा दिलाया कि शिक्षण की गुणवत्ता में निश्चित ही सुधार किया जाएगा। इसके लिए वे कुछ समय विद्यालय को दें।

शिक्षकों द्वारा कक्षाओं में विद्यार्थियों के साथ स्नेहपूर्ण संवाद, उनकी नियमित उपस्थिति, अच्छी पढ़ाई और सीखने का सकारात्मक माहौल बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया। इन प्रयासों से अभिभावकों का विश्वास धीरे-धीरे वापस लौटा। आज विद्यार्थियों का नामांकन 70 से बढ़कर 142 हो गया है।

मनीष किशोर : आपने विद्यालय में सीखने-सिखाने का माहौल तैयार करने में क्या पहल की?

कविता सिंह : इसके लिए कोशिश की गई कि यहाँ हर विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और सीखने की प्रक्रिया में शामिल महसूस करे। गतिविधि-आधारित अधिगम (एबीएल) किट के उपयोग से विद्यार्थियों को धीमी या तेज़, अपनी गति से सीखने के अवसर मिलें। वे बिना दबाव के सीख पाएँ। अब शिक्षक, विद्यार्थियों की उपलब्धि की तुलना करने के बजाय उनके प्रयासों की सराहना करते हैं, और बिना भेदभाव सभी को गतिविधियों में शामिल करते हैं।

पुस्तकालय और रीडिंग कॉर्नर को संवाद के मंच के रूप में विकसित किया गया है। यहाँ विद्यार्थी अपनी पसन्द की पुस्तकें पढ़ते हैं, कहानियाँ सुनाते हैं, और समूह में खुलकर चर्चा करते हैं। इससे झिझक वाले विद्यार्थी भी धीरे-धीरे अपनी बात रखने लगे हैं। सुबह की सभा को अभिव्यक्ति से जोड़ा है। विद्यार्थी कविता, नाटक, गीत और अनुभव प्रस्तुत करते हैं। शिक्षक और विद्यार्थी एक दूसरे की बात ध्यान से सुनते हैं और सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों ने बाल मेला आयोजित किया। उन्होंने मिलकर योजना बनाई, समूहों में काम बाँटा, खाना तैयार किया, स्टॉल लगाए, और अपनी चीज़ों की मार्केटिंग की। इससे विद्यार्थियों में सहयोग व ज़िम्मेदारी का भाव बना। सभी विद्यार्थी सीखने प्रति उत्साहित हैं। मेरे लिए यही सब एक अच्छे अकादमिक माहौल की पहचान है।

मनीष किशोर : आप सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं में समुदाय की भागीदारी को कैसे देखती हैं, और इसे लेकर क्या करती हैं?

कविता सिंह : विद्यालय के विकास में अभिभावकों की सहभागिता को महत्त्वपूर्ण मानती हूँ। मैं उनसे विद्यार्थी की शैक्षणिक प्रगति के साथ उसके व्यवहार, रुचियों, नियमितता पर बातचीत करती हूँ। कोई विद्यार्थी बोलने में झिझकता है या समूह कार्य में पीछे रहता है तब मैं अभिभावकों को घर पर कहानी सुनाने या रोल प्ले जैसे सरल अभ्यास सुझाती हूँ जिससे वे बच्चे के सीखने में शामिल हो पाते हैं।

कई अभिभावक इमारत के रखरखाव व स्वच्छता में श्रमदान करते हैं, बाल सभाओं में बच्चों को सुनते हैं और त्योहारों पर अनुभव साझा करते हैं। निरन्तर संवाद और सहभागिता ने विद्यालय और समुदाय के बीच विश्वास को मज़बूत बनाया है।

मनीष किशोर : आपका विद्यालय में अकादमिक वातावरण सृजित करने की तरफ़ ध्यान कैसे गया, और इसके लिए क्या प्रयास किए?

कविता सिंह : विद्यार्थियों की कमज़ोर शैक्षणिक स्थिति को देखकर विद्यालय में अकादमिक वातावरण बनाने के लिए रीडिंग कॉर्नर की आवश्यकता महसूस हुई। मुझे स्पष्ट था कि विद्यार्थियों को पुस्तकें नियमित उपलब्ध कराने से सकारात्मक बदलाव सम्भव है। इसी बीच अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा 'निपुण मोहनपुरा' अभियान की बैठक में रीडिंग कॉर्नर की अवधारणा साझा की गई। बताया गया कि रीडिंग कॉर्नर केवल पुस्तकें रखने की जगह नहीं है, बल्कि यहाँ विद्यार्थियों के लिए एक सहज, सुरक्षित, ख़ुशनुमा व पढ़ने का खुला माहौल होता है जहाँ विद्यार्थी अपनी रुचि की पुस्तकें स्वयं चुनकर पढ़ सकते है।

शिक्षक साथियों के साथ विद्यार्थियों की ज़रूरतों व रीडिंग कॉर्नर बनाने पर चर्चा की। किसी ने विद्यार्थियों के बैठने की व्यवस्था में मदद की तो किसी ने समय सारणी में रीडिंग टाइम शामिल करने का सुझाव दिया। किसी ने पुस्तकालय प्रभारी की भूमिका निभाई, जबकि अन्य साथियों ने कक्षा अनुसार पुस्तकें छँटवाने व रीडिंग कॉर्नर में आकर्षक ढंग से रखवाने में भूमिका निभाई।

चित्र 1 : पुस्तकालय में बाल साहित्य पढ़ते विद्यार्थी

विद्यार्थियों को कक्षा में पुस्तकें ले जाने, अवकाश के समय पढ़ने और घर ले जाने की अनुमति दी गई। शिक्षक विद्यार्थियों से यह अपेक्षा नहीं रखते कि वे पुस्तक का सार लिखें, बल्कि उनसे पूछते हैं, "तुमने क्या पढ़ा, और तुम्हें क्या अच्छा लगा?" इससे विद्यार्थियों की झिझक कम हुई, मौखिक अभिव्यक्ति बेहतर हुई और धीरे-धीरे पुस्तक पढ़ने की दिलचस्पी और ख़ुद पर भरोसा बना। अकादमिक वातावरण में अब विद्यार्थी स्वेच्छा से वहाँ बैठकर पढ़ते हैं।

मनीष किशोर : यह धारणा प्रचलित है कि विद्यार्थी पुस्तकें फाड़ देते हैं, ख़राब कर देते हैं। इसे तोड़ने के लिए क्या किया?

कविता सिंह : हमने प्रार्थना सभा में पुस्तकों के महत्त्व और उनकी देखभाल (जैसे—पुस्तकें ज्ञान का ख़ज़ाना हैं, उन्हें साफ़ हाथों से पढ़ने, थूक न लगाने, गोदागादी नहीं करने, मोड़ने-फाड़ने से बचने और पढ़ने के बाद सही स्थान पर रखने, आदि) पर चर्चा की। विद्यार्थियों को पुस्तकों के रखरखाव की ज़िम्मेदारियाँ दी गईं, जैसे—पुस्तकें व्यवस्थित जमाना, गिनती रखना, क्षतिग्रस्त पुस्तकों को गोंद / टेप लगाकर सुरक्षित करना, आदि। हफ़्ते में एक दिन 'पुस्तक मरम्मत' से सम्बन्धित गतिविधियों को शामिल किया गया।

मनीष किशोर : विद्यार्थियों में पढ़ने-लिखने की आदतों के विकास के लिए क्या प्रयास किए?

कविता सिंह : पढ़ने-लिखने की आदतों के लिए पुस्तकालय व रीडिंग कॉर्नर अहम भूमिका निभाता है। इसके लिए विद्यालय में चार बातें सुनिश्चित कीं। पहली, विद्यार्थियों को बहुत सारी अच्छी पुस्तकें उपलब्ध कराई गईं। दूसरी, स्वाध्याय के लिए अपनी रुचि और पसन्द के अनुसार पुस्तक चुनने की स्वतंत्रता दी गई। तीसरी, उन्होंने जो पढ़ा है, उसे साथियों के साथ साझा करने के मंच उपलब्ध कराए। और चौथी बात, पढ़ी गई सामग्री से उन्होंने क्या सीखा-समझा, उसे अपनी भाषा और शब्दों में मौखिक व लिखकर अभिव्यक्त करने के मौक़े दिए।

मनीष किशोर : रीडिंग कॉर्नर बनाने की प्रक्रिया कैसी रही? तैयारी के लिए आपने क्या-क्या किया?

कविता सिंह : एक शिक्षिका को पुस्तकालय प्रभारी बनाया गया। पुस्तकों का वर्गीकरण विद्यार्थियों की आयु, भाषा, स्तर और रुचि के आधार पर किया गया। कक्षा 1 व 2, 3 से 5 और 6 से 8 के लिए अलग-अलग पुस्तकें तय कीं। चयन में सहज-सरल भाषा, चित्रों की प्रभावशीलता, कथानक की रोचकता और स्थानीय व विद्यार्थियों के जीवन सन्दर्भ वाली पुस्तकों को प्राथमिकता दी गई। पुस्तकों का चयन शिक्षकों ने सामूहिक रूप से पुस्तकें पढ़कर किया। कुछ अच्छी पुस्तकें हैं—*महागिरी, नन्हे-मुन्ने गीत, तीन पूँछ वाला चूहा, बिल्ली के गले में घण्टी कौन बाँधेगा, बस की सैर,* आदि। दूसरे कालांश को रीडिंग कॉर्नर घण्टी के रूप में

तय किया गया है। इसमें पढ़ने के बाद विद्यार्थियों से रचनाओं पर बातचीत और पुस्तक-आधारित गतिविधियाँ की जाती हैं।

मनीष किशोर : शिक्षकों और विद्यार्थियों को रीडिंग कॉर्नर से जोड़ने के लिए आपने कौन-सी रणनीतियाँ अपनाईं?

कविता सिंह : शिक्षकों की समझ, और विभाग द्वारा निर्देशित 'प्रखर राजस्थान अभियान' ने शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को रीडिंग कॉर्नर से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। विद्यार्थियों को पठन-स्तर के अनुसार चार उपसमूहों—बीज, अंकुरण, पुष्पन और फलन—में विभाजित किया गया। हर स्तर के विद्यार्थियों के लिए चित्र पुस्तकों, छोटी कहानियों, कविताओं और सरल भाषा वाली पुस्तकों को अलग-अलग समूहों में रखा गया ताकि वे अपनी क्षमतानुसार पुस्तक चुन सकें। शुरू में शिक्षकों ने विद्यार्थियों के साथ बैठकर पुस्तकें देखीं, चित्रों पर बातचीत की, कहानी-कविताएँ सुनाईं, इससे वे धीरे-धीरे ख़ुद पढ़ने के लिए प्रेरित होने लगे।

विद्यार्थियों के साथ तरह-तरह की पुस्तकों पर लगातार काम करने से शिक्षकों में भी रीडिंग कॉर्नर की पुस्तकों के प्रति स्वाभाविक रूप से दिलचस्पी बढ़ी है। इनमें *दिवास्वप्न, बच्चों के लिए खेल क्रियाएँ, तोत्तोचान द लिटिल गर्ल एट द विंडो* जैसी पुस्तकें शामिल हैं।

मनीष किशोर : पढ़ने-लिखने की आदतों के विकास के लिए किए गए प्रयासों से शिक्षकों के शिक्षण में और विद्यार्थियों के सीखने में किस तरह के बदलाव नज़र आए?

कविता सिंह : बदलाव के लिए पुस्तकों के चयन में भी ख़ास ध्यान दिया गया। भाषा में बेहतरी लाने के लिए कहानियाँ-कविताएँ पढ़ने-सुनाने के बाद छोटी-छोटी बातचीत को बहुत महत्त्व दिया। पूछा गया कि उन्हें कहानी में क्या अच्छा लगा, कौन-सा पात्र पसन्द आया और क्यों? इससे विद्यार्थियों ने बोलना शुरू किया और धीरे-धीरे उनकी अभिव्यक्ति अधिक स्पष्ट और आत्मविश्वासी होती गई।

कल्पनाशीलता व रचनाशीलता के लिए सरल गतिविधियाँ की गईं, जैसे—कहानी का नया अन्त या शीर्षक सोचना, रचनाओं पर चित्र बनाना, किसी पात्र की तरह बात करना, आदि। कुछ विद्यार्थियों ने तो पढ़ी हुई कहानियों से प्रेरित होकर अपनी छोटी कविताएँ और क़िस्से लिखने व सुनाने शुरू कर दिए। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने धीरे-धीरे ख़ुद पुस्तकें उठानी शुरू कीं, घर ले जाने की इच्छा जताई, और ख़ाली समय में पढ़ने लगे। उनमें स्वाध्याय, पठन कौशल, भाषा, व्यवहार और आत्मविश्वास में धीरे-धीरे सुधार दिखाई देने लगा। कई विद्यार्थी ख़ुद याद दिलाते हैं कि उन्हें आज पढ़ने का समय चाहिए।

इतना ही नहीं, शिक्षकों द्वारा निरन्तर विद्यार्थियों व बड़ों की साहित्यिक व शिक्षा उपयोगी पुस्तकें पढ़ने की आदत बनने से उनमें रीडिंग कॉर्नर के लिए अच्छी पुस्तकों के चयन व उनके उपयोग करने की दृष्टि बेहतर हुई है। विषयों को पढ़ाने के नज़रिए में, विद्यार्थियों के साथ व्यवहार, उनसे संवाद व सवाल पूछने की कला में भी उल्लेखनीय सकारात्मक बदलाव दिखाई देते हैं।

मनीष किशोर : आपको इन प्रयासों में किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा?

कविता सिंह : शुरुआत में देखा गया कि कुछ विद्यार्थी पुस्तकें चुनने में संकोच करते थे, कुछ शिक्षक रीडिंग कॉर्नर को अतिरिक्त गतिविधि मानकर नियमित समय नहीं दे पा रहे थे। सीमित संसाधनों के कारण अच्छी पुस्तकों की पर्याप्त संख्या में उपलब्धता और रखरखाव भी मुश्किल था। चुनौतियों के समाधान के लिए हमने समय सारणी में लचीलापन रखा। कभी प्रार्थना के बाद, कभी अवकाश से पहले या कक्षा के अन्त में 10-15 मिनट का पठन समय तय किया। आपस में यह स्पष्ट किया कि रीडिंग कॉर्नर कोई अतिरिक्त काम नहीं, बल्कि भाषा और समझ के विकास का स्वाभाविक माध्यम है।

मनीष किशोर : विद्यालय में ऐसा सकारात्मक माहौल कैसे बनाया जिससे शिक्षक सहजता से आपके प्रयासों में योगदान दे सके?

कविता सिंह : विद्यालय में विश्वास, संवाद और सहभागिता का माहौल बनाया। कोशिश रही कि शिक्षक हर निर्णय में ख़ुद को सहभागी महसूस करें। हर विषय पर खुली चर्चा की शुरुआत की। सभी शिक्षकों से यह पूछा गया कि रीडिंग कॉर्नर को कैसे बेहतर किया जा सकता है। किसी शिक्षक ने पुस्तकों के स्तर तय करने का सुझाव दिया, तो किसी ने समय सारणी में रोज़ 15 मिनट की पठन गतिविधि जोड़ने की बात कही। ज़िम्मेदारियाँ भी आपसी सहमति से बाँटी गईं। इससे शिक्षकों को सन्देश मिला कि यह पहल किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि पूरी टीम की है।

इसी तरह नामांकन बढ़ाने में किसी ने अभिभावकों से सम्पर्क का दायित्व सँभाला। जब योजनाएँ शिक्षकों की सहमति से बनीं तब उनमें स्वाभाविक ज़िम्मेदारी और जुड़ाव भी दिखाई दिया। यह भी सुनिश्चित किया कि शिक्षकों के प्रयासों को समय-समय पर सराहा जाए। मैंने एक ऐसा सुरक्षित और भरोसेमन्द वातावरण बनाने पर विशेष ध्यान दिया जहाँ शिक्षक बिना किसी डर या संकोच के अपनी समस्याएँ, चुनौतियाँ और ज़रूरतें साझा कर सकें, तभी उनका भरोसा बढ़ता है, और प्रयासों में सक्रियता से जुड़ते हैं।

मनीष किशोर छह वर्षों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, राजस्थान में कार्यरत हैं। वे एसोसिएट प्रोग्राम के माध्यम से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन से जुड़े हैं। प्राथमिक विद्यालय स्तर पर हिन्दी एवं गणित विषयों में कार्य करते हैं, तथा उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय में भी कार्यरत हैं।

सम्पर्क : manish.kishor@azimpremjifoundation.org

पेड़ का पता

समीक्षा : प्रभात

पेड़ का पता किताब के लेखक सुशील शुक्ल जब यह लिखते हैं कि—"पृथ्वी पर एक पेड़ मेरा पता है" तो इसके मायने यही हैं कि पेड़ का पता पृथ्वी पर हम इन्सानों का पता भी है। जिस दिन पृथ्वी से पेड़ का पता ग़ायब हो जाएगा, हम इन्सानों का पता भी ग़ायब हो जाएगा।

महज़ छब्बीस पेज की इस पतली-सी किताब में गद्य के उन्नीस छोटे-छोटे टुकड़े हैं। इक्कीस साँस में पूरी किताब पढ़ी जा सकती है। गद्य के इन टुकड़ों पर तारीख़ें भी लिखी होतीं तो हम इस किताब को एक लेखक की डायरी भी कह सकते थे, क्योंकि इनमें गहरा आत्मसंवाद और निजता है। एक इन्सान अपने आस-पास को कैसे देखता है, कैसे महसूस करता है। देखते और महसूस करते हुए क्या सोचता है, यही सब इनमें लिखा है। पढ़ते हुए किसी के भी मन में ऐसी इच्छा जाग सकती है कि—काश! मैं भी ऐसे लिखा करूँ।

लेखक : सुशील शुक्ल
चित्र : तापोषी घोषाल
पृष्ठ संख्या : 26
भाषा : हिन्दी
प्रकाशक : जुगनू प्रकाशन

किताब में हरेक गद्य के टुकड़े का एक नाम है—वो तीन पेड़, बादलों से पानी मिला तो..., नेम प्लेट, कराची का चौसा, गाय की डायरी, एक भूत की डायरी, अकेला जूता, मैं पृथ्वी को गले लगाना चाहता हूँ, आदि-आदि। ये नाम ही अपने-आप में ऐसे हैं कि कोई शिक्षक चाहें तो अपनी कक्षा में हरेक बच्चे को एक-एक नाम की पर्ची दे सकते हैं, और कह सकते हैं कि इस नाम को पढ़ो और इसे पढ़कर जो तुम्हारे मन में आता है उसे एक-दो पैराग्राफ़ में लिखो। फिर हरेक बच्चे ने जो-जो लिखा उसे कक्षा के सारे बच्चे सुन सकते हैं। उसके बाद लेखक ने क्या लिखा है, उसे पढ़कर देख सकते हैं। ऐसा करना कक्षा में कमाल कर सकता है।

ये एक ऐसे इन्सान के लिखे गद्य के टुकड़े हैं जो क़ुदरत को देखकर विस्मय से भर जाता है। इन्हें पढ़ते हुए हम सुशील शुक्ल को विस्मित होते हुए देख सकते हैं, और ऐसी विस्मयजनक भाषा रचते हुए देख सकते हैं जो गद्य और कविता के अलगावों के पार चली गई है।

"जहाँ वो फ़र्नीचर की बड़ी दुकान है, वहीं तीन पेड़ थे। दो इमलियाँ और एक नीम।" वे एक दिन इस चार मंज़िला दुकान में दो मंज़िल तक चढ़ते हैं, इमली के पेड़ पर चढ़ने की तरह। दुकान से निकलने के बाद सोचते हैं—"मैं हरा सूरज बनाता हूँ तो टीचर डाँटते हैं। अजीब बात है कोई पेड़ से फ़र्नीचर की दुकान बनाता है तो उसे कोई नहीं डाँटता।"

फ़र्नीचर की दुकान तीन खोए हुए पेड़ों का पता है। जंगलों को काटा जा रहा है, इसके मायने ये भी हैं कि उनमें रहने वाले आदिवासियों को..., पृथ्वी से ग़ायब किया जा रहा है। एक ओर हम समतापूर्ण समाज रचने का सपना देखते हैं जहाँ सबको जीने का समान अधिकार है, दूसरी ओर कुछ लोगों के लालच का पेट भरता ही नहीं है, चाहे इसके लिए पेड़ों, जंगलों, लोगों को ही क्यों न ग़ायब करना पड़े।

कराची का चौसा, सेठ और उसका आदमी, नेम प्लेट, आदि गद्य के ऐसे टुकड़े हैं जिनसे उठने वाले सवालों पर कक्षा में विचार-विमर्श किया जा सकता है। दो देशों के बीच के मानवीय पहलू, ग़ैर-बराबरी, पलायन की त्रासदी, आदि मुद्दों पर चर्चा की जा सकती है।

बच्चों के साहित्य के इलाक़े में सुशील शुक्ल कल्पनाशीलता के जादूगर हैं। उनकी कल्पनाशीलता से न भाषा बच पाती है न जीवन। भाषा उन्हें जितना देती है, भाषा को अपनी कल्पनाशीलता से सृजित कर वे उतना ही भाषा को वापस लौटा देते हैं। जीवन उन्हें जितना दिखाता है, अपनी कल्पनाशीलता से वे जीवन को ऐसा दिखा देते हैं कि जीवन फिर से ख़ुद को देखने पर विवश हो जाए—"जब पेड़ पर फूल आते तो पेड़ की परछाई को भी फूल आते। जब पेड़ को फल आते तो पेड़ की परछाई को भी फल आते। पतझड़ में पत्ते झरते तो उनके साथ उनकी परछाई भी झर जाती।"

सुशील शुक्ल ने कल्पनाओं का ऐसा उत्खनन किया है कि उनकी कुछ कल्पनाओं की मार्मिकता हिला देती है। एक गिरा दिए घर की 'नेम प्लेट' देखकर वे लिखते हैं–"नहीं गिराया जाता तो कम-से-कम पच्चीस साल तो बना ही रहता।" ऐसे में यह लिखना कि–"नेम प्लेट पर एक नाम लिखा है। रहते तो उसमें ज़्यादा लोग होंगे।"

हम आज जिस पंखे के नीचे हवा खाते बैठे या लेटे हैं। सुशील पूछते हैं–"कौन चला रहा है यह पंखा?" और जवाब की तलाश में वे खदान में काम कर रहे उन कामगारों तक पहुँच जाते हैं जो कोयला निकाल रहे हैं, बिजली बना रहे हैं।

एक इन्सान जो हवा में हाथ लहराते हुए ख़ाली स्थान से लिपटता है। सुशील कहते हैं–"वहाँ एक पेड़ होता था। आज भी होता तो कौन उसे पागल कहता।"

किताब में तापोषी घोषाल के चित्र भी इतने ही अनूठे हैं। शब्द के लिए लिखे को चित्र के लिए लिखा भी समझा जाए।

प्रभात शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से कार्य रहे हैं। आपके दो कविता संग्रह *अपनों में नहीं रह पाने का गीत* साहित्य अकादमी से व *जीवन के दिन* राजकमल से प्रकाशित है। बच्चों के लिए कविता, कहानियों की कई किताबें प्रकाशित। साहित्य सृजन में उल्लेखनीय योगदान के लिए आपको युवा कविता समय सम्मान, 2012, सृजनात्मक साहित्य पुरस्कार 2010 और बिग लिटिल बुक अवार्ड 2019 प्रदान किया गया है।

जय भीम

समीक्षा : दिनेश मडगाँवकर

जय भीम बच्चों के लिए एक अनूठी पुस्तक है। डॉ बी आर अम्बेडकर को सुपरहीरो के रूप में चित्रित करने वाली यह पहली पुस्तक है, जो कहानी को पारम्परिक रूप से कहने की शैली के बजाय एक नए ढंग से प्रस्तुत करती है। यह बच्चों के लिए लिखी गई शृंखला के अन्तर्गत आती है, जो छोटी होने के बावजूद बहुत प्रभावशाली है। यह संवैधानिक मूल्यों को वीरता और न्याय के लेंस के माध्यम से प्रस्तुत करने के लिए एक जीवन्त कथा शैली का उपयोग करती है।

लेखक : विकास आर मौर्य
चित्रांकन : सुरेश आर अर्कसाली
आयु वर्ग : 6-12 वर्ष
पृष्ठ संख्या : 20
भाषा : कन्नड़
प्रकाशक : नवकर्नाटक प्रकाशन, बेंगलूरु

लेखक, विकास आर मौर्य, कहानी कहने में एक विशिष्ट प्रकार का प्रयोग करते हैं। वे रचनात्मकता और साहस के साथ, अम्बेडकर को पाठ्यपुस्तकों तक सीमित एक ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक सजीव, साँस लेने वाले ऐसे सुपरहीरो के रूप में देखते हैं जो नीले रंग के कपड़े पहने, क़लम से लैस, कमज़ोरों की रक्षा के लिए हमेशा तैयार है। यह अवधारणा बच्चों को बहुत अच्छी लगती है क्योंकि वे सुपरमैन और स्पाइडरमैन जैसे प्रसिद्ध हीरो से काफ़ी प्रभावित रहते हैं। पुस्तक की यही बात उन्हें अम्बेडकर की ओर आकर्षित करती है, और वास्तविक जीवन के एक ऐसे व्यक्ति से परिचित कराती है जिनका राष्ट्रीय महत्त्व बहुत अधिक है।

कहानी संविधान की प्रस्तावना से लिए गए वाक्यांश 'हम, भारत के लोग' के साथ शुरू होती है, और पूरी पुस्तक में एक ऐसा नारा बन जाती है जो कहानी को न्याय और समानता की संवैधानिक भावना से जोड़ता है।

सुरेश आर अर्कसाली द्वारा बनाए गए चित्र बेहद शानदार हैं, और कहानी को जीवन्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये देखने में तो आकर्षक हैं ही, भावनात्मक रूप से भी बहुत प्रभावित करते हैं। दिए गए हर दृश्य की भावना, ताक़त और प्रतीकात्मकता को चित्र बहुत अच्छे से दर्शाते हैं। चित्रों में नीले रंग की प्रमुखता है। यह रंग अम्बेडकर को एक महान नायक के रूप में प्रस्तुत करने के साथ-साथ न्याय के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करता है। कहीं-कहीं लाल और भूरे रंग का इस्तेमाल है। इनका इस्तेमाल समाज की नकारात्मक शक्तियों द्वारा उत्पन्न उथल-पुथल और संघर्षों को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाने के लिए किया गया है। इनसे घटनाओं में गहराई और भावनात्मकता जुड़ जाती है। रंगों का यह चयन कहानी के कुल प्रभाव को मज़बूत करता है, और उठाए जा रहे मुद्दों के तक़ाज़े को व्यक्त करने में मदद करता है–चाहे वह असमानता हो, शोषण या प्रतिरोध हो।

चित्र कहानी का साथ ही नहीं देते, बल्कि इसे विस्तार भी देते हैं। वे कहानी को शक्तिशाली बिम्बों के साथ चित्रित करते हैं जो जटिल सामाजिक वास्तविकताओं को इस तरह से व्यक्त करती हैं कि बच्चे इसे तुरन्त समझ सकें। फिर चाहे वह चित्रण अम्बेडकर द्वारा संविधान की सहायता से बच्चों की रक्षा करना हो, या अन्याय का सामना करना, हर चित्रण सशक्तिकरण और न्याय के मूल सन्देश को पुष्ट करता है।

पूरी कथा प्रतीकात्मक विवरणों से समृद्ध है। जैसे—एक निजी स्कूल ग़रीब परिवारों के बच्चों को प्रवेश देने से इन्कार कर देता है, जब तक कि सुपरहीरो उनके शिक्षा के अधिकार की रक्षा करने के लिए नहीं आ जाता। एक अन्य एपिसोड में, वह एक अमीर बिल्डर द्वारा चलाए जा रहे बुलडोज़र को रोकता है, और एक जलते हुए गोदाम से बाल मज़दूरों को बचाता है। ऐसा करते हुए वह उन लोगों को नैतिकता का पाठ पढ़ाता है जो शक्तिहीनों का शोषण करते हैं। उसकी आवाज़ में दृढ़ता और स्पष्टता के साथ यह वाक्य गूँजता है, "ग़रीबों के बच्चे आपके घर की सम्पत्ति नहीं हैं।" और उसका यह वाक्य लम्बे समय से चले आ रहे अन्याय और विशेषाधिकार को चुनौती देता है।

कहानी में आगे एक धनी, अभिमानी व्यक्ति अपने पौराणिक 'माया घोड़े' पर सवार होकर मज़ाक़ उड़ाते हुए कहता है, "अगर तुम्हारे जैसे सौ लोग भी पैदा हो जाएँ तो मैं उन्हें भी अपने दिमाग़ की प्रतिभा से मात दे दूँगा।" इस अहंकार का सामना भी एकजुट नारे से होता है, 'हम, भारत के लोग!' अभिमानी व्यक्ति बड़ी उग्रता से इसका प्रतिकार करता है। बच्चे और बड़े, सभी डर के मारे पीछे हट जाते हैं, लेकिन फिर उन्हें पता चलता है कि वे तो अम्बेडकर और उनके साथियों द्वारा उठाई हुई एक अदृश्य ढाल से सुरक्षित हैं। और वह ढाल है 'संविधान', और इस पूरी अराजकता के ऊपर 'जय भीम' का नारा गूँज रहा है।

इस मार्मिक और प्रतीकात्मक कहानी में लेखक एक शक्तिशाली सत्य को व्यक्त करने में सफल होते हैं : "संविधान केवल एक क़ानूनी दस्तावेज़ नहीं है; यह एक जीवन्त शक्ति है जो लोगों, विशेष रूप से उत्पीड़ितों, की सहायता के लिए उनके साथ खड़ी है।" रोमांचकारी दृश्यों और जीवन्त पात्रों के माध्यम से, वह बच्चों में न्याय, समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति गहरा सम्मान पैदा करते हैं।

बच्चों के लिए ऐसी पुस्तकें कम ही हैं जो संविधान के महत्त्व और अम्बेडकर के दृष्टिकोण को इतने प्रभावी ढंग से व्यक्त कर पाई हैं। *जय भीम* एक ऐसी पुस्तक है जिसे हर माता-पिता को अपने बच्चों के साथ पढ़ना चाहिए, न केवल कहानी की दृष्टि से, बल्कि साहस, संवेदना और संवैधानिक जागरूकता के उस सन्देश के लिए भी जो इसमें दिया गया है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

दिनेश मडगाँवकर अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु के कम्युनिकेशन विभाग में कन्नड़ इनिशिएटिव टीम के सदस्य हैं। उन्होंने एक लघु कहानी संग्रह लिखा है, और बच्चों की पुस्तकों का कन्नड़ में अनुवाद किया है। उन्होंने क्षेत्रीय भाषा के कॉपीराइटर के रूप में भी काम किया है।

आइए, करके देखें

गतिविधि 1 : ढूँढ़ें और मिलाएँ

इस गतिविधि के ज़रिए विद्यार्थी सजीव-निर्जीव के अन्तर को ठीक से समझ सकेंगे। उनकी अवलोकन, वर्गीकरण क्षमता और तार्किकता बढ़ेगी। यह गतिविधि कक्षा 2 और 3 के विद्यार्थियों के लिए बेहतर होगी।

समूह का आकार : 24 विद्यार्थी (या कोई भी सम संख्या)

आवश्यक सामग्री :

- सजीव चीज़ों के अलग-अलग चित्रों वाले 12 कार्ड (विद्यार्थियों की संख्या के आधार पर यह संख्या कम या ज़्यादा होगी।)
- निर्जीव चीज़ों के अलग-अलग चित्रों वाले 12 कार्ड

नोट : *शिक्षक पुराने समाचार पत्रों / पत्रिकाओं से चित्र काट सकते हैं, और उन्हें इस्तेमाल किए हुए किसी पुराने चार्ट, घरेलू सामान के पैकेट, आदि से बने कार्ड पर चिपका सकते हैं। वे स्वयं भी चित्र बना सकते हैं, और विद्यार्थियों को भी इसमें शामिल कर सकते हैं।*

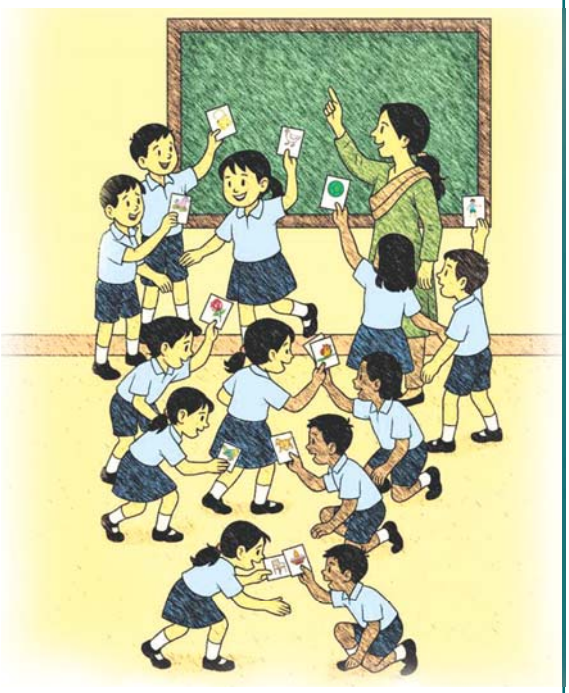

चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया

सजीव चीज़ों के लिए सुझाव : मुर्ग़ी, लड़का, लड़की, बन्दर, गौरैया, मेंढक, बरगद का पेड़, आम का पेड़, चींटी, मकड़ी, छिपकली, लीची का पेड़, गुलाब, बकरी, भैंस, हाथी, गाय, तोता, मोर, कबूतर, मछली, बिल्ली, चाचा, तितली, पौधा, गन्ना, ऊँट, कौआ, दोस्त, मामा, आदि।

निर्जीव चीज़ों के लिए सुझाव : मिट्टी का बर्तन, स्कूल बैग, साइकिल, चॉक, क्रिकेट बैट, किताब, रिक्शा, पंखा, स्टील की थाली, चारपाई, पतंग, पत्थर, लालटेन, दरवाज़ा, फ़ोन, चप्पल, चम्मच, ब्लैकबोर्ड, टेबल, लाइट बल्ब, बस, स्कूटर, ईंट, खिड़की, दीवार, छाता, गुड़िया, घण्टी, झण्डा, घड़ी, चाय, आईना, पानी की बोतल, आदि।

आसान स्तर

सही मिलान करें।

चरण 1 :

प्रत्येक विद्यार्थी को मोड़कर रखा हुआ कोई-सा भी कार्ड दें, और निर्देश दें कि वह इसे अभी न खोले।

चरण 2 :

- शिक्षक के संकेत देने पर (जैसे–रेडी, स्टेडी, गो!) विद्यार्थी अपने कार्ड खोलते हैं, और चित्र को देखते हैं।
- प्रत्येक विद्यार्थी को एक ऐसा साथी ढूँढ़ना होगा जिसके पास उसी वर्ग (सजीव या निर्जीव) का कार्ड हो।
- जब उन्हें अपने कार्ड का मैच मिल जाता है वे एक साथ बैठते हैं।

मध्यम स्तर

पहली वाली प्रक्रिया को दोहराएँ। लेकिन इस बार प्रत्येक विद्यार्थी को एक ही वर्ग के कार्ड वाले दो अन्य विद्यार्थियों को ढूँढ़ना होगा। मसलन, इस बार अगर किसी के पास निर्जीव चीज़ का कार्ड है तो उसे 2 ऐसे साथी ढूँढ़ने हैं जिनके पास निर्जीव चीज़ों का कार्ड हो। इस बार तीन का समूह बनाना है।

कठिन स्तर

एक जैसी थीम वाले साथी को ढूँढ़ें।

इस प्रक्रिया को इस बार कुछ इस तरह दोहराना है कि प्रत्येक विद्यार्थी अपने थीम कार्ड वाले दो अन्य साथियों को ढूँढ़े। यहाँ शिक्षक को थीम के बारे में स्पष्ट तरह से बताना पड़ेगा। मसलन, अगर किसी के पास जानवर (बिल्ली) का कार्ड है तो उन्हें ऐसे दो साथियों को ढूँढ़ना है जिनके पास बन्दर, गाय, भैंस, घोड़ा, आदि के कार्ड हों। इसी प्रकार, यदि किसी के पास वाहन (साइकिल) का कार्ड है तो उन्हें ऐसे दो साथियों को ढूँढ़ना है जिनके पास स्कूटर, रिक्शा, बस, आदि के कार्ड हों। और इस बार भी 3 समूह बनाना है।

शिक्षकों के लिए सुझाव :

प्रत्येक राउंड के बाद कार्डों को आपस में मिलाएँ। बाद के राउंड में नए कार्ड पेश करें ताकि विद्यार्थियों को कई उदाहरणों से परिचित कराया जा सके।

गतिविधि 2 : शान्त रास्ते

इस गतिविधि के ज़रिए विद्यार्थियों को टीम के साथ मिलकर खेलने का आनन्द मिलेगा। साथ ही पता चलेगा कि किसी भी समस्या से निकलने के लिए सहयोग कितना ज़रूरी है। इसे कक्षा 3 से 5 तक के विद्यार्थियों के साथ कर सकते हैं। इस खेल के लिए खुली जगह का होना ज़रूरी है।

समूह का आकार : विद्यार्थियों की कोई भी सम संख्या। विद्यार्थियों के जोड़े बनाएँ (हर जोड़े में 1 ड्राइवर + 1 वाहन)।

आसान स्तर

चरण 1 : जोड़ी बनाना।

- विद्यार्थियों के जोड़े बनाएँ। एक विद्यार्थी वाहन बनेगा और दूसरा ड्राइवर।

चरण 2 : वाहन बने हुए विद्यार्थी की आँखों पर पट्टी बाँधें।

चरण 3 : मौन संकेतों का निर्माण करें।

- प्रत्येक जोड़ा मौन संकेतों पर निर्णय लेता है जिसका उपयोग ड्राइवर वाहन को निर्देशित करने के लिए करेगा। उदाहरण के लिए :
  - दाएँ कन्धे पर एक थपकी = दाएँ मुड़ें
  - बाएँ कन्धे पर एक थपकी = बाएँ मुड़ें
  - पीठ पर दो थपकी = आगे बढ़ें
  - आस्तीन पर एक हल्का झटका = रुकें
  - दोनों कन्धों पर हल्की थपकी = पीछे की ओर चलें

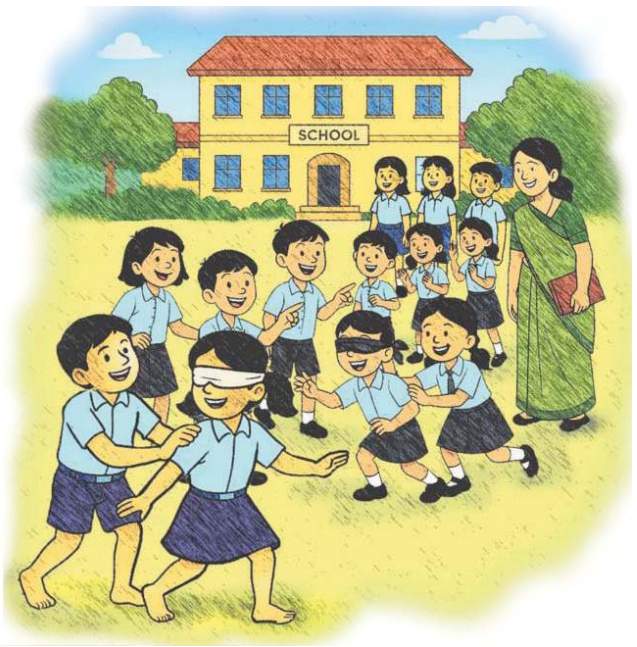

चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया

चरण 4 : एक सरल रास्ते का मार्गदर्शन (नेविगेशन) करें।

- चॉक की लाइनों की मदद से एक सरल मार्ग बनाएँ।
- ड्राइवर पीछे खड़ा होता है, और पहले से निश्चित किए गए संकेतों का उपयोग करके अपने वाहन को निर्देशित करता है।

चरण 5 : भूमिकाएँ बदलें।

- एक बार यह गतिविधि हो जाने के बाद विद्यार्थियों से भूमिकाएँ बदलने, और खेल को दोहराने के लिए कहें। ड्राइवर वाहन बन जाता है और वाहन ड्राइवर बन जाता है।

कठिन स्तर

- इसमें समय सम्बन्धी चुनौती या छोटी वस्तु उठाने का कार्य भी जोड़ें।
- सोच-विचार को प्रोत्साहित करें : जब आप वाहन थे तो आपको कैसा लगा? क्या आपका सम्प्रेषण स्पष्ट था? देखने या बोलने की बजाय स्पर्श पर निर्भर होना कैसा लगा? आपको अपने साथी पर भरोसा करने में किस बात ने मदद की?

शिक्षकों के लिए सुझाव

- सुरक्षा का ध्यान रखें।
- चर्चा करें कि हम शब्दों के बिना भी कैसे बातचीत करते हैं। यह गतिविधि समानुभूति का निर्माण करने और अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों को समझने के लिए बहुत बढ़िया है।

ये गतिविधियाँ शिल्जा सेमुएल बंसरीयार ने सुझाई हैं। वे अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी बेंगलूरु की डिज़ाइन टीम की सदस्य हैं।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

गतिविधि 3 : फल और सब्ज़ी

- यह गतिविधि 10–15 बच्चों के समूह में खेली जा सकती है। इसमें हार-जीत जैसी कोई बात नहीं, और सभी बच्चों को बराबर मौक़ा मिलता है। सबकी बारी आती है।

चित्रांकन : शिवेन्द्र पांडिया

आसान स्तर

- इस खेल में किसी एक बच्चे को स्वैच्छिक रूप से आगे आने को कहते हैं। वह अपने सिर पर एक टोकरी लिए होने का अभिनय करता हुआ गोल घेरे में खड़े हुए बच्चों के पास घूमते हुए जाएगा। वह फल, फूल, सब्ज़ी कहता हुआ गोल घेरे में अन्दर की तरफ़ घूमेगा। वह किसी एक बच्चे के पास रुककर इन तीन में से कोई एक शब्द बोलेगा—फल या फूल या फिर सब्ज़ी। जिस बच्चे के सामने खड़े होकर वह जो भी शब्द बोलेगा, सामने वाले बच्चे को उसका एक नाम बताना होगा। उदाहरण के लिए, अगर बच्चे ने फूल शब्द कहा तो दूसरे बच्चे को एक फूल का नाम बताना है और यदि फल शब्द कहा तो दूसरे बच्चे को कोई एक फल का नाम बताना है। यदि सब्ज़ी शब्द कहा तो एक सब्ज़ी का नाम बताना होगा। यह जल्दी-जल्दी होगा और बच्चों को सतर्क रहना होगा कि उनके सामने तीन में से कोई भी शब्द आ सकता है। नहीं बता पाने या ग़लत नाम बताने पर टोकरी उस बच्चे के सिर पर आएगी और अब वह घूमेगा।

कठिन स्तर

- पहले की ही तरह खेल को शुरू करने के बाद अब इस चरण में तीन आवाज़ लगाते हुए बच्चा घूमेगा, पर अब वह किसी भी बच्चे के सामने रुककर एक नहीं, बल्कि दो शब्द बोल सकता है। उदाहरण के लिए, फल-फूल। ऐसे में सामने वाले बच्चे को एक फल और एक फूल का नाम बताना होगा। अगर उसने फूल-सब्ज़ी कहा तो एक फूल और एक सब्ज़ी का नाम बताना होगा।
- इसी तरह कठिनता का एक और स्तर बढ़ाते हुए अगले चरण में तीन शब्द बोलने को कहा जा सकता है, और अब सामने वाले बच्चे को एक फल, एक फूल और एक सब्ज़ी का नाम बताना होगा।

यह गतिविधि भोपाल के अनिल सिंह ने सुझाई हैं। वे टाटा ट्रस्ट के पराग इनिशिएटिव में बाल साहित्य एवं पुस्तकालय संवर्धन के काम से जुड़े हैं।

सम्पादक के नाम

आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री और सुपरवाइज़र ने इस अंक को पढ़ा और सराहा

विशेषांक में सभी लेख शाला-पूर्व शिक्षा से जुड़े महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को उजागर करते हैं। श्रेष्ठा मिश्रा और रजत शर्मा द्वारा लिखा गया लेख 'आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री की मदद के लिए सहयोगी तंत्र की भूमिका' एक केन्द्र और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री के विकास में सुपरवाइज़र की भूमिका को बहुत ही सकारात्मक ढंग से प्रस्तुत करता हैं। लेखक ने कहा है कि सुपरवाइज़र आँगनवाड़ी केन्द्र में बदलाव के प्रतिनिधि होते हैं, और उनके द्वारा किए गए छोटे-छोटे प्रयास सेक्टर में सराहनीय बदलाव के वाहक हो सकते हैं। एक सुपरवाइज़र की भूमिका आँगनवाड़ी के पेशेवर विकास में भी सहायक है। इस अंक को मैंने कुछ आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों और सुपरवाइज़र के साथ साझा किया। उन्होंने इसे पढ़ा और सराहा।

रूपाली वर्मा, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

यह समझना मज़ेदार रहा कि बच्चे एक ही गति से विकसित नहीं होते

पाठशाला भीतर और बाहर के 26वें अंक को पढ़कर समझ बनी कि प्रारम्भिक बाल्यावस्था विकास का अन्तिम लक्ष्य विकासशील बच्चा है न कि विषयवस्तु। मैं अपने स्वयं के आस-पास भी देख पाती हूँ कि हर समय पढ़ाना क्या है, इसी पर चर्चा केन्द्रित होती है, न कि इस पर कि सीखा कैसे जाता है, या बच्चों की स्वयं की सोच कैसे विकसित होती है। इस अंक से यह समझना मज़ेदार रहा कि बच्चे एक ही गति से विकसित नहीं होते, अपितु उनके सीखने के पैटर्न को समझना ज़रूरी है। साथ ही, बच्चों के सीखने में देरी को सकारात्मक रूप से कैसे देखा जाए। मैंने आँगनवाड़ियों का केवल नाम सुना है, पर अब मैं स्वयं वहाँ जाकर देखना चाहूँगी कि बच्चे वहाँ क्या-क्या और कैसे सीख रहे हैं।

संध्या सिंह, शिक्षिका, नगर निगम प्राथमिक बाल विद्यालय, महरौली दरगाह, नई दिल्ली

यह लेख हमारे लिए मार्गदर्शिका की तरह है

सुनील कुमार साह के लेख 'आँगनवाड़ी केन्द्रों का वातावरण आनन्ददायक होना ज़रूरी' में कही गई यह बात, कि इन्हें केवल पोषण केन्द्र न मानकर आनन्ददायक शिक्षण केन्द्र बनाना चाहिए, पूरी तरह सही है। लेखक ने सही कहा है कि हम अकसर भारी-भरकम सीखने के सिद्धान्तों के बोझ तले दब जाते हैं जिससे काम का आनन्द ख़त्म हो जाता है। रंगों के साथ खेलना या स्थानीय बीजों का उपयोग करना, यह बताता है कि बच्चों को सिखाने के लिए महँगे संसाधनों की नहीं, बल्कि एक सकारात्मक माहौल की ज़रूरत होती है।

लेख याद दिलाता है कि यदि हम बच्चों को ख़ुश रखेंगे तो सीखना अपने-आप हो जाएगा। यह यह लेख हमारे लिए एक मार्गदर्शिका है।

शाइस्ता, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री, केन्द्र बंगला पूठरी, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

नाटक से सीखना रचनात्मक और मज़ेदार बनता है

विशेषांक में प्रकाशित 'शिक्षा की शुरुआत और नाटक' सबसे अच्छा लगा। यह विषय बच्चों के स्वाभाविक सीखने के तरीक़े पर आधारित है। नाटक में बच्चे कल्पना के माध्यम से दुनिया को समझते हैं। यह बच्चों की रचनात्मकता को खुलकर विकसित करता है। इससे बच्चों की भाषा और संवाद क्षमता बेहतर होती है। वे खेल-खेल में सामाजिक भूमिकाएँ सीखते हैं, और अपनी भावनाएँ सुरक्षित तरीक़े से व्यक्त कर पाते हैं। यह सीखने को बोझ नहीं, आनन्द बनाता है। इस प्रकार, नाटक एक प्रभावी शिक्षण माध्यम बनता है। इसमें किसी दबाव के बिना सीखने पर ज़ोर दिया गया है। यह प्रारम्भिक शिक्षा के उद्देश्य से अच्छी तरह जुड़ता है।

एस डी फ़ारूक़, सरकारी माध्यमिक पाठशाला गुन्नली तालुका, बीदर, कर्नाटक

मैं बच्चों को लोकतांत्रिक अधिकार देने के प्रयास कर रहा हूँ

अंक 24 में प्रकाशित किशन लाल सालवी का लेख 'भय से बाधित होता है सीखना' उस सामाजिक सोच पर सीधी चोट करता है जिसमें माना जाता है कि यदि बच्चों को सिखाना है तो मूलतः पीटना ही उपचार है। और, यह अकसर बहुत-से मंचों पर सुनने

को भी मिलता है। शिक्षक के कुछ क़दम, जैसे कक्षा से डण्डे को हटाना, बच्चों के शिक्षण में उनकी भाषा का उपयोग, उन्हें स्वतंत्र अभिव्यक्ति के मौक़े देना, गतिविधि-आधारित पढ़ाई, रोक-टोक मुक्त वातावरण, इत्यादि बहुत आवश्यक हैं। ऐसे ही हुए कुछ अपने अनुभवों से मुझे समझ में आता है कि बच्चों को लोकतांत्रिक अधिकार देने के प्रयास करना चाहिए। यह प्रयास मैं 15 वर्षों से अपने शिक्षण में कर रहा हूँ।

प्रमोद कुमार ध्रुव, शिक्षक, शासकीय प्राथमिक शाला अरौद, धमतरी, छत्तीसगढ़

बच्चे जब खेल रहे होते हैं तब दरअसल वे सीख रहे होते हैं

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा विशेषांक छोटे बच्चों के बारे में काफ़ी रोचक और सटीक जानकारी देता है। यह आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों और शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है। जिगिशा शास्त्री का आलेख 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था के शिक्षकों द्वारा अकसर पूछे जाने वाले प्रश्न' में जो सवाल उठाए गए हैं, उनके उत्तर बच्चों के बारे में आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों के साथ-साथ माता-पिता की समझ को भी पुख़्ता करते हैं। अभिभावक आसानी से समझ सकते हैं कि बच्चे जब खेल रहे होते हैं तब दरअसल वे सीख रहे होते हैं। आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियाँ और अभिभावक यह भी समझ पाते हैं कि छोटे बच्चे एक जगह पर अधिक देर तक बैठना पसन्द नहीं करते हैं। वे बार-बार जगह भी बदलते हैं, और खिलौने भी बदलते रहते हैं। यह उनके सतत सीखने की प्रक्रिया है।

धर्मपाल गंगवार, प्रधान अध्यापक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय हल्दी पचपेड़ा, खटीमा, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

'उम्मीद जगाते शिक्षक' में आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री से हुई बातचीत प्रेरणादायक रही

पाठशाला भीतर और बाहर के 26वें अंक में 'उम्मीद जगाते शिक्षक' स्तम्भ के लिए निवेदिता तिवारी द्वारा आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री सुनीता सिंह से की गई बातचीत 'मेरे आँगनवाड़ी केन्द्र की बदलाव यात्रा' काफ़ी मायने रखती है। इसे मैंने अपने सेक्टर की सभी कार्यकर्त्रियों एवं सहायिकाओं के साथ साझा किया ताकि लेख से प्रेरणा लेकर वह भी अपने आँगनवाड़ी केन्द्र को नवीन रूप देकर इसे बच्चों के अनुकूल बनाने का प्रयास करें। इससे आँगनवाड़ी पर शाला-पूर्व शिक्षा सेवा के तहत बच्चों के नामांकन में वृद्धि हो सकेगी।

संगीता जैन, महिला सुपरवाइज़र, जयपुर, राजस्थान

सम्पादकीय ने विशेषांक के लेखों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया

विशेषांक में उपलब्ध विचार आँगनवाड़ी केन्द्र के हर शिक्षक, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री और सुपरवाइज़र के लिए अत्यन्त लाभप्रद हैं। सीखने-सिखाने के इस नए दौर में इस तरह के विचार प्रारम्भिक शिक्षा के शिक्षक और विद्यार्थी, दोनों के लिए उपयोगी हैं क्योंकि आज की शिक्षा शिक्षक-केन्द्रित न रहकर विद्यार्थी-केन्द्रित है। विद्यार्थियों को शिक्षित करना चुनौतीपूर्ण मसला माना गया है। माना जाता है कि विद्यार्थी को वही शिक्षक अच्छा लगता है जो विद्यार्थी को सबसे पहले पढ़ लेता है। अंक का सम्पादकीय, पत्रिका के हर लेख को पढ़ने के लिए आकर्षित करता है।

शशिधर सिंह, सरकारी कॉलेज, माध्यमिक विभाग, हारन हल्ली, कर्नाटक

आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति और रचनात्मकता बढ़ती है बातचीत को लिखने से

पाठशाला भीतर और बाहर के 25वें अंक में विनीता चौकसे के लेख 'कक्षा में बातचीत है ज़रूरी' को पढ़ा। वैसे तो मैं भी बच्चों के साथ उनके अनुभवों पर बातचीत करती हूँ, लेकिन बातचीत की ज़रूरत और उसका पढ़ने-लिखने में उपयोग नहीं समझ पाती थी। इस लेख में, बच्चों के साथ की गई बातचीत के उदाहरणों से समझ आया कि हमें बच्चों की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए, उनकी बात का सम्मान करना चाहिए, और उन्हें बात करने के भरपूर मौक़े देने चाहिए। साथ ही, बच्चों द्वारा बातचीत को लिखने से उनमें आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति की क्षमता और रचनात्मकता का विकास होता है।

प्रीति सक्सेना, प्राथमिक शिक्षिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय हेडक्वार्टर नं. 8, लेटा, जालौर, राजस्थान

किसी भी बच्चे को सीखने की प्रक्रिया से वंचित न रहना पड़े

अंक 26 'आँगनवाड़ी केन्द्र में स्नेहपूर्ण माहौल का निर्माण' लेख में लेखिका संध्यावाली गुप्ता बताती हैं कि जब वे बच्चों के साथ किसी विशेष विषय या थीम पर काम करती हैं, उस विषय से जुड़ी सभी आवश्यक सामग्री पहले से ही केन्द्र में उपलब्ध कराती हैं। इससे सभी बच्चे गतिविधियों में समान रूप से भाग ले पाते हैं। बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि चाहे जैसी भी हो, वे यह ध्यान रखती हैं कि किसी भी बच्चे को सीखने और गतिविधियों में भाग लेने से वंचित न रहना पड़े।

ज़िया अंसारी, पुस्तकालय प्रभारी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

नाटक एक अलग गतिविधि नहीं, रोज़मर्रा की शैक्षिक प्रक्रिया का हिस्सा बने

विशेषांक में प्रकाशित पारुल बत्रा दुग्गल का लेख आँगनवाड़ी में नाटक को शैक्षिक प्रयोग के रूप में अपनाने की प्रक्रिया को स्पष्ट चरणों में सामने रखता है।

- इससे यह समझ बनती है कि सीखने की दिशा बच्चों के अनुभव और प्रतिक्रियाओं से तय होती है।
- आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री की भूमिका को लेख में निर्देशक या नियंत्रक के बजाय सहायक और अवलोकनकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह एक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक अन्तर्दृष्टि है।
- यह प्रयोग किसी विशेष 'गतिविधि' तक सीमित नहीं रहा, बल्कि आँगनवाड़ी की रोज़मर्रा की शैक्षिक प्रक्रिया का हिस्सा बना। इससे नाटक को अलग से 'करवाने' के बजाय सीखने में एकीकृत करने की दृष्टि सामने आती है।
- इस प्रयोग की सीमाओं और अनिश्चितताओं को भी स्वीकार किया गया है, जैसे सभी बच्चों की समान भागीदारी न होना या प्रक्रिया का पूर्वानुमेय न होना। यह लेख को अधिक विश्वसनीय और ज़मीनी बनाता है।

यह लेख आँगनवाड़ी स्तर पर नाटक को शैक्षिक प्रयोग के रूप में समझने और अपनाने की एक गम्भीर, अनुभवजन्य और विचारोत्तेजक प्रस्तुति है।

भुवन तिवारी, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश

सामुदायिक सहभागिता और रचनात्मकता ने बदली बन्द होते विद्यालय की तस्वीर

पाठशाला भीतर और बाहर के अंक 24 में 'एक विद्यालय का रूपान्तरण' लेख में दर्शाया गया है कि कैसे संवेदनशील शिक्षकों की एक समर्पित टीम ने साथ मिलकर समुदाय और विद्यालय के बीच बनी खाई को कम किया। समर्पित शिक्षकों ने बच्चों के सीखने को समुदाय के समक्ष साझा करने को विशेष महत्त्व दिया। यह प्रयास बन्द होते स्कूल के लिए एक आशा की किरण बना जिससे विद्यार्थियों की बढ़ती संख्या और उनके द्वारा प्राप्त उपलब्धियों ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा। शिक्षकों द्वारा विकसित किए गए पठन के तरीक़े बहुत ही रोचक हैं। इनमें पढ़ने के त्योहार में अलग-अलग तरीक़े, जैसे शीशे से पढ़ना, अख़बार पठन, उल्टी पुस्तक पढ़ना, नाटकीय लेन-देन से गणितीय ज्ञान और ज़िगज़ेग पठन काफ़ी रोचक लगे। शिक्षकों द्वारा चुनौतियों से कुछ सीखते हुए आगे बढ़ते रहना, मुझमें एक आशा की छाप छोड़ गया।

दीपा, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन मगरलोड, धमतरी, छत्तीसगढ़

दक्षता संवर्धन का सशक्त माध्यम बना प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा विशेषांक

पाठशाला भीतर और बाहर पत्रिका का यह विशेषांक केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि फ़ील्ड के साथ चलती हुई बातचीत जैसा लगा। इस अंक की एक बड़ी ख़ासियत यह है कि इसमें ईसीई को किसी आदर्श या भारी-भरकम नीतिगत भाषा में नहीं, बल्कि बच्चों के वास्तविक अनुभवों के ज़रिए समझने की कोशिश की गई है।

अंक को सेक्टर बैठकों, शिक्षक बैठकों और प्रशिक्षण सत्रों में सीधे सन्दर्भ सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। लेखों के अंश पढ़कर उन पर बातचीत की जा सकती है जिससे प्रशिक्षण 'बताने' के बजाय 'सोचने और समझने' की प्रक्रिया बनता है। पत्रिका इस क्षेत्र में काम कर रहे लोगों की क्षमता निर्माण का एक सशक्त माध्यम बन सकती है।

यह अंक प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा को लेकर एक सन्तुलित और भरोसेमन्द दृष्टि प्रस्तुत करता है जहाँ शोध, अनुभव और ज़मीनी हक़ीक़त एक साथ दिखाई देती है। विश्वास है कि यह पत्रिका आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों, शाला-पूर्व शिक्षकों, प्रशिक्षकों और नीति से जुड़े लोगों, आदि के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, और ईसीई पर बातचीत को और गहराई देगी।

अनानास कुमार, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

आँगनवाड़ी के छोटे बच्चों के साथ नाटक पर भी काम किया जा सकता है

विशेषांक में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा पर पारुल बत्रा का लेख बहुत बढ़िया लगा। अकसर नाटक विधा को विद्यालय स्तर के बच्चों के साथ ही जोड़कर देखा जाता है। इसका मुख्य कारण यह भी हो सकता है कि कई बार शिक्षक को कहानी-कविता को ही हाव-भाव से करवाने में झिझक होती है, फिर नाटक तो उसके एक स्तर ऊपर की बात है। नाटक करवाने के लिए एक स्तर की तैयारी, और बच्चों के साथ काम करने की ज़रूरत होती है। यह लेख आँगनवाड़ी के बच्चों के साथ नाटक पर काम का अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करता है। यदि सही तरीक़े से नाटक पर काम किया जाए तो हर उम्र के बच्चे उस प्रक्रिया में शामिल भी होते हैं, और सीखते भी हैं। मसला उम्र का नहीं, सही सिलसिले से उस पर काम करने की ज़रूरत का है।

प्रेरणा, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, दमोह, मध्य प्रदेश

खेलों के ज़रिए बच्चों को ख़ुशी-ख़ुशी सिखाएँ

अंक 26 में प्रकाशित 'प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा : एक वैचारिक खोज' लेख किन्नरी पंड्या ने लिखा है। इसकी पहली लाइन, "छोटे बच्चों के लिए शिक्षा का अर्थ है कि दुनिया से जुड़ने में उनकी मदद की जाए", ने मुझे अन्दर तक झकझोर दिया। लेख में बताया गया है कि बच्चे के शुरुआती 8 वर्ष की आयु का समय जीवन का सबसे प्रभावशाली समय होता है। मैंने देखा है कि खेल से बच्चों का शारीरिक विकास तो होता ही है, वे बहुत ख़ुश भी होते हैं। सबसे ज़रूरी बात यह है कि जब बच्चे ख़ुश होकर, स्वयं से प्रेरित होकर विद्यालय आते हैं तब वे सीखते हैं, और उत्साही पाठक बनते हैं। यह लेख प्राथमिक शिक्षा में बहुत काम का है।

मीनू नयाल, शिक्षिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय कुमराह, खटीमा, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

बच्चों के समग्र विकास का आधार है बाल-केन्द्रित दृष्टिकोण

दिसम्बर 2025 अंक में शामिल पारुल बत्रा दुग्गल के लेख 'शिक्षा की शुरुआत और नाटक' में प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा में नाटक की भूमिका को बहुत स्पष्ट और सहज तरीक़े से समझाया गया है। यह बात अच्छी बात लगी कि नाटक बच्चों के लिए सीखने का स्वाभाविक और आकर्षक माध्यम है। नाटक केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि यह बच्चों को उनके आस-पास के माहौल, सहपाठियों और रोज़मर्रा की परिस्थितियों के साथ जुड़ने का अवसर देता है। लेखिका ने बताया है कि नाटक बच्चों को अपनी भावनाओं, विचारों और कल्पनाओं को व्यक्त करने का अवसर देता है। यह पहल बच्चों में आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

विवेक सोनी, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, चमोली, उत्तराखण्ड

कहानी शिक्षण से बनते हैं मानवीय मूल्यों के विकास के अच्छे अवसर

पाठशाला भीतर और बाहर के 25वें अंक में विभिन्न शिक्षकों के द्वारा किए गए प्रयासों से समझ आया कि जब हम बच्चों को समझते हैं, और उनकी ज़रूरतों के अनुसार शिक्षण गतिविधियाँ करवाते हैं तब सही अर्थों में बच्चों का सीखना होता है। एस कविता के लेख 'कहानियों के ज़रिए प्रभावी होता है शिक्षण' में कक्षा 4 में कहानी शिक्षण पर किए गए प्रयासों को समझा गया है। इसमें कहानी शिक्षण के माध्यम से बच्चों में समानुभूति, दयालुता, भावनापूर्ण बुद्धिमत्ता के मूल्यों के विकास के अच्छे उदाहरण भी मिलते हैं। अमन मदान के लेख 'बन्धुता की शिक्षा' के माध्यम से बच्चों के बीच पनप रहे प्रतिस्पर्धात्मक माहौल को दूर करते हुए आपसी सहयोगी समभाव विकसित करने की प्रक्रियाओं की समझ बनी है।

दीपक यादव, सन्दर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन जालौर, राजस्थान

बहुत ज़रूरी है सीखने के लिए वातावरण का आनन्ददायक होना

पाठशाला भीतर और बाहर पत्रिका शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों को समझने और उनसे आगे बढ़कर कुछ करने के लिए प्रेरित करती है। मैं इसे नियमित रूप से पढ़ती हूँ। पत्रिका के 'प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा' विशेषांक में सुनील कुमार साह का लेख 'आँगनवाड़ी केन्द्रों का वातावरण आनन्ददायक होना ज़रूरी' पढ़कर समझ में आता है कि सीखने के लिए वातावरण का आनन्ददायक होना अत्यन्त ज़रूरी है। इससे छोटे बच्चे भी केन्द्र की गतिविधियों में रुचि लेंगे, और उनका वहाँ ठहराव भी हो सकेगा। इससे नन्हे-मुन्ने बच्चों का छोटी-छोटी कविताओं, कहानियों तथा विविध खेलों के माध्यम से मज़ेदारी के साथ सीखना सुदृढ़ होगा। मेरे घर के पास भी एक आँगनवाड़ी केन्द्र है। मैं वहाँ जाकर आँगनवाड़ी के बच्चों के साथ कुछ देखने, सोचने-समझने और करने का भी प्रयास करूँगी।

संगीता गुप्ता, प्रधानाध्यापिका (सेवानिवृत्त), राजकीय प्राथमिक विद्यालय पंडरी, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

लेखकों के लिए

1. लेख वर्ड फ़ाइल में ही भेजें जिसमें कोई डिज़ाइन, बॉर्डर, बॉक्स, आदि न हों। लेख पीडीएफ़ में न भेजें।
2. लेख से सम्बन्धित तस्वीरें या कोई अन्य विज़ुअल अच्छी क्वालिटी का हो, और उसे वर्ड फ़ाइल में लगाकर भेजने की बजाय अलग से अटैच करके भेजें। तस्वीर को image 1, image 2 के नाम से सेव करके भेजें, और लेख में लिख दें कि कहाँ पर आपको लगता है कौन-सी तस्वीर लगनी चाहिए। हालाँकि, इस बारे में अन्तिम निर्णय सम्पादकीय टीम का होगा।
3. तस्वीर का सोर्स ज़रूर बताएँ। कॉपीराइट का ध्यान रखें कि तस्वीर या तो कॉपीराइट फ़्री हो, या जहाँ से ली गई है वहाँ से अनुमति ली गई हो, या आभार व्यक्त किया गया हो। अगर तस्वीर आपने ख़ुद ली है तो वह भी बताएँ, और तस्वीर लेते समय, विद्यालय या कक्षा से इजाज़त ज़रूर लें।
4. विद्यार्थियों की तस्वीरें बिल्कुल न लें, ख़ासकर ऐसी तस्वीरें जिनमें उनका चेहरा स्पष्ट हो।
5. लेख में जब भी किसी किताब का अंश, लेख का अंश, किसी लेखक के उद्धरण (quote) इस्तेमाल में लाएँ, कृपया उनका उल्लेख ज़रूर करें, और क्रेडिट दें।
6. अपने लेख के साथ अपना संक्षिप्त परिचय, एक फ़ोटो जिसमें आपका चेहरा सामने से स्पष्ट और क्लोज़ हो, मोबाइल नम्बर, पूरा पता, और ईमेल आईडी भी दें।
7. जो भी लेख आप *पाठशाला भीतर और बाहर* के लिए भेज रहे हैं, यह बहुत ज़रूरी है कि उसे न तो कहीं और भेजा गया हो न ही सोशल मीडिया पर साझा किया गया हो।
8. लेख मिलने पर आपको लेख के मिलने की सूचना तुरन्त दी जाएगी, और 30 दिन के अन्दर लेख की स्वीकृति या अस्वीकृति, या उसमें सुधार के सम्बन्ध में सूचना प्रेषित की जाएगी।
9. पत्रिका में लेखों की तीन श्रेणियाँ हैं। पहली श्रेणी में लेख 2000 शब्दों का, दूसरी में 1500 शब्दों, और तीसरी श्रेणी में यह 700 से 1000 शब्दों का होगा।
10. सम्पादकीय टीम को लेख में सम्पादन का अधिकार होगा। ज़रूरी सम्पादन के बाद आपको लेख भेजा जाएगा।
11. *पाठशाला भीतर और बाहर* अब हिन्दी के अतिरिक्त अँग्रेज़ी और कन्नड़ में भी प्रकाशित होगी। माने, आप तीनों में से किसी भी भाषा में लेख भेज सकते हैं। लेख भेजने का आईडी है : pathshala@apu.edu.in
12. आपने जिस भी मौलिक भाषा में लेख भेजा है, अनुवाद होकर तीनों भाषाओं में प्रकाशित होगा। इसका अधिकार सम्पादकीय टीम को होगा।

किसी भी तरह की अन्य जानकारी के लिए आप सम्पर्क कर सकते हैं–
प्रतिभा (हिन्दी) : pratibha.katiyar@azimpremjifoundation.org
शेफ़ाली (अँग्रेज़ी) : shefali.mehta@apu.edu.in
राघवेंद्र हेर्ले (कन्नड़) : Raghavendra.herle@azimpremjifoundation.org

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की ओर से रजिस्ट्रार ऋषिकेश बी एस द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125। लक्ष्मी मुद्रणालय, क्रमांक 117, 5वीं मुख्य सड़क, चामराजपेट, बेंगलूरु, कर्नाटक-560018 द्वारा मुद्रित।

मुख्य सम्पादक : प्रतिभा कटियार

फॉर्म IV

1. **प्रकाशन का नाम** : पाठशाला भीतर और बाहर

2. **प्रकाशन का स्थान** : अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिकनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125

3. **प्रकाशन की नियत अवधि** : तिमाही

4. **मुद्रक एवं प्रकाशक का नाम** : ऋषिकेश बी एस (रजिस्ट्रार, अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बेंगलूरु)
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिकनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125

5. **मुख्य सम्पादक का नाम** : प्रतिभा कटियार
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, आमवाला तरला, सहस्रधारा रोड, देहरादून, उत्तराखण्ड-248001

6. **स्वामित्व** : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन
   पता : #134, डूड्डाकन्नेल्ली, विप्रो कॉर्पोरेट ऑफ़िस के पास, सरजापुर रोड, बेंगलूरु, कर्नाटक-560035

मैं ऋषिकेश बी एस घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

तारीख : 2 मार्च, 2026

Rishikesh

प्रकाशक के हस्ताक्षर

(नाम : ऋषिकेश बी एस)

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की ओर से रजिस्ट्रार ऋषिकेश बी एस द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे गाँव, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु, कर्नाटक-562125। लक्ष्मी मुद्रणालय, क्रमांक 117, 5वीं मुख्य सड़क, चामराजपेट, बेंगलूरु, कर्नाटक-560018 द्वारा मुद्रित।

मुख्य सम्पादक : प्रतिभा कटियार

Azim Premji University

Anuvada Sampada

अनुवाद सम्पदा

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की अनुवाद रिपॉज़ेटरी

विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए भारतीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षणिक संसाधनों का भण्डार।

नि:शुल्क, ओपन-एक्सेस पोर्टल

- पुस्तकें और पुस्तकों के अंश
- अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी प्रकाशनों के लेख
- विभिन्न स्रोतों से चयनित लेख

अनुवाद सम्पदा पर आएँ
https://anuvadasampada.azimpremjiuniversity.edu.in/

यहाँ स्कैन करे

Azim Premji University

अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की पत्रिकाएँ

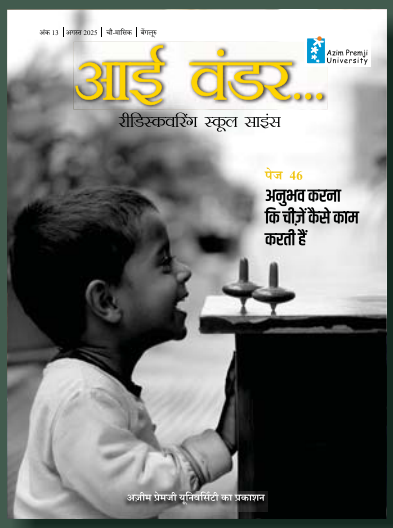

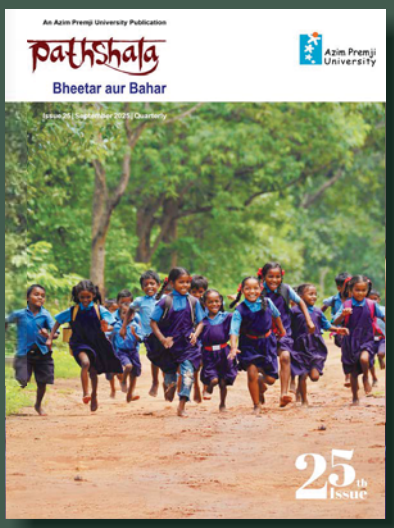

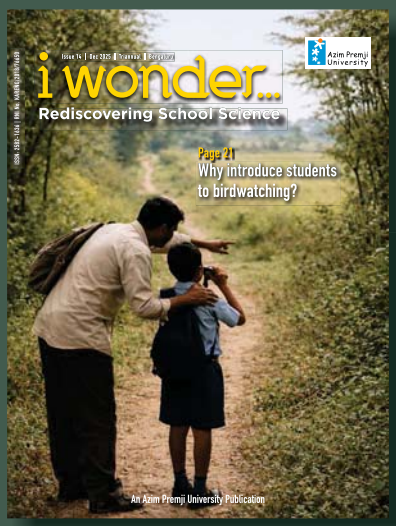

पाठशाला की निःशुल्क सदस्यता के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

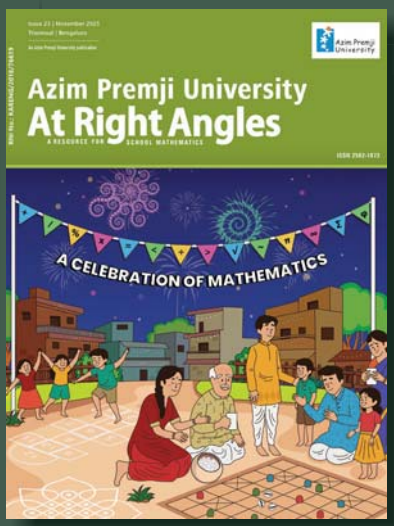

अन्य प्रकाशनों के बारे में अधिक जानने के लिए हमें लिखें - publications@apu.edu.in